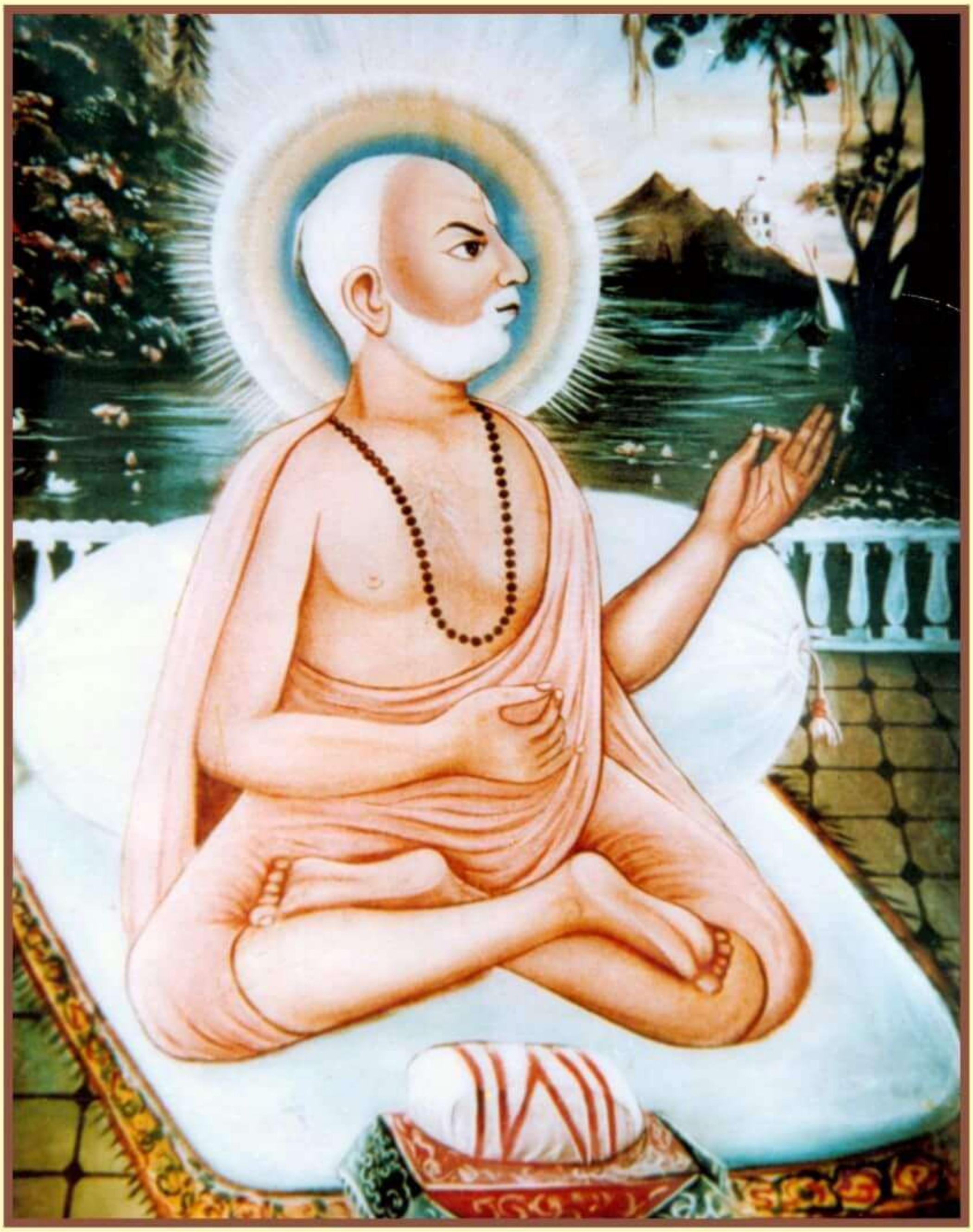

स्वामीजी श्री 1008 रामचरणजी महाराज

Digital Ramsnehi
TEAM

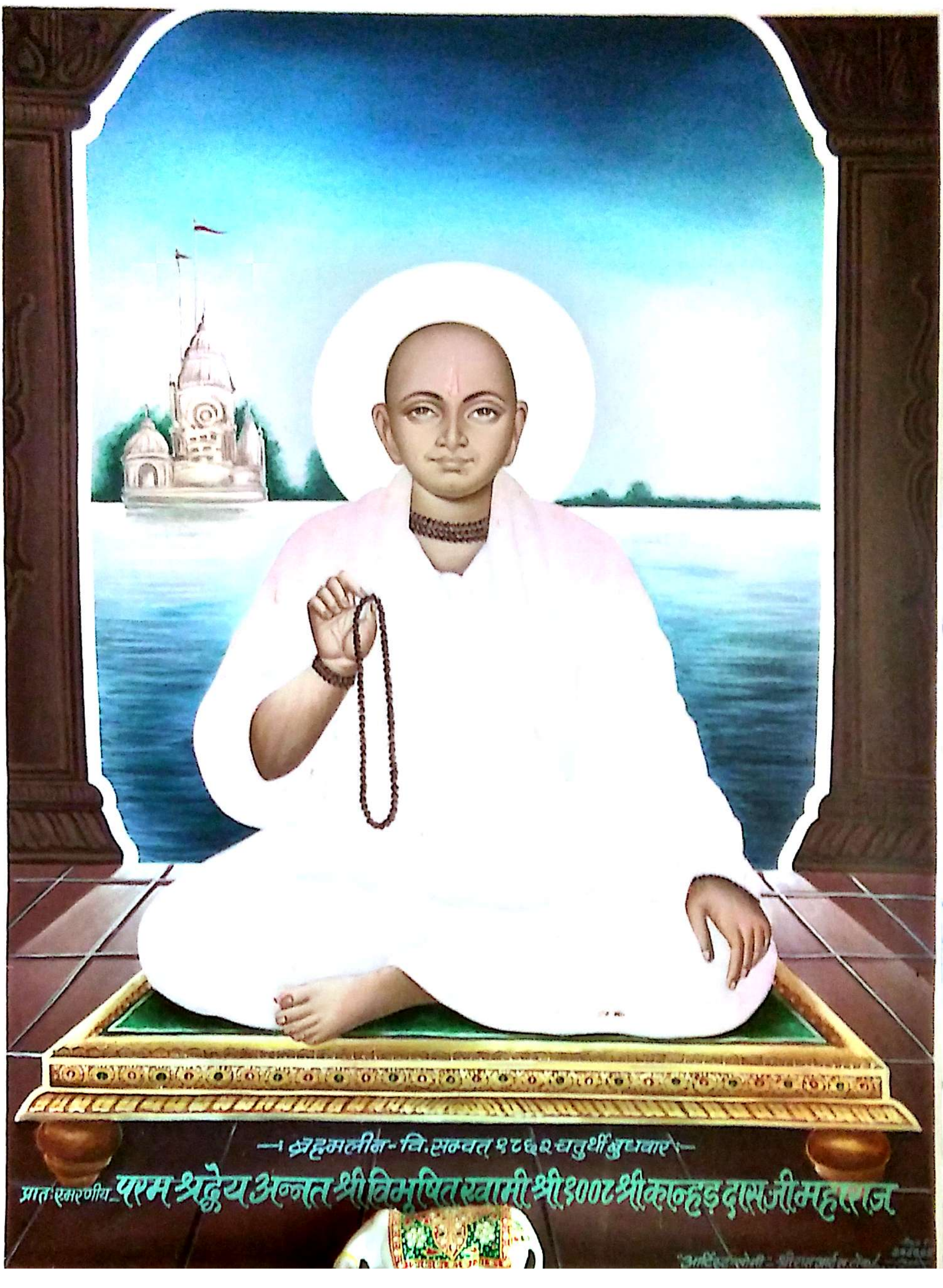
ब्रह्मलीन - वि. सम्वत १८६२ चतुर्थी बुधवार
प्रातःस्मरणीय_परम श्रद्धेय अनन्त श्री विभुषित स्वामी श्री १००८ श्री कान्हड़ दास जी महाराज

स्वामी श्री १०८ श्री गोविन्दरामजी महाराज

राम

अष्टोत्तरशत स्वामी श्रीकान्हड़दासजी महाराज का संक्षिप्त जीवनवृत्त

परम पूज्य, परम वन्दनीय, स्वामीजी श्री १०८ श्री कान्हडदासजी महाराज का जन्म वैक्रमीयाब्द १७९८ मे ग्राम भानुपुरा जनपद-नीमच (मध्यप्रदेश) मे जाति-ननवाणा बोहरा (ब्राह्मण) में हुआ था। युवावस्था मे आपका भीलवाडा कार्य व्यवसाय हेतु जाना हुआ। उस समय रामस्नेही सम्प्रदाय के प्रवर्तक परम दक्ष चूडामणि स्वामीजी श्रीरामचरणजी महाराज भीलवाडा के पास ही कोठारी नदी के तट पर स्थित 'कुहाडा' ग्राम मे विराज रहे थे। आपकी ख्याति सुनकर मन में दर्शन करने की लालसा हुयी और तभी निकल पडे कुहाडा की ओर। वहाँ पहुँचने पर एकान्त शान्त स्थल पर एक पेड के नीचे विराजित महाप्रभु स्वामी श्रीरामचरणजी महाराज के दर्शन कर चरणों में साष्टांग प्रणाम किया, तभी स्वामीजी महाराज की कृपादृष्टि आगन्तुक जिज्ञासु पर पडी। अन्तर्मन में वैराग्य की भावना जागृत हुई। उच्च वैराग्य की भावना को देखकर महाप्रभु ने दीक्षा प्रदान करके नाम मंत्र की साधना बतायी। दीक्षा नदी तट पर दी गयी इसे आपने अपनी वाणी में इस प्रकार उद्धृत किया-

''मध्य मुलक मेवाड़ में नग्र भीलेड़ो सोय।
सिलटा तट किरपा करी रामचरण गुरू मोय॥''

गुरूदेव की सेवा करते-करते अपनी भजन साधना दृढ करने लगे। कुछ समय बाद धर्म प्रचार करने के लिये गुरू महाराज ने आज्ञा प्रदान की। राम भक्ति का प्रचार करते हुए आप पर्यटन करने लगे और थोडे ही समय बाद अपने अग्रज गुरु भ्राता स्वामीजी श्रीरामप्रतापजी महाराज के पास पहुँचे जो कि सवाई माधोपुर विद्यमान थे। उनका पावन सानिध्य ज्यादा समय तक आपको नहीं मिल सका। कुछ समय बाद ही आपके सामने ही पूज्य स्वामीजी श्रीरामप्रतापजी महाराज ने अपने पाँच भौतिक शरीर का परित्याग कर दिया। कुछ समय तक आप वहाँ विराजे, अनन्तर भ्रमण करते हुए दूँढाड प्रान्त के टोक नगर में आप पहुँचे। पँचकुईयाँ रोड के पास आप विराजकर भजन करने लगे; धीरे-धीरे भक्तों का आवागमन बढने लगा, भक्तों की भावना हुयी और 'रामद्वारा' का निर्माण कार्य आरम्भ हुआ। भव्य स्थान बनकर तैयार हुआ और आप वहाँ रहकर रामभजन करने लगे।

स्वामी श्रीकान्हड़दासजी महाराज वि.सं. १८६४ को फूलडोल महोत्सव में शाहपुरा पधारे। तत्कालीन आचार्य स्वामी श्रीरामजनजी महाराज का यह चातुर्मास मारवाड के मेड़ता शहर में निश्चित हुआ। आचार्य श्री ने आपको भी चातुर्मासार्थ साथ में चलने के लिये कहा; आपने स्वीकार किया और कुल ४३ संत महानुभावों के साथ चातुर्मास आप विराजे। चातुर्मास सम्पन्न होने के बाद आचार्यश्री नागौर पधारे, आप भी साथ ही में थे। नागौर से मेड़ता पुनः आचार्यश्री पधारे तब साथ में ८० संत थे। आचार्यश्री वहाँ से प्रस्थान करने लगे तभी आपने उनका चरणामृत एवं प्रसाद ग्रहण किया और सभी को वन्दन किया। आपके पास १४ संत रहे, उनमें मुख्यतः संत श्रीरूपदासजी महाराज थे तथा दुल्हेरामजी महाराज, किशोरदासजी महाराज, रमतारामजी महाराज तथा शिष्य कोमलरामजी महाराज, अमृतरामजी महाराज और अभयरामजी महाराज। आपने आसन लगाकर रामधुनि आरंभ की, सभी सन्त एवं गृहस्थ भक्त भी बैठे, ब्रह्मवेला में आपने अपनी पाँच भौतिक काया का परित्याग कर दिया उस दिन पौष शुक्ला पंचमी बुधवार वैक्रमीयाब्द १८६५ थी। आपके ब्रह्मलीन होने के समाचार सुनते ही संत एवं भक्त उमड पड़े, आपका अन्त्येष्टि कार्यक्रम बड़े धूमधाम से किया गया। भण्डारा-तेरहवीं आदि उत्तर कार्य भी विशाल रूप से किये गये, आपकी समाधि भी बनायी गयी जो कि अद्यावधि मेड़ता शहर में स्थित है।

इसके बाद आपके शिष्य सन्तगण टोंक पधारे गये और वहीं पर पंचकुईया द्वार स्थित रामद्वारा में आपकी वर्षी (निर्वाण मेला) आरंभ किया जो कि अभी तक सुचारू रूप से चल रहा है। आपने अपनी वाणी भी फरमायी थी। किन्तु अल्प है; फिर भी प्रेरणास्पद एवं जीवन को सफल बनाने के लिय महत्वपूर्ण है। आपकी वाणी के अंगों को श्रृंखलाबद्ध कब और किसने किया, अज्ञात है। आपकी महिमा के शब्द महाराज दुल्हैरामजी, किशोरदासजी महाराज, रमतारामजी महाराज, ये तीनों संत गुरुभाई तथा शिष्य संतश्री निवृतरामजी, संत श्रीअमृतरामजी तथा गृहस्थ शिष्य श्रीजगन्नाथ डांणी (अग्रवाल) शिवनाथजी, कालूरामजी कायस्थ इन्होंने वर्णन किया है।

आपकी शिष्य परम्परा अद्यावधि चल रही है। शिष्य कोमलरामजी, अमृतरामजी, अभयरामजी, समर्थरामजी, रूपदासजी, शुभरामजी, घमंडीरामजी। आपके शिष्य कोमलरामजी की शिष्य परंपरा-

रामअरडजी महाराज

↓

त्यागीरामजी महाराज

↓

रामविरजी महाराज, माधोदासजी महाराज

↓

श्योरामदासजी महाराज

↓

वल्लभरामजी महाराज

↓

रामकल्याणजी महाराज, खेमदासजी महाराज, नंदरामजी महाराज

↓

रमतारामजी महाराज

↓

हेतमदासजी महाराज

↓

समतारामजी महाराज

↓

कनीरामजी महाराज,

↓

गोविन्दरामजी म., रायरामजी म., सुगनरामजी म.

↓

रामस्वरूपजी महाराज, रामनिवासजी (वर्तमान)

विजैरामजी महाराज

↓

नैनूंरामजी म. छग्यारामजी म.

↓

बिनोदीरामजी म.

लेखक- सन्त श्रीगुरुमुखरामजी महाराज (साहित्य इतिहासविद्)

॥राम॥

अथ स्वामीजी श्री १०८ श्रीकान्हड़दासजी महाराज (छोटा) की अनुभववाणी लिख्यते

प्रथम स्तुतिका कवित्त

नमो राम रमतीत सकल सुख दाइक देवा। नमो गुरु गुण जीत भीत भए सिख हरि सेवा॥
नमो नमो सब संत कंत भजि करम बदीता। ऐ तिरधा बदन करत फिरत भव संकट बीता॥
करम सरम सरबन दफे जपे जिके निजनाम। कान्हड़ बदन करत ही लहे मुक्ति मइ धाम॥१॥
नमो राम सरबग अगहर दाइक दाता। करुणा मइ करतार करन वत सजन बिख्याता॥
बदत बेद कहे भेद अभेदी भेद न जानै। बरनत पुराण कुरान कतेबा कथन बखानै॥
जन कान्हड़ बंदन करे सरे सर्ब जन काज। राम शब्द सिधता हुवे लहे अटल पद राज॥२॥
तरन करनवत देव सेव सरबग घननामी। सब पोखन अरु भरन दरन घट घट नहि खामी॥
नामी नरन्ह काम स्याम सज्जन सुखदाई। पतित न मनकूं फेर धोरे घट धोत बडाई॥
कला बधावत दास की कसर कोर करि दूर। कान्हड़ दानड़ दुख दफे सपत बधावत नूर॥३॥
नूर रह्या भरपूर निरंजण निरम लराई। बिड़द बधाता नाथ असरन कू हो सरनाई॥
अकल कलै नहीं काइ गाइ गुन रहत पवित्तर। परगट प्ररिद्ध दयाल निहाल करबे ऐह भितर॥
घट मठ महद अकास सूँ यू तुमसूँ संसार। कान्हड़ बदन बिधजुगति करिऐ बारबार॥४॥
संत सिरोमणि जांणि सकल संतन संतदासं। सत सिख भए कृपाल कृतारथ करन अध्यासं॥
किरपाराम कृपाल धाल भऐ रामही चरना। कान्हड़ लईज सरन चरण मिट्या जन्मर मरणा॥
संतदास कृपारामजी रामचरण सिखता लई। चोटी बध ऐह कवितजू जिन संगत कान्हड़ गही॥५॥

इति कवित्त सम्पूर्ण॥

अथ साखी प्रथम गुरुदेव को अंग लिख्यते

स्तुति-नमो राम गुरु सतजन सिरे श्रवग जिनताज। कान्हड की ए बीनती तिरधा राखहु लाज॥१॥

अंग- मध्य मूलक मेवाड में प्रगटे प्रगट प्ररिद्ध। जन कान्हड सरणे तिर्‌यो गुरुरामचरण दइ निद्ध॥१॥

निद्धि सिद्धि दइ नांवकी और दिया बैराग। धन्य बखत घडिया जिको गुरुरामचरण पद राग॥२॥

रजाबंदी भई मोकली जनकान्हड ले सरंन। गुरुरामचरण पद परसता मिट गए जांगण मरण॥३॥

नया नया जस जगत में प्रगट किया परसिद्ध। कान्हड बांजड तोड़ के निपजण लगी सुनिद्ध॥४॥

निपजाऐ गुरू रामचरणजी जन कान्हड़ दे पोख। दया मया सत शीलता अति सुभगुण संतोख॥५॥

मनां छनां धीजण नहीं दे बार बार जन आड। जन कान्हड चरणा पर्‌यो गुरुरामचरण राण गाड॥६॥

बरणाश्रम खटदरसणी में ढूढे हिंद जवंन। गुरु रामचरण परताप सूँ जन कान्हड मिटे मरंण॥७॥

साता भई सरीर में गई असाता ऊठ। गुरू रामचरण पद परसता जन कान्हड़ भ्रम पूठ॥८॥

भरम करम गए गुरू शरण में दिया नाव अधिकार। गुरु रामचरण के चरण रज जन कान्हड़ भयेपार॥६॥

परापरी परम धर्म दे निरणे कररदयाल। जन कान्हड़ दांनड़ मिटे गुरु रामचरण प्रतिपाल॥१०॥

करम भरम दांदड मेटिके पढीऐ पढीऐ राम। गुरू रामचरण की शरण में कान्हड़ सरे सु कांम॥११॥

काम सरे आनंद बरे सरे सकल सुभकाज। जन कान्हड़ कूं ग्यान दे बंधी धरम की पाज॥१२॥

तन मन धन करि वारणे धन्न धारण दियो दयाल। जन कान्हड़ लघुता हरी बुरी छुड़ाई चाल॥१३॥

ताला खुल्या लिलाट का घड़ीया और सुघाट। धनधन ऐ गुरु रामचरणजी जन कान्हड़ खुले कपाट॥१४॥

कपाट खुल्या आनंद मिल्या भिल्या सीव में जीव। जन कान्हड़ सानंद सधे गुरु रामचरण ऐ कीव॥१५॥

सरगुण निरगुण सब सधै रामचरण कर ध्यान। जन कान्हड़ पर महर कर गुरु रामचरण दियो ग्यान॥१६॥

ग्यान दियो हरि भज लियो थियो अधिक आनंद। गुरू रामचरण शरणे लियो जन कान्हड गयो दुख द्वंद्व॥१७॥

परसत पांव परगट भयो हरिजी को परताप। जन कान्हड़ शरणे लियो गुरू रामचरण हरिताप॥१८॥

मिनख देह फल पाईयो गुरू रामचरण के संग। जन कान्हड़ आनंद भऐ गऐ पतंगी रंग॥१६॥

रंग लगायो राम को दहे भरम भए आंन। गुरू रामचरण पद परसतां गऐ कुबुधि अभिमान॥२०॥

मांनतांन अभिमान हन हनि भौलप अबिचार। जन कान्हड़ पर महर करि गुरू रामचरण दिए सार॥२१॥

सार सिधाऐ समझदे भजन रीति भै मेटि। जन कान्हड़ आनंद करि पहोंचा ऐ पद ठेठि॥२२॥

ठेठ ठिकाणों ब्रह्म घर गुरु रामचरण दियो ऐन। कान्हड़ उचरत रैण दिन लई मुक्ति की सैन॥२३॥

रैन बैन सबू कही भजिसिख रामही राम। कान्हड पे किरपा भई लई मुक्ति की धाम॥२४॥
धामराम सुमरत लई सगर तिमर करत्याग। मन मनसा निरमल थई भई उत्तम पद जाग॥२५॥
जाग जपत जगदीस जन तनसूँ तन का तोड। मन की हरसा हासहन सुमरण की दिस दोड॥२६॥
दोड भजन कर राम को काम बाम तज बीर। जन कान्हड तब जांणीए सुमरण की सिधसीर॥२७॥
सीर खुले साई मिले मिले जना जब जीव। जन कान्हड निजनाव बिन मिल्यान कोई सीव॥२८॥
शीव लहे सुमरण किया बिया रहे संसार। जन कान्हड सांची कहे तब पहूँचे मुक्ति मझार॥२९॥
मधि सम्हावे म्हजन तनसू करि तकरार। सदा साध सुमरण करै तब मनका हटे बिकार॥३०॥
बिकार मिटे आनंद थटे रटे जीव जब राम। जन कान्हड आनंद होइ खोइ कलपना काम॥३१॥
काम सरे मुक्ति बरे उर उपजे तीबर त्याग। जगतर जोख्यू मेटिके जे सुमरण करे लाग॥३२॥
लग्यारहे निज नाव में तजि भाम दाम सहकाम। जन कान्हड वेही जनमिले गुरू रामचरण की धाम॥३३॥
धाम धरासूँ अलध अति गति आया गति होइ। जन कान्हड सांची कहै भरम करम सब खोइ॥३४॥
खोइ भरम अरू करम खइ भैकर भजि भगवत। जन कान्हड आनंद अति मिले निरंजण कंत॥३५॥
कंत भजे गुरु गुण सजे रझे राम रमतीत। कान्हड किरपा जनन की छूट गई विपरीत॥३६॥
विपति गई उरलछ थई दई दई बुधिएन। गुरू रामचरण पद परसता सुर बुधितालई चैन॥३७॥
चैन भए आनद थऐ गऐ जनाकी धाम। गुरू रामचरण परताप सूं पहोंचे मुक्ति मुकाम॥ ३८॥
मुक्ति मुकामी जन भए रहे रामलिवलाइ। कान्हड कारज भजन सूँ औरा सूँ अलसाई॥३९॥
असला के नहीं भजन सूँ सजन जनासूँ मेल। गुरू रामचरण परताप सूँ करत ब्रह्म पद केल॥४०॥
केल करे आनंद घर बरबरीऐ इकराम। गुरू रामचरण परगट मिल्यां जिन सारे सब काम॥४१॥

इती गुरूदेव को अंग संपूरण।अंग१। साखी ॥४१॥

अथसाखी सुमरण को अंग लिख्यते

स्तुति–नमो राम गुरू संतजन सिरे श्रबग जनताज। कान्हड की ऐ बिनती ऐ तिरधा राखहीलाज॥१॥
अंग – काम सरे करमज गरे गुरू भजन बतावन हार। कान्हड़ सुमरण सिद्धता रटिऐ बारंबार॥१॥
बार बार रटि राम कूँ कर कर नोतम प्यार। कान्हड़ दानड दूर करि सुमरण कर सत सार॥२॥
घत्र बेद का भेद दे परे करे करम बिकार। कलचा मिटिहे जगत का कर कर सुमरण सार॥३॥

सुमरण सार सरभर नहीं तिरलोकी ध्रम लोक। सो दीऐ रामचरणजी जन कान्हड पदधोक॥४॥
धोक सदा गुरूदेवजी धोकराम रमतीत। जन कान्हड संत सरण में गुरु रामचरण भजरीत॥५॥
परा परी परमातमां सुमराए सुभरीत। जन कान्हड भजराम कूँ ले रामचरण पद प्रीत ॥६॥
भजन बरोबर को नहीं ढूंढे बेद पुराण। सोदीयो रामचरणजी जन कान्हड करि ध्यान॥७॥
धनगुरु रामचरणजी सुमरण बगसे सार। जामधि आऐ सरबही जन कान्हड खरो बिचार॥८॥
सुमरण कर सबनिरत्तरे बिस्तरे जस बिस्तार। अनंत कोटि सुथिर भऐ कान्हड भजन बिचार॥९॥
हमभजन भावनहींजाणतेनहींलखतेसारअसार।गुरु रामचरणपदपरसंताजनकान्हडलिए बिचार॥१०॥
समझाऐ भिन भिन गुरु हम सरू करण करतार। गुरु रामचरण के वारणे कान्हड त्रिलोकी वार॥११॥
सब पृथ्वी पूजा करे भर मोती हीरुं लाल। तोही पूजा ना सधी धन रामचरण गुरु द्याल॥१२॥
कान्हड करता सूँ अधिक गुरु सूँ ऊरण नांहि। सरब बताई सिद्धता रामनाम के मांहिं॥१३॥
पूजा पारस परथमी कोई भर भर करो के बार। गुरु पूजा तोइना हुवे जन कान्हड कियो तुमार॥१४॥
भर मोतिन माली तले करि निछराबल बीर। गुरु पूजा तोइना हुई कर किन देखो अमीर॥१५॥
जिन बगसी निज नाव निधि सिधता अनंत करंन। जन कान्हड सरणे पड्यो धनगुरु रामचरंन॥१६॥
सांच दिया पूजा सधे तन मन धन सब वारि। सांच बिना पूजा नहीं कान्हड हरि दरबार॥१७॥
सांचा सुमरण श्रब सिधि गुरुकूँ करीऐ बीर। सुमरण सिधता गुरु करी नहीं तातुल कोइ हीर॥१८॥
हरिजन धन हरि मिलण को दियो मंत्र समझाइ। जन कान्हड निसदिन भज्या करमन उपजे काइ॥१९॥
सुमरण सुरती निरति करि सांस उसास उचार। जब कान्हड भजीऐ सदा गुरु रामचरण पद सार॥२०॥
सार सिधाऐ सुमरण बताऐ पाऐ गुरु गम ग्यांन। सुरगति मुतनोकूं दई उरधर सुकृत स्यांन॥२१॥
स्यांन ग्यांन स्यांण पणो हरिचरण अध्यास। कान्हड धन ऐ रामजी भारी कियो प्रकास॥२२॥
परकासे परमातमा आतम के आधार। जगत भगत परसिद्धता होतन लागे बार॥२३॥
बारन लागे बिलम कुछ तुछता जाइ बिलाइ। गाई गाई गोव्यिंद धन खन खन में लिवलाइ॥२४॥

इति सुमरण को अंग संपूरण॥अंग॥२॥ साखी॥६५॥

अथ साखी बीनती को अंग लिख्यते

स्तुति–नमोराम गुरू सतजन सिरे श्रबग जन ताज। कान्हड़ की ऐ बीनती ऐतिरथा राखही लाज॥१॥

अंग – ल्योल्या लगाजे नावकी नहीं नाव बिन चैन। जन कान्हड़ कर बीनती ज्यूमिटे जीव का फैन॥१॥

करतम करता रामजी जासू कर अरदास। जन कान्हड़ तब ही मिटे चतुरासी की पासि॥२॥

पासि मिटे आनद थटे कटे करम जजाल। करू बीनती रामसूँ राम बड़े रिछपाल॥३॥

रिछ्याकरन करतार है करो अरज अठजाम। कान्हड़ चाकर रावलो द्यो प्रभु अपनो नाम॥४॥

औरन मेरे आसरो ओरनहीं दिल दोइ। कान्हड़ करि है बीनती चित राखो चरणा तोई॥५॥

जन कान्हड़ बिनती करे रामजनां कर जोर। तुम बिन बिनती कुण सुणे कर देखी अति दोर॥६॥

दोर मोरे तुमचरण की ओर दोर दई मेटि। जन कान्हड़ पर म्हर करि लीज्यो चरणा ठेठि॥७॥

ठेठि ठिकाणों ठाकुर तुम तुम हो जान सुजान। कान्हड़ को कहो कुण रखे ई जगतर मे मान॥८॥

मांन तान पन तुम रखो तुम सूँ सब आसान। कान्हड़ पे किरपा करो छूटे मान गुमांन॥९॥

मांन बड़ाई ईरखा मन अजमत सहकार। ऐह छुड़ा ज्यो रामजी कान्हड करै पुकार॥१०॥

पुकार सुणो परब्रह्मजी परव्रत को करू त्याग। जन कान्हड लागे नहीं जरबिघनां को दाग॥११॥

दाग मिटावो दिल का मन का दलदर भान। लोभ काम की राखज्यो कान्हड मना गिलान॥१२॥

गलां गमावो बापजी तन मन केरे बाद। नाद बिंदनक लक रहू पाज्यो राम प्रसाद॥१३॥

प्रसिध प्रसाद जपावज्यो जीगावे बेद पुराण। कान्हड़ कै मन अनद होइ ऐसी करो सुजाण॥१४॥

सुरग नरक नहीं चाहिऐ न्हचही ऐ तनके भोग। दवाबे दवा ना फुरे मेटो मन तन सोग॥१५॥

सांग तुम्हारे मिलन को क्यू कर मिले दयाल। कान्हड तो चूका भरयो यू मन खच्यो किरपाल॥१६॥

राम सदा रिछपाल है काल मिटावन जीव। कान्हड़ पर किरपा हुवे ज्यू परसे सुखसीव॥१७॥

सीव जीव छिन ना लगे लगे भरम अरभोल। उन मनता मन ना जगै करत रैण दिन छोल॥१८॥

छोल बोल छल छंद घने गिनै कून पें जाइ। कान्हड़ आनंद मन भया हरि बिन ना सिमटाई॥१९॥

थिटि माहि मन मिलरह्यो अद्रस पद नहीं भाइ। कान्हड़ बानड मन बुरा हरि गुरू सीख नसाइ॥२०॥

सीख समै नहीं गुरून की हरि को भजन न भाइ। निसदिन राच्यो ओलभे माच्यो माया काइ॥२१॥

काइक बाइक मनमते नतेन गुरु के ग्यान। कान्हड करि है बीनती यो मन है सैतान ॥२२॥

साता सतराचे नहीं राचे रचना काच। कान्हड करि है बीनती यो कसो नचावै नाच ॥२३॥

नाच नचावे बिबिध बिधि सिधिता गहेन ताइ। कान्हड करणां काहा करै ईमन मता अपार ॥२४॥

अपार मता गुरु गम गता रतान सिरजण हार। कान्हड दानड मन बुरा कूराहा चलावण हार ॥२५॥

हारत मन हरि भजन सूं सूरापन न लगाइ। कान्हड बानेड मन बुरा सुरापण कणन करार ॥२६॥

करार करन अति मोकला क्यूं मन पकडे सार। कान्हड छानड नाछिप्यो ई मन सूं कोइ तार ॥२७॥

तार भार तराजू तोलले मन को बिमो बिचार। कबहू थिरता ना रहै भू भरमे सुरग पतार ॥२८॥

सुरग समावे ब्रह्म पद गुरु जन रामप्रताप। कान्हडदास बिनवे जना तनां हन्यो संताप ॥२९॥

संताप ताप मेटो सबै निभेजू मेरी चाल। गुरांबिना कुण मेटिदे ई मन का आल जंजाल ॥३०॥

धाक कालकी मेटज्यो सुणज्यो दीन दयाल। कान्हड पे किरपा करो ज्यूं सब सुधरे हाल ॥३१॥

इति बीनती को अंग संपूरण ॥अंग॥३॥ साखी॥९८॥

अथ साखी विरह को अंग लिख्यते

स्तुति–नमो राम गुरु संतजन सिरेश्रवण जन ताज॥ कान्हड कीऐ बीनती ऐतिरधा राखही लाज॥१॥

अंग – ज्यूं सुधरे त्यूं कीजियो बिरहन को सब हाल। कान्हड पे किरपा करो तुम रूंम रूंम रिछपाल॥१॥

रिछ्या करो रिछपालजी जलती बुझे ज्यूं भाइ। बिरहन कूं सुख दिजीयो दरसण की अति चाइ॥२॥

मन मेरो माने नहीं ओर किया कोइ रीत। बिरहन दुखी दीदारकी कर रही नोतम प्रीत॥३॥

प्रीत परीतम सूं लगी तगी रीत जग चाल। प्रगटो दीनानाथजी ज्यूं आत पतालूं ब्याल॥४॥

आत पतालूं प्रीत सूं ज्यूं पूंगी पर नाग। यूं बिरहन कूँ दरसद्यो तब मेरो बडभाग॥५॥

सभा अलूंणी महंत बिन सब रसबिन ज्यूं साग। यूं कान्हड तुमरा दरस बिनमिटे न जिवका दाग॥६॥

कान्हड दानड सब मिटे दरबारुं दीदार। दरसण सूं परसण भए मिले राम भरतार॥७॥

भरतार मिले सुख पद रले कले करम भऐ भार। कान्हड आनंद अति भए फिर जून धरे अवतार॥८॥

आरतसूं रटिरामजी सारत राख सताब। बिरह देख बिरहन तणी प्रगटा कंत सताब॥९॥

दरसन बिन परसन नहीं तन मन में तकरार। बिहरन झरत रामजी समलो मोर पकार॥१०॥

पूकारत ऐ बिरहनी धणी काज दिनरात। दरशण बिन दिलगा खुरी झूठी लगत कुफाल॥११॥

कुफाल लगत ए जगत सुख ना सुखसारी सम्हाल। कान्हड़ पे किरपा करो दरशण द्योज दयाल॥१२॥

दयाल दया कर दरसदेतरस मेट मन मोर। बिरहन बिप तप दरस की मन आवै कुछ ओर॥१३॥

ओर सोर मेरो कुण सुणे किण सूं करूं पुकार॥ कान्हड़ मांजड़ तोड़ तन दरशण द्यो करतार॥१४॥

करक कलेजे मोरमन दक तन मही उदास। दरसन बिन परसन नही यूं कहे कान्हड़दास॥१५॥

दास आस आसिक्तणी आसा पूरण हार। कान्हड़ तरसत दरसबिन कहा सांझ सिकार॥१६॥

सिकार सांझ अठपहरमे दरसण को अभ्यास। कान्हड़ पल पल ना लगे कर कर देख्यो खास॥१७॥

खास भ्यास इक राम को काम दाम को त्याग। प्रगटो क्यूं नहि बापजी तुम बिन कहूं न लाग॥१८॥

लाग रामचरणजी तणो दरसण को मनचाव। बिरहिन बन बन बिचर है कर कर नोतम भाव॥१९॥

भाव भयो सांसों गयो कह्यो गुरां सतबैन। कान्हड़ साधत सबदकूं उरमें उपज्यो चैन॥२०॥

चैन भयो चित चांदणो अघ गए अंगभयो पाक। कान्हड़ गुरुदाता मिल्या कल्यान गुरु गुण साक॥२१॥

साखि सुणी हिरदे गुणी भण रमतीत ही राम। कान्हड़ दांदड़ तन मन तज्या रइया रमतीतक नाम॥२२॥

नाम राम रमतीत को जपत बिरहन निसजाम। जाकूं नीकाना लगे सुतबिनता बिप दाम॥२३॥

दाम काम कनरस तज्या सज्या फकीरी साज। दाता दरसण बाहिरी कान्हड क्यूं रहे लाज॥२४॥

लाज रखो आनंद अखो दिखलावो दीदार। कान्हड कारज तब सरे प्रसन होइ करतार॥२५॥

इकतार तुम्हारा नाव को बिरहन करे बिलाप। नेरे प्रगटो रामजी ज्यूं भागे सकल संताप॥२६॥

संताप भगै आनंद जगे ऐसी करो दयाल। बिरहन के जावे जदी जनम मरण के साल॥२७॥

साल मिटे दुख सब कटे दरसण दिया दयाल। तुम बिन गल घाले नहीं आनंद ताकी माल॥२८॥

माल जालसूं रहता है सरन पड्या की लाज। बिरहन को हन सरब दुख को करे इसो इलाज॥२९॥

इलाज लाजतुम हाथ है औरन ऐसो वेद। दरसण द्यो दाता बडे ज्यूं मन होवै केद॥३०॥

कर देखूं पेखूं प्रीतमा मुज मक्र दीन दयाल। मन मेरो मानें नहीं ब्रह्मा रच्योजु ख्याल॥३१॥

ख्याल चाल चाले लग्या कहां करता दीदार। जन कान्हड़ उर प्रगटो ज्यूं भागौत सकल अधार॥३२॥

अंधार रन बन में पड्यो जिवड़ो बिनदीदार। सरजण हार समालसी बिरहन के सिरदार॥३३॥

सरस दरस मन मे हरस बिरहन के मन कोड। अगले चगले कर दरसन मोमन यंही होड ॥३४॥

होडकरे कद हरि वरै बिरहन को दीदार। अंगलगावो रामजी तुम मोरे भरतार।३५॥

भवके भऐ भागणिडरी तरी दरस तुमपाइ। कान्हड पे किरपा करी यूं बिनता सुख समाइ॥३६॥

इति बिरह अंग संपूरण॥अंग॥४॥ साखी॥१३२॥

अथ साखी लेको अंग लिख्यते

स्तुति–नमो रामगुरु संतजन सिरेश्रवग जन ताज। कान्हड की ऐ बीनती ऐ तिरथा राखहीलाज॥१॥

अंग – लैलागे बिनती कियां लेबिन बिघोन जाइ। जन कान्हड लेके लग्या जन सुख मांहि समाइ॥१॥

सुख समावे महाजन तनमन तजै बिकार। जन कान्हड लेके लग्या करम भरम भये छार॥२॥

छार करम अरु भरम गत रत रमतीतक राम। जन कान्हड आणंद अखे जनांलगी ले नाम॥३॥

लै भै भरम भगाईया गया रजोगुण ऊठ। जन कान्हड लैके लग्या दिया तमोगुन पूठ॥४॥

पूठफिरी करम जुठरी सुरति सरस धन लूट। जन कान्हड आनंद भए यूंले लगने की मूठ॥५॥

मूठ मठी नहीं भजन सूं मूंठ अधिक लै लीन। जन कान्हड करमां रहित पद पायो अतिझीन॥६॥

झीन मायले लगण का। लै लाग्यां दरसाइ। औरन पहुंचे मानई कहे जन बेद बताई॥७॥

बेद बताये भेदद और कहे जन सोइ। ताते कान्हड देखले लै को मारग जोइ॥८॥

जोइ जनां का मावकूं जोइ जनूका भाग। कान्हड जेही पद मिले तिन को अतिसे आघ॥९॥

आघ होइलै के लग्यां दग्यां ममत मदराग। जन कान्हड लैलाईऐ मिलत पियाजी की जाग॥१०॥

जाग जगत गुरु सुमरीऐ लै निरबास लगाइ। कान्हड बाजउ भरमहन खंन खंन लैका लाइ।११॥

जे रसीए रमता राम के किसी ऐकाइकरम। बसीऐजन संग जुगति से नसीए द्रटि चरन॥१२॥

चरम दृटि तजि राम भजि लै अठ पहर लगाइ। कान्हड किरतब तासको जुग जुग करन हाइ॥१३॥

सतारता रमतीत की ले मधि प्रगटे आइ। लै बिन मिलेन रामजी कान्हड कही जनाइ॥१४॥

कान्हड कही चिताइ के चित राखो लैलीन। खरम मिलण को माघ ऐह है अति झीनूंझीन॥१५॥

झीन झरोखे जगमगै अपरम ज्योति अपार। जहां पतनी पिवसे मिले पैले करम भंडार॥१६॥

प्रीतम पीव पिछांणले आदि अनादि राइ। अधिक बिद्या पीव पिछांण सूं जन कान्हड़ कही बणाइ॥१७॥

परम सुहागण जे भई जीं लीया पीवपिछांण। बिन पीव पिछाण्या बाहीरी मिटती नहीं कुबांण॥१८॥

इती लैको अंग संपूरण॥अंग॥५॥ साखी॥१५१॥

अथसाखी प्रेम प्रकास को अंग लिख्यते

स्तुति–नमो राम गुरू संतजन सिरे श्रबग जन ताज। कान्हड़ की ऐ बीनती ऐ तिरधा राखहीलाज॥१॥

अंग – सांई को सत प्रेम मन मद भावां संसार। कान्हड़ करताराम को नित प्रति मनां करार॥१॥

कला पलापी प्रेमका कला छोडि संसार। जन कान्हड़ तब जीव ऐह मिलिहै मुक्ति मझार।२॥

प्रेम बिना नहीं पाधरा हरि का मोख दवार। जन कान्हड़ दादड तजे उबके प्रेम भंडार॥३॥

भंडार भरे आनंद करे धरे प्रेम परतीत। जन कान्हड़ बांजड़ बले उदेभई सुभरीत॥४॥

रीत गीत गोबिंद तणी बणी प्रेम परतीति। जन कान्हड़ रत प्रेम में छोड दई बिप्रीति॥५॥

बिड़द बिधाता नाथ को आंन तणों तस्कार। प्रेम बधाया प्रीति सूँ रतमत एक करार॥६॥

चलण जनां को उरधर्‌यो तिर्‌यो संकट संसार। प्रेम नेम मन निरमता लिया सुजन एह चार॥७॥

चार अचार बिचार लखि देखि दीयो उपदेस। जन कान्हड़ आनंद अखे सीख लियो सुख सेष॥८॥

प्रेम नेम निरभाव ज्यों सब कोई सुण संत। प्रेम बिना परसण नहीं कहा नरसिंघ भगवंत॥९॥

भगवंत प्रेम बस विश्व में होते आए अनादि। दुरयोधन के जिग तगे रंजे बिदुर परसाद॥१०॥

बिदुर बिधाता नाथ बिन नहीं जाण्यो कोई आंन। जीं का जीम्या छूंतरा तगे दुरयोधन पकवान॥११॥

सिबरी पवाऐ प्रेम सूं अपने झूठे बेर। भगवंत धापे दोबरा कहै सास्तर ठेर॥१२॥

सबे विश्व भोजन करे कुल कुल केरी रीति। उभै भोजन कोई ओर है जी भोजन भगवंत प्रीति॥१३॥

प्रेम बिना पावै नहीं परमेस्वर परसाद। जन कान्हड़ आनंद करि करि नोतम प्रीतसु साध॥१४॥

प्रेम नैंम जिनके हिए कीऐ कर गुरू साध। जन कान्हड़ आणंद करि मिलीयो पद अगाध॥१५॥

प्रेम प्रतीती रीति करि मिलीयामन मुरजाद। जन कान्हड आणंद अभै छूट गया अपराध॥१६॥

इति प्रेम प्रकास को अंग संपूरण॥ अंग॥६॥ साखी॥१६७॥

अथ साखी पीव पिछांण को अंग लिख्यते

स्तुति-सिरे सरबग जन ताज।। कान्हड़ कीए बीनती।। ऐतिखाररा‍ख लाज।।१।।

अंग - पीव पिछाणी प्रीत सूं रीति नीति मन लाइ। कान्हड़ किरपा जनन की सबदुख दालिद जाइ।।१।।

दुख दालिद्र सब दफे रूपै मन पीव पिछाण। कान्हड़ कला उपाई ऐइ यूं पीव परसण जांण।।२।।

पीव पिछाण्या बाण तजि ताण मनोरथ जीव। यूं पिछांण करि बावरे तब कान्हड़ परसण सीव।।३।।

प्रीति परीतम सूं करो रखो अठ पहर उजास। तब पावेगा पीवकूं यूं कहे कान्हड दास।।४।।

दासभ्यास करि भावना पति गति ताकूं जाणि। यूंउन मन मनसा अमल नखसिख तन सुख ताणि।।५।।

गलां अलां अलगी रखे चखै नाम निसजाग। पन पकड़्यां इक पीव की यूं पतिबरता भाम।।६।।

चित्त चिदानंद देव में सेवभेव लिया सारि। पीव पिछाण्या प्रीतिसूं कान्हड धनवा नारि।।७।।

रत मत पति परमातमा अतिता अतित सुचाल। पीव पिछाण्यां बाण तजि मनका छोड़ जंजाल।।८।।

नैपै खेपै जे लगै ते तिरिया संसार। मन मनसा कूं मारिके जीत गया संसार।।९।।

जीत गया जन प्रेमबल कलन गया संगार। जन कान्हड आनंद करो मनकूं न्हेन्हो मार।।१०।।

प्रेम नेम निज रामको ओर तणो तत्कार। जन कान्हड क्रम छेपरा सांई घर सतकार।।११।।

इति पीव पिछाण को अंग सपूरण।। अंग।।७।।साखी।।१७८।।

अथ साखी परचा को अंग लिख्यते

स्तुति-नमो राम गुरू संत जन सिरे श्रबग जनताज। कान्हड़ की ऐबीनती ऐतिरधा राखहीलाज।।१।।

अंग - बनिता की बिपता भगी रही सुख माहि समाई। जन कान्हड आनंद भऐ जब परचे पूगै ध्याइ।।१।।

च्यार चोकियां भजन की जनां करी काइंम। जन कान्हड़ वहां पूगीया तन अमर होइ जाइंम।।२।।

रसना हिरदे नाभि धुनि संग रकार मकार। ममांजू चोकी तीन लंघ चद्या एक ररंकार।।३।।

ररंकार रहता शब्द ममो शब्द माया धाम। जन कान्हड़ जऊं पहोचिया मिटगयो सारो काम।।४।।

काम नाम रटता गयो गयो जु सांसो साल। रामचरण किरपा करी कान्हड़ भयो निहाल॥५॥
निहाल दयाल मोकूं कियो दियो राम नाम पिछणाइ। जन कान्हड़ ररसना रट्यां बांजड़ गए बिलाइ॥६॥
बिलेमान भई बासनां अबनहीं सारसना जंम। जन कान्हड़ आनंद भए गुरू रामचरण दईगंम॥७॥
अब आनंद भऐ भै भगे लगे जना कीलार। सुभकिरपा जनकी भई जाको नहीं तुमार॥८॥
नहीं तुमार तुम सुख को दुखता भम्यो भंडार। अब कान्हड आनंद करि मिलीए जन मंझार॥६॥
हिल मिल अति मंगलकरो धरो ध्यानं निसजाम। कान्हड पे किरपा करो आनंद रूपी धाम॥१०॥
धाम धरा सूंहै अधर रट्या सुधरता काज। जन कान्हड़ आनंद हुवे मिले अमर पद राज॥११॥
ऊराज रजा सब सूं तजा बिजो तज्यां पदपाइ। कान्हड़ किरपा राम की राम हि माहि समाइ। १२॥
सिरजन हारा सुमरतां अति सरधा संतोष। जन कान्हड़ या विधिमिल्यां मिले जनां परलोक॥१३॥
सरब सावठा चाहिगत बित नांही बिस्तार। कान्हड़ तब जन मिले पूरण शब्द मंझार॥१४॥
परसिधता सब स्रष्टि में लोभ खोभ गतकाम। मनो बासनां ना कहूँ वे अष्ट जाम रतराम॥१५॥
बरस तजै सरसे भजे गंजे गुणादिकरीत। जन कान्हड़ तब जाणीऐ परमेस्वर से प्रीत॥१६॥
परगट जन अवनी भए प्रगट शब्द लिवलाइ। जन कान्हड़ वहाँ कै गया आवागवन न आइ॥१७॥
आइन आवागवण में जन मन चौरासी जात। सतगुरु ने किरपा करी भारीकरी खात॥१८॥
रजाबंदी भई मोकली रली बंधाईभांम। भवन पधारे भांम के दियो सरब सुख स्यांम॥१६॥
स्यांम सम्हाली सूंदरी सेझ सुखदीयो चैन। कान्हड चरनां चितलग्यो मेटदियो सब फैन॥२०॥
फैन फतूरन फकर कुछ तुछता उछता त्याग। सुंदर दुंदर दुर गए पूरण पद तालाग॥२१॥
लाग लगी चिंता भगी रंगी रामके रंग। कान्हड आनंद अधिकता लगी अभंग के संग॥२२॥
संग अभंगता पुरसको जीरंग रंगीजु नार। वारी फेरी के बरी धनतुं पुरुष रकार॥२३॥

इति परचा को अंग संपूरण।अंग॥८॥साखी॥२०१॥

अथ साखी पतिब्रता को अंग लिख्यते

स्तुति-नमो राम गुरू संत जन सिरे श्रबग जन ताज। कान्हड़ कीऐ बीनती ऐतिरधा राखहीलाज ॥१॥

अंग- पुरस सदा रकार है पतनी पिवके संग। गुरू लखाया लगन से खूब चढाया रंग ॥१॥

पतनी पिबके लाडली लाड लडावै पीव। जगत सनेह ता पर हर्‌या जे नित प्रति सुमरे सीव ॥२॥

जीव सीव सुमरण करै पतिब्रत धर कहै राम। जन कान्हड़ कुलफत मिटे थटे मुक्ति की धाम ॥३॥

धाम लहे पतिबरतसूं किरतम को तस्कार। जन कान्हड़ मांनै नहीं इकभगवंत बिन भरतार ॥४॥

भरता करता रामजी सिरे सरबगता ताज। जन कान्हड़ नहीं राखि हैं खाबिंद बिन कोइलाज ॥५॥

लाज रखे पतिब्रत चखे पखै पकड़ि कहै राम। जन कान्हड़ सुख बिलसि है अठपहरी या भाम ॥६॥

भाम भाव पति बरतसूं औरन बात सुभाइ। जन कान्हड़ आवे नहीं चतुराई कोइ दाइ ॥७॥

चित चतुराई नां देवे सेवे अपना स्यांम। जन कान्हड तब रीझ है परम पुरूष इकराम ॥८॥

राम नाम निसदिन रटे पतिब्रत धर परतीत। जन कान्हड़ व्यभिचारकूं मानरही बिपरीत ॥६॥

बिपरीत गिणे व्यभिचार कूं खसम बिनां किस काम। जन कान्हड़ गिणे कालम्या अपनाइत इकराम ॥१०॥

अपनावे इतबार करि पतिबरता पतिप्यार। सिधअसिध केईजगत में पतिबरता गिणे छार ॥११॥

छला मूंदडा दोवड़ा चूड़ा कड़ा करतार। किरतम का भावै नहीं सोपतिबरता नारी ॥१२॥

नरी नराली सरबसुख रही पतिबरत सुखमान। सो पतिबरता अस्तरी रखे खसमकी कान ॥१३॥

कान मान रही खसम की ओर जोर उर पेल। कसर भगावे रामजी दूजासूं नहीं मेल ॥१४॥

अथ साखी ब्यभिचारणी को अंग लिख्यते

स्तुति–नमो राम गुरू संत जन सिरे श्रबग जन ताज। कान्हड़ कीऐ बीनती ऐतिरधा राखहीलाज॥१॥

अंग– तोर जणावै समझ बिन बिभचारी बेकूप। जन कान्हड़ कारज बिना हे उनके अंग रूप॥१॥

रूप अबिरथा रांड को भांडतणों ज्यूं सांग॥ जन कान्हड़ बिभचारणी त्यूं भाकलिया लाग॥२॥

लाज रहे नहीं भांकले वा धोवतिया किण काम। कान्हड़ यूं ब्यभिचारणी लाजांमारे धाम॥३॥

धामधरा कुल कालम्यां बिभचारी के संग। जन कान्हड़ बिभचारणी रंगी कुमति के रंग॥४॥

अबिद्यामें अति आखती पतिब्रत मनकी मार। जन कान्हड़ कैसे निभे सटली बिटली नार॥५॥

नकटी कपटी सरमगत पतिको नहीं इतबार। वाको संगन कीजीऐ वा घणां डबोवण हार॥६॥

नरक सुरग भै परहर्या धर्यां अधिक मनमान। जन कान्हड़ वां अस्तरी गुदा पूंछ पाखांन॥७॥

पतिबरता जो अस्तरी ज्यूं सालिग राम समांन। सब परथी पूजा करे नही बिभचारण कीकांन॥८॥

पतिबरता तुलछी भई अंगीकरत करी भगवान। नगद बाबची वापड़ी झूठी तोडे तान॥९॥

रन बनमें दोन्यू भई एक सड़े सहनाण। धरणी अंबर आंतरा कहा पतिबरता कुलटा पांण॥१०॥

एक नग्र में नृप रहै वाही मेंरंकदेख। यू पतिबरता ब्यभिचारणी अतनो फरक दिखेम॥११॥

राजा रीझ्यां सबमिले जोकुछ बंछा होइ। रंकरीझीयाँ क्या मिले यूं पतिबरता बिभचारी जोइ॥१२॥

घरां पराया बारणे देती फिरेजु मूंड। जन कान्हड़ सांची कहे ब्यभिचारण अनिलूंड॥१३॥

लूंड मूंड देती फिरे मन माने जहां जाइ। राम निरंजन नाभजे गावै आंन लडाइ॥१४॥

लड़त भड़त भरतार सूं संक सरम नहीं मूल। जन कान्हड़ सांची कहै दे बिचारण मुख धूल॥१५॥

धिरकारे धरमातमां जेपति सूं करेन प्यार। बिभचारण बिगड़ी घणी धणी न करसी सार॥१६॥

सार सम्हालन सरस सुख दुख ही दुख बरतंत। जन कान्हड़ कुभारज्या परसन कियो नहीं कंत॥१७॥

कंत परस्यो नहीं प्रीतसूं आंनतणों अधिकार। जन कान्हड़ झूठो गले पति कोहार सिंगार॥१८॥

पति को सिंगार अंगार सम जारां काको जोर। जन कान्हड़ वाको फिर्यो धरम ध्यान सू तोर॥१९॥

जारां राई परबतां पति दीया तुछ दिखाब। जन कान्हड़ ताके नहीं पति हरिजी को भाव॥२०॥

परापरी मारग तजै सजै आंन अधिकार। वा भामां को भागतुछ मुछता नहीं लगार॥२१॥

मोछ वोछ करी पापणी नरतन ऐसो पाइ। गतराड़ा की गाहिकी पति मुरजादा मंद भाइ॥२२॥

इति बिभचारणी को अंग संपूरण ॥ अंग॥१०॥साखी॥२४४॥

अथ साखी सम्रथाई को अंग लिख्यते

स्तुति–नमो राम गुरु संतजन सिरे श्रवग जन ताज। कान्हड कीऐ बीनती तिरथा राखहो लाज॥१॥

अंग– अपराध भगावे आपदा जापद जपीऐ राम। जन कान्हड शरणे स्याम के समरथ सारे काम॥१॥

काम संवारे करम निवारे सम्रथ सिरजण हार। जन कान्हड जपि जुगति सूं पल पल बारुं बार॥२॥

बलम लगाजे नेकमूं जपता सिरजण हार। जन कान्हड रहो एकरस सम्रथ करै उधार॥३॥

ऊधारै उरझे सुरझारै नर नारी कहादेव। कान्हड जपि सम्रथ धणी करि निरभेता सेव॥४॥

नकल अकल खलैनां कहूं सम्रथ जपो सम्हाल। जन कान्हड गाफिल पणो उरसूं परो जटाल॥५॥

टाल साल अण ईसकूं ईसर इस्क लगाइ। राइ सम्रथा स्याम की अण ईसर छिटकाइ॥६॥

छिटकाजे अण ईसकूं सम्रथ कंत कोध्यान। राई सूं परबत करे परबतीय। सामान॥७॥

सरस सिरोमणि रामजी गाजे गरज उपाइ। लरज ललैमति आनदिस जन कान्हड सम्रथसांइ॥८॥

सहाइ करै सब दुख हरै डरे पति बेकाम। आगे उधरे अनंत जन भजतां केवलराम॥९॥

केवल भजतज आंन पख रिखता बचन सम्हाल। मनोबासना कामनां उरसूं सारी गाल॥१०॥

पाले काल दुकालजे जीसमरथकूं साध। मात गात में राखीयो वा सम्रथ कूं आराध॥११॥

आराध करो सम्रथ तणो घणो घणो हितकार। सम्रथ राम सम्हालीऐ कान्हड मना बिचार॥१२॥

सम्रथसूं आसांन है करतन लागे बार। कान्हड असन सरन हरि पलमें करै उधार॥१३॥

ऊधार जनम आपनो कांपन बिखै बिकार। रज तम टालै रामजी सम्रथकंत करतार॥१४॥

करत क्रितारथ दास को सम्रथ दीन दयाल। दफदर माही मंडिगया नही होतबेहाल॥१५॥

हाल चाल प्रति पालनां सम्रथ के सब हाथ। जन कान्हड आगेकरी दासा सूंजरयात॥१६॥

खात दवात सम्रथकर ओरां बस नहीं बीर। जन कान्हड आनंद करि हरजी खोलत सीर॥१७॥

सजदा करि उस स्याम कूं देत जना दुख मेटि। जन कान्हड पहुंचे नहीं सम्रथ बिन कोइ ठेठ॥१८॥

ठेठ ठिकांणो ब्रह्म घर सम्रथदया जू पाइ। गुरु सम्रथ जन रामजी निरभे देपहुचाइ॥१९॥

असी असाता राखीरो गरभ गुफाके माहि। सम्रथ सूं सारी बणे औरा सून बणांहि॥२०॥

बरत पकड़ सम्रथ तणो जासूं सब बण आइ। आन सम्रथ किण काम को जासूं रहो रिसाइ॥२१॥

रग सत बखमी बार में आन ऊफदूबीर। जन कान्हड़ भागे नहीं सम्रथ बिन कोइ भीर॥२२॥

सरकत बिखमी बार में चैन माहिं अति फैन। सम्रथ बिन भागै नहीं जनम मरण को खैन॥२३॥

सम्रथ भज सरधालियां किया कबजऐ पांच। जन कान्हड़ नह कांमता रामरिझावो देसाच॥२४॥

इति सम्रथाई को अंग संपूरण ॥अंग॥११॥साखी॥२६८॥स्तुति की साखी ११॥कुल साखी॥२७९॥

इति साखी सर्वसंपूरण ॥

अथ कवित गुरूदेव को अंग लिख्यते

छेरितु सदा दयाल मास बारा रस एक। बिपभूजिते बिराज काज करबाकी टेक।
परसन करे करतार पार पर करनक्रितारथ। विगत लोभ अरू मोह द्रोहनहिं दिल में स्वारथ।
उतम चहन चोकस लियां पियां राम रस खास। कान्हड करीऐ वंदना गुरू रामही चरण अध्यास॥१॥
गुरू रामहीचरण अध्यासभ्यास होवत पर पद को। लगत लगन निज नाम माघ छूटत सब हद को॥
ऐसी करै निज संत नहीं औरे बन आवे। धनऐह दीन दयाल करम सबदूर भगावै॥
कलणि कलै नहीं जगत की भक्तिदेत भगवंत की। कान्हड दादड़ दूरकर जीव लई संप्रदा संत की॥२॥
रामानुज एहसंत संप्रदाजिनू चलाई। कलि कलिचा सब मेटि संत प्रगट भये आई॥
जिनके पुनि परताप ताप हमरी सोबीती। रामचरण गुरूदेव रामजी कीन्हों चीती॥
भीत भरम अर करम हंन खंन कदरज ता चाल। धंनऐ संत सिरोमणि कान्हड कियो निहाल॥३॥
किऐ निहाल गुरूदेव जुगति जिन भली बताई। तन मन करि तकरार राम की भक्ति भलाई॥
शील सुधर्म बताइ चिताया चेतन कीया। अग्यता आंटी मेटि ठेठ घर निरभै दीया।
कह्या कर्‌या जब जनन का हद का मारग परहर्‌या। कान्हड पे किरपा भई सुभ कारज सहजेसर्‌या॥४॥

इतिकवित्त संपूरण।।सर्व॥४॥

अथ गावा का पद लिख्यते

॥प्रथम राग भेरूं॥

स्तुति–नमो राम गुरू संतजन सिरे श्रबग जन ताज। कान्हड की ऐ बीनती तिरधा राखहु लाज॥१॥

पद– धन्य गुरूदेव दयाल सदाई दरध देखि दिल करूणा आई।।टेर॥
परदा खोलि दरस दिया आई। उपमां तुम्हरी कहीन जाई॥१॥
वार पार तुम्हरो नहीं काई। बेद पुरांण कहे बरन सुनाई॥२॥
और कहीं सब ही रिख राई। सिध साधा मुनि जनां बताई॥३॥
पार भयाजिना गुरू गम पाई। गुरू गम बिन अति से कठिणाई।४॥
गुपताभेद दिया दिखलाई। गुरू रामचरण की बलि बलिजाई॥५॥

ताज दिया मंत्र त्रिपततार्ई। यामूरति भल भू प्रगटाई ॥६॥
हम से अधम लिये सरणाई। भवबूडत करलिऐ सम्हाई ॥७॥
जन कान्हड ऐ सरण सम्हाई। रामचरण चरणां चितलाई॥८॥पद १॥
गुरू चरना सरनां सुखदानी। बडे बडे पुरुष दुरुष कही प्रानी॥टेर॥
गुरू मान वचन कुल कांण तगानी। जन उधरे सुधरे सुध ग्यांनी॥१॥
गुरा कथी सिर राखी प्रांनी। जीमधि सधिया पाठ पुरानी॥२॥
गुरूदिया मंत्र तंत्र तत छांनी। जाको गावत बेद ब्रह्मानी॥३॥
रामरटत चढ़े मुख अति बानी। रामरटत कटत करमानी॥४॥
राम कह्या होई काया पवित्रानी। कलिमल दफै स्रष्टि सब जानी॥५॥
रामगुरा सुभ सिद्धि निपानी। मिले ब्रह्म दुख करम तगांनी॥६॥
गुरू दया करी मेरे मन मांनी। गुरू किरपा की अकथ कहानी॥७॥
गुरू रामचरण मिलिया बडध्यानी। जन कान्हड़ की त्रिषा बुझानी॥८॥२॥पद॥
सतगुरू मेरी त्रिष्न बुझानी। गुरूदेव आपहि गति बखानी॥टेर॥
लखवाई गति ग्यान सुजानी। सुरगत दई कदरज ता भानी॥१॥
भय भगवाइ भजाया सारंग प्रानी। हक की खाइ धकाइ बिरानी॥२॥
नकल करे कलपना कांनी। प्रभु घर की गति सरब बतांनी॥३॥
तरन तारन टारन चहु खानी। धरा धरम मूरति निपानी॥४॥
गुरू रामचरण चरन भजि प्रानी। पूगे पद प्रान जन कान्हड बिग्यानी॥५॥३॥पद॥
भये बिग्यानी बहुते हरिजन। संत सीख उर धरीजु ते तन।टेर॥
करमहि तजे सजे सुभलछन। गुरू गम सेती गए कुलछन॥१॥
परख नरा तन देत बधे हतन। सुर नर अंछत बंछत ब्रह्मामन॥२॥
ऐह मिनखातन कठिन हठन पन। गुरूदेव देत मिलत जब ऐह धन॥३॥
रिझत रामजी बजत हरी जन। हरिजन मिल्यां खुल्या पट सुमरन॥४॥
चेते जीव सीव बुधि करनन। कान्हड करि उर सुमरन बरनन॥५॥४॥

इति राग भेरूं संपूरण॥ राग॥१॥पद॥४॥

अथ राग बिभास लिख्यते

पद- जाग जाग नर सुमरण कीजे। बिन सुमरण क्यूं रचन पचीजे॥टेर॥
जांम खोई मति सुमरण बिन ऐह। सुमरण सिधता होई॥
वेद शास्तर जुगति जनावे। गुरू ग्याता कहे जोई॥१॥
यो संसार जुगति नहिं जाने। सांसाके बस सोई॥
कला हीण किरतब बिन मूरख। दियो मिनख तन खोई॥२॥
गुरू जनावे जुगती ऊँची मूंजी कूं नहीं भाई।
कान्हड़ किरपा रामचरण की ताते भई सहाई॥३॥पद॥१॥
सतगुरू तेरी साहि करेगा। भवके नीरन फेर बहेगा। टेर॥
वारस मिले महाजन भारी। कारे करम निवारे।
सुभसतशील संतोष पोखदे। दांदड़ दूर निकारे॥१॥
जतमत गाढ ह्वाल लख भाई। काई कदर जताई।
ताई मनसा तिरपत थाई। जनकी कहा बड़ाई॥२॥
गाई अणभै सरस दिखाई। निपज जनस घर आई।
नरमाई सदगुरू सब्दां में। कान्हड रामचरण सरणाई॥३॥ पद॥२॥
मैं तो रामचरण शरणाई। जिन मेरी बिपता नसाई॥टेर॥
राम नाम दिया मंत्र सरबसिर। जामें सिधिता आई॥
साध अराध अति करी कमाई।। ज्यां उर नफा दिखाई॥१॥
चिरता चित्त लगावै नांही। काई कचवाई भगाई।
गाई रसनां कूं बसना बसकरि। रटना त्याग बड़ाई॥२॥
खटऐ खान छांडिए पांचू-सांचू इकरसताई॥
जन कान्हड़ चरणाचित लागो। आछी जुगति बनाई॥३॥पद॥३॥
सतगुरू अबनी ऐन बनावै। तुछिजा करम भगावै॥टेक॥
काने करे करम मघ सेती। हेती देर निपावै।
परचावै परब्रह्म जु पद कूँ मदकूँ मार भगावै।
भेदी है सुभ मारग केरा चेरा होई सोपावै॥१॥
लगवावै जन संगति मनकूँ तन कूँ नितप्रति तावै॥२॥
जावै जहां फेर नहीं आवै। अति करणी दरसावै।
कान्हड़ दानड़ दूर दफे करि। ऐसी गुरू देवां बनि आवै॥३॥पद॥४॥

इति रागबिमास संपूरण॥राग॥२॥पद॥८॥

अथ राग ललित लिख्यते

किरपा भई समझ भई दई बुद्धि दाता ॥
साता देण सत मिल्या खुल्या पाट राम माता ॥ टेर ॥
गाइ राम सुफल काम तजि कामना असाता।
असत धार कम सत्कार करम कर निपाता ॥१॥
हरि करण रूप ऐ धरम अनूप जन सेइ भोलाता।
जना बिनां बनत नाहि कही न कुसलाता ॥२॥
हरि मिलन की रीत ऐसा जना कर नरपाता।
कान्हड़दास अधिक प्यास जनां संग सुहाता ॥३॥पद॥१॥
जनूं संग हरि लगत रंग पतग रंग मिटाई।
जनाकी तो औपमा ऐह बरन बैन आई ॥टेर॥
अनत बिघन मिटतजीव पीव की सरनाई।
सजन असा और नही किन ढूढ देख भाई ॥१॥
भेद बरन कही आप एह अपरा जन सरनाई।
जनां बिनां कहा राम ऐह रामइया फुरमाई ॥२॥
कान्हड़ पे किरपा भई गुरु रामचरण राई।
असमझ कूं समझ दई भली करबताई ॥३॥पद॥२॥
भलीकर बनाई गुरु राम चरण देवा।
जिनसूं जीव उरन नाही। कहा भेटले पढेवा ॥टेर॥
भारी करी सुगति धरी घटमें सुबधि सेवा।
तुमसे नाथ तुमही आइ मोहि धनदियो अछेवा ॥१॥
कलि बिखमता मेटि मोर पोख तोख दियोरे मेवा।
सरब सिधि निधि ले सेव करूं तोही उरन गुरुकदेवा ॥२॥
आपसूं अबन बने में कहा कहूं जु एवा।
कान्हड़ कूं दरस देइ लियो आप देवा ॥३॥पद॥३॥

लियो ढेव दियो भेवले सतगुरु सरनाई।
मंत्र दियो राम नाम जी मैं सरब सिद्धिताई॥टेर॥
काम धरम अरथ मोख दे सब सुभ सिधिनाई।
उत्तम लक्षन अनंतदिया जरा सतकी प्रबताई॥१॥
बंधमोख मारग भेद जिन सारो छिटकाई।
एक चरण अचल सेव करि दे बताई साई॥२॥
ऐसी बनी जना भनी जन उपमा कही न जाई।
गुरु रामचरण चरन सरन जन कान्हड सुखपाई॥३॥पद॥४॥

इति राग ललित संपूरण॥राग॥३॥पद॥१२॥

अथराग चरचरी लिख्यते

पद– चेतोरे नरसुमरण करल्यो मिनखा जनम सुधारोरे।
बारबार यो पारयो नांही अब औसरयो थारोरे॥टेर॥
मिनखा जनम देव सब बंछत अंछत ब्रह्म बिचारोरे।
अजकेआसप्यारसअधिकेरीमिलतनकठिणकरारोरे॥१॥
सोयो तन मूरखते पायो क्यू खोवे रतन अपारोरे।
सकलसुरनसिरऊपरकहीए।योमिलियोअबकेबारोरे॥२॥
चाल सुचेतहेत कर हरि सूं निसदिन एकण सारोरे॥
कान्हड़दासजिताइचितावैफिरमिलेनरतनउधारोरे॥३॥पद॥१॥
नरतन रतन नीठ नरपायो गुरुदेव अरथ बतायोरे।
भजल्योरामकामसिधसारोकरल्योकाजसंवारोरे॥टेर॥
माया चिरत किरतमत्त भूलो फिरतमसिरे करता रोरे॥
भजन बिचे अंतराइ जुऐ ही जासूं मन निकारोरे॥१॥
परपंचासूं खेंच मनोरथ सिरजण हार सम्हारोरे।
सीखदेत गुरुदेव दयाकर जाकूं खणन बिसारोरे॥२।
पला ऊजला होइ करमहंन बिणज करो करतारोरे।
कान्हड़दास ख्यास करि भाखै चाखो हरिरस प्यारोरे॥३॥पद॥२॥

प्यार करो परमातम स्वामी खामी खणमत पारोरे।
आठ पहर अरुदेह जहां लग भजन करत जन हारोरे॥टेर॥
अणपख धरम नाम ऐनिरमल परमल होइ उचारो रे॥
हरदम याद करो नर रसना त्रिरानां कांम निकारोरे॥१॥
जम को जोर लगत नहीं कबहू हूबहु कर मन धारो रे।
आगे तिरे अजहुतरिजे हे तेरोभी निस्तारोरे॥२॥
जाकर छोडि जगदीस सुमरिऐ दुमरो मन ऐ कारोरे।
कान्हड़दास साजन है साधू वे आदू पंथ बतारोरे॥३॥पद॥३॥
आदू पंथ कंतको भजबो तजबो मना पसारोरे।
परपंच रचनां पचनां नाहीं ररे ममें मन लगारोरे॥टेर॥
लगन लगाइ लालची ह्वै के ज्यूं सिधसिलत मिलारोरे।
अटकी रहैन किसकी सिलत सिध पैसाण मन धारोरे॥१॥
जैसे नट नट बाजी करि है म्हेर बात नहीं हारोरे।
सुरति निरति ब्रतिमांही मेली तजदियो तलो पसारोरे॥२॥
ऐसे जन हरि जी कूं सुमरे दुमरे कुल क्रमगारोरे।
कान्हड दांदड दूर करे क्रम बिन समही निस्तारोरो॥३॥पद॥४॥
इति राग चरचरी संपूरण॥राग॥४॥पद॥१६॥

अथ राग बिलावल लिख्यते

निस्तारेगा रामजी भजीयो मनलाई।
भजन रेस रसना कियो जना जुगति बताई॥टेर॥
करतब करो अहूं परहरो धरो धरम सदाई।
असला क्यां नाहीं बणे क्षण एकजु भाई॥१॥
रखो जावतो धरम धन पन पकड्यो गाई।
छोड़ो नाहीं एक छिन गुरू बरन सुनाई॥२॥
परीऐ पग उन जनन के जिन घट समताई।
कान्हडदास अभ्यास कर यं निपजत आई॥३॥पद॥१॥

उर निपजत नाव बिचार सूं कुल छोड संहकारा।
धरम धरावै धरम जन कलपन करि न्यारा॥टेर॥
अपरस मणीं मन दूर करजीहा नाव उचारा।
सबास्याम नहीं बीसरे अठपहरी धारा॥१॥
कारा कलचा छोडीया सतब्रत मन प्यारा।
मान बडाई ईरखा नहीं मंन लगारा॥२॥
कठिण कमाईजन करी नित ऊँची धारा।
कान्हड किन किन ह्वै रही महमां महीं सारा॥३॥ पद॥२॥
महमां महि विधि बिस्तरी निस्तारी जिन काया।
काइक बाइक मन धन तजयां।
सजयां भजया इक रामहि गायां ॥टेर॥
आनंद अरथ उपाईया कुब्यसन छिटकाया।
ताया तनऐ आपनां नानां हरस उठाया॥१॥
उर उज्जवल किया भजन करि मन मेल हटाया।
सहजे सहजे करम खण भण गुण अरथाया॥२॥
अरथाया अनरथ तज्यां कज्या भरम भगाया।
कान्हड़ बांजड़ खेत था गुरू सुफल कराया।३॥पद॥३॥
सुफल कर्‌या करमज हर्‌या धर्‌या धरछिटकाया।
अब न बने गुरूदेव सेभ अरथ बनाया॥टेर॥
भलीकरी संसेहरी दुरमति छिट काई।
कला बधाई करमहन मन मेरे भाई॥१॥
साखी बताई जनन की जिन करणी करवाई।
अन करणी की बारता सब तुछ बताई॥२॥
ताई मन मनसा जनां हरि की शणाई।
कान्हड़ किरपा जन भई पीछे हरिराई॥३॥पद॥४॥

इति राग बिलावल संपूरण॥राग॥५॥पद॥२०॥

अथ राग अलिया बिलावल लिख्यते

पद- सतगुरु अतर समंद संसारो।
मोकूं दुरत्तर अधिक बन्योहै तुम बिन नहि निस्तारो॥टेर॥
भवसागरकी ताप घणेरी सह्यो दुख केइ बारो।
जनम मरण आयो अरु जायो। परबसुप्रान हमारो॥१॥
चित ब्याकुल आकुल अति हूवो रोयो हंस्यो केइ बारो।
अब कै अजक निवारो मेरी तेरी भक्ति बितारो॥२॥
तिरे जके जन जगत समंदर उनके ग्यांन अधारो।
कान्हड़दारा सास लगे लेखे जन देखे अंदर उजारो॥३॥पद॥१॥
सतगुरु कीन्हों ऐन उजारो। भागो भरम करम करि काने।
जन जांनै निज धरम बतारो॥टेर॥
परे करे पापूं मध परगट दरीया धरम बधारो।
जामधिआऐ सबसिधिताऐ अगिता परोनिकारो॥१॥
सब सिधि निधि को पुंज प्रमातम आतम को आधारो।
जतन करे अरपाले पोखे भूखन हरन हमारो॥२॥
अब तूं जपले जाप उसी को जिसको कर्‌यो पसारो।
कान्हड़ समरथ रामदया निधि पल में करे सुख्यारो॥३॥पद॥२॥
सतगुरु पल में करत प्रबीनां।
मुस्कल माघ हरी को कहीऐदियो दयाकर दीन्हा॥टेर॥
दरस दिखाइ खखाई जुखोई दिल दल रतारवीना।
तोखरू पोखबताइ बधोतर प्रभुरंग में मन भीनां॥१॥
रंग भीनां झीनांमनां तन सुख तमिररसपीनां।
अन्य रस त्याग लाग सतसंगत कूं क्रम काम मटीना॥२॥
मिटीया काम स्याम करि सुमरन दुमरन मन मलीना।
कान्हड़ सिधता सतगुरु कीन्हीं जब जाइ जनपद चीन्हां॥३॥पद॥३॥
सतगुरु सुभ सिधि भरे भंडारा।

कार मुरजाद महीमन राख्यो। कलपन ताकर न्यारा।।टेर।।
दिलका पोष निवारे दाता जन साता समझ बतारा।
तारग मंत्र रटाइ रैणदिन लिव नहीं खंडित धारा।।१।।
धरा सुखबिसराइब सांचे जन परलोक मंझारा।
वहां के सुख को छेह नहीं आवै ज्यूं अठली धरवेतारा।।२।।
सतगुरू करेस करले बाबा औरां बलन बिचारा।
कान्हड़ रामचरण बलि जाऊँ गुंण गाऊँ पतित उधारा।।३।।पद।।४।।

इतिराग अलिया बिलावत संपूरण राग।।६।।पद।।२६।।

अथ राग रामगिरी लिख्यते

पद– रामजी अधम उधारन राई।
अनेक पतित प्रभुपार किऐ हैं में भी जन सरनाइ।।टेर।।
जानत सकल सरब घटकेरी जो कुछ भली बुराई।
तुम सूं छानी नाहिं गुसाई मो उरकी राइ राइ।।१।।
रजाबंदी पादकी नांही तो क्यूं जीवे पले लगाई।
चूकाघणी गिणी नहीं जावे खावंद तोरी कुहाई।।२।।
अबलाबल कछु चालत नांही सुहाग हाथ कर ताई।
कान्हड़कूंखुसीहोइज्यूंराखरमापतिगुरूबाबलतुझेभलाई।।३।।पद।।१।।

रामजी मेरी दया बिचारी।
मोसे पतित अतिंत किए पार असरन सरन तिहारी।।टेर।।
सचित भए गहे पद न्हचल चंचलता जुनिवारी।
सदगति मिले झले गुरू धारन कहा पुरूष कहा नारी।।१।।
चित चरणां मेरो रखो दयानिधि पल छंड जाइन कनारी।
अष्टपहर लवलीन भयोरहे ऐसी करो मुरारी।।२।।
तो मो बिच पड़दा परपंच का ऐसबही करो किनारी।
कान्हड़ दांनड़ दूर करो प्रभु गुरू मुरति परवारी।।३।।पद।।२।।

रामजी तुम पे वारी जाऊँ।
तुमहो दयाल दया ‧‧ति कीन्हीं कहाइक जिह्वा बरन सुनाऊँ॥टेर॥
वार पार तुम्हरो नहीं दाता कुंण साता देण सुणाऊँ।
जहां तहां देखे लोभ लालची सब घट बरण बताऊँ॥१।
आप बिना जो आंनदेव सब उनकूं सिर न नवाऊं।
एक नाव आधार धरा धर लिव निसबासुर लाऊँ॥२॥
चिरतछोड़ सब जर जोवर अमर पद मघ ध्याऊं।
कान्हड़ कला उपाई अगमगम समर तिमर छिट काऊँ॥३॥पद॥३॥
रामजी समर संताप मिटावो।
असरन सरन नाथजी तुमहो मोमन अधिक उछावो॥टेर॥
चितवन चिंता मेटो बिपता सुभगुण को उरभावो।
शील स्थिरता मन न रहे मेरो कारा करम भगावौ॥१॥
लाह्योद्यो गुरू मिनखा तन को सोबत सरसद्रिढावो।
निसदिन भजन वणे हरिजी को ऐसो करो बधावो॥२॥
गुरू किरपा सूं सब सिधि आवै अमनी मान निवावो।
कान्हड़दास ख्यास करि भाखै अबगुरू अतर तिरावो॥३॥पद॥४॥
इतिराग राम गिरी संपूरण राग ७॥पद॥२८॥

अथ राग आसावरी लिख्यते

पद- बापजी बिड़द तुम्हारो पालो।
में औगुण गुण एकन दीरो उर अघको अति चालो॥टेर॥
जनम धर्‌यो जब सूं मैं देवा सेवा सुभन सम्हालो।
करे करम धरमगत कीन्हें हूं पांपा को जालो॥१॥
जिकर छुड़ाइ जुड़ावो सतसंग बिगडी बरतु उजालो।
जर उर लगत भगत पनपकरत रह्या के बिघन निरालो॥२॥
मदति करो धरूं मन तो मघ अघबन बही बालो।

कान्हड़दास ऐह करत बीनती हीणति संगति टालो ॥३॥पद॥१॥

रामजी हीणत संगति निकारो।
बेर बेर बर मांगू रमईया अपने चिते बिचारो॥टेर॥
हीणभजन जे कोई हो वो याको मिलन जुटारो।
ग्यान ध्यान धन धरम हीणजे उनको संगनिवारो॥१॥
पातगयुति उतम गति डारी नहीं सार सम्हाल बधारो।
कुगती कुमती सुमती नाहीं जीधार्यो चलण गधारो॥२॥
असाध रोग उतपन भयो जाउर जी खंचलियो सिरभारो।
कान्हड़दास दुष्मन जाको ता संग होत बिगारो॥३॥पद॥२॥

रामजी बिरत बिटल संग खोटो।
मत कोई भूल भजो उनको संग।
तज मन बचकाइजु वोटो॥टेर॥
तजि उन वोट खोट अति लागे भागेस्यांण्य मोटो।
आंण लगावत बानाबैन अति ऊपण कणपाड़तटोटो॥१॥
भली बात भावै नहीं जाकूं देत अण हुतो दोटो।
चुगली चावथ पर औगुण गावत परमन पारत भोंटो॥२॥
कुबधि बधावै सुमति छुड़ावै अधरम मारग नर ओहोटो।
कान्हड़दास क्यास करिभाखे ऊसंग है अति छोटो॥३॥पद॥३॥

रामजी संगति सर सब ताजे।
सीतल होइ जीव जिहि परसे तरसे भव भय काजे॥टेर॥
पण परतीत नीत लियां निसदिन राम नाम जहां गाजे।
निरव्रती परव्रति संग त्यागे जहां निरबति बाजा बाजे॥१॥
अकल अकल दइ जाकर गम भई जहां सतगुरू शब्द समाजे।
किसमत करि कीमत लई भारी कहा कोई पुरूषन राजे॥२॥
निपजे जीव सीव मेंमिलिया ऐह संगति कहां पाजे।
कान्हड़दास अभ्यास कर भाई गुरू रामचरण गुण गाजे॥३॥पद॥४॥

इति राग आसासंपूरण॥राग॥८॥पद।३२॥

अथ राग देवगंधार लिख्यते

पद- सुधारे भजन करो निजदेव।
देवदइतकी संकन कीजे पीजे हरिरसऐव।।टेर।।
दकत होइ करमा कीकानी आनी हरिहित देव।।
खेस बुरी गत सजता थारो छोड़ो खोटी टेव।।१।।
तिरन तारननिज नाव उंचारो गारो ममता जेव।
जन कान्हड आनंद अति होवे जीको नहीं अछेद।।२।।पद।।१।।
रामजी अधिक अछेवअमेव।
गतिगुण गांया तन तायां पावै।
या सुरती समझ बधेव।।टेर।।
चखखोले किनहिरदा केरा घेरा होइ जनेव।।
आगे आगे लेते आऐ जनसे सरबग लेव।।१।।
तिरपत भऐ गऐ दुख दुंदर सुंदर पद दियो एव।
जन कान्हड दानड़ गऐ दूरा पूरा पद की सेव।।२।।पद।।२।।
रामजी रजिक मोत तुम हाथ।
ओरां को बस नहीं बापजी दवातर वाति तुम साथ।।टेर।।
सबदां माघ बतायो मुक्ता भजि रमता राम बिख्यात।
सतुगुरुजी को सरणों भारी ज्यां सब निरणो पात।।१।।
रखविश्वासबिसरमतमालिकसबखालिकखबरलिवात।
कान्हड़ सुमरण में सिधसारी थारी चीरी खटि चिलात।।२।।पद।।३।।
मना २ चरीचिरंजी पास।।ं क्यूं कलपे कलिमें आई बासे
चरणां के बासि।।टेर।।
हरि कूं सोपो लाज वड़ाई धरद्रढता गुरुखास।
कलचा सहे तू सकल जगत जुध मनकूं कर इकरास।।१।।
राम नाम में नोनिध सारी है अष्ट सिद्धि घरवास।
कान्हड़आनंदजनांबतायोअबरह्योधनतोखप्रकास।।२।।पद।।४।।
इतिराग देवगंधार संपूर्ण।।राग ६।।पद।।३६।।

अथ राग जैजैवंती लिख्यते

पद- धन जन जग तन। अपन कूं आये पन।
असरनकूं लेत सरन नांव निति भावन ॥टेर॥
करत उपदेस ऐन देहेजु मुकति सैन॥
बसो रन बन चैन कतरोरे कुभावन ॥१॥
तिन ही अनित ऐह अनित तिग नितिलेह।
सुफल सकल देह ऐ कान्हड यूं गावनां ॥३॥पद॥१॥
गाइ गाइ राम गाइ कुमति सकल ढाइ ताइताइ अ
तन ताइ जाइ जग पारजू॥टेर॥
पार धार पार करै जगत समुद्र तिरे।
असरन सरन बरे रखत करारजू॥१॥
करार करता को धरि पतिब्रत भजहरि।
कामना कतल करि मिलत मुरारजू॥२॥
नेम पेंम नित प्रति आतर लियां है सति।
कान्हड आणंद गति जबतदि बिदत बिचारजू॥३ पद॥२॥
इति राग जैजे वंती संपूर्ण॥राग॥१०॥पद॥३८॥

अथ राग बसंत धमाल लिख्यते

मन धारप्रीत रमतीत राम।
ज्यूं होत सकल सिधता जुकाम॥टेर॥
मन धार प्रतीत तिरगऐ संत अनंत गिनत नहीं होत अंत।
भजि भगवंत गऐ ब्रह्म मंझार सिधताहे सारे ज गत जाहार॥१॥
परचाहे सारे जगत सार भगताहे जावे ब्रह्म द्वार।
धारे नहीं तनई जग मंझार मिलै राम छूटे सब विकार॥२॥
जन कान्हड इतबार धार। पण परतीत कर भए पार।

गुरु रामचरण चरण सकल सहारऐ होवे बेड़ा अब केजुपार ॥३॥ धमाल ॥१॥

मन निरस बुरत कुं दूरढारि। ध्यान भक्ति लेहु सब धारि॥टेर॥

ज्यू पला ऊजला रज परसि पार। पासि कटे होवे ज्यू ऊधार।

नरक निवारण सत सार। जनकरवै भारी उपगार॥१॥

जन जुगति उकति देवै बिचार। पण परतीती समझसार।

जन भक्ति मुक्ति देवे अधार। करम काटि करे जीवपार।२॥

म्हर करै म्हाराज सार भक्ति बधारण भऐ अवतार।

जन कान्हड मेटे उर उरझार॥ गुरु रामचरण मिले ब्रह्मझार॥३॥धमाल॥२॥

रमैयो रसना लीजीऐ हो।

हांहो साधो माधोन बिसारो कोइ॥टेर॥

चितवन करो भजन भगवंत को बिसरो न पल आध।

नाद बिंददोई बसकर राखे दाखे जन धरम मुरजाद॥१।

पल पल प्यार करै जन चरणां करुणा करि कहै राम।

धरम धार पार होइ पहूचे न्हचेहो राखेनाम॥२॥

अमर अध्यातम सतगुरु बगस्या रगस्या क्रोध अरकाम।

कान्हडदास दुरस दिलहोवै परसे हो अपनो स्याम॥१३॥१॥

स्याम सिरोमणि गाईऐहो। हाँहो साधो आधो न बिसारो जाम॥टेर॥

खरतर मतो धारदिललिजे पीजे नितरस नाम।

जगत भगत भई परसिधर ई पावे हो अविचल धाम॥१॥

निरति करो निरव्रत होइ जगसे न्यारा प्यारा परम बिचार॥

सरनागत सांई के रहीऐ गहीऐ हो ध्यान अचार॥२॥

दरसण होइ बोइ सब धोना खोना जी दिलका दाग।

कान्हड़दास भगति करभारी ज्यूं जागे हो भाग सुभाग॥३॥ काफी॥२॥ रागहिंडोल॥

हांहोसुमरण सार समझ कर कीजे लीजे पणपरतीती हो।

भरम भगाइ गाइ इकरामहि धाम पहुँचि जगजीती हो॥टेर॥

हाँहो कर सुमरण साबूती लीयां जी हां बिसरन रीति हो।

गाफिलपनो गुमाइ बिसारो धारोइण बिधिरीती हो ॥१॥
हांहो सुभगुण सबर सतावी लीजे बीजे असुभ गुण रीती हो।
भाव भगति भगवंत को भारी गारो कुव्यधकी प्रीती हो ॥२॥
हांहो भाग भले जब भजन बण्यावे गुरु गोबिन्द जन प्रीती हो।
जन कान्हड़ दांदड़ सब भागै सुमरण बिधि उरनीती हो ॥३॥धमाल॥१॥
हांहो सुमरण प्यार परम पद पावै जावै उरमल सारा हो।
धारण धार धार दिल दृढता पढता अखर दोइ ऐकतारा हो ॥टेर॥
हांहो धरि इकतार अखर दोइ फेरा घेरा जनदा धाराहो।
ब्योरा लेत भजन का भारी तारा प्रांण परारा हो ॥१॥
हाँहो पस नहीं रहे परासूंन्यारा गारा मनगत वाराहो।
धारा धरी करीजन भारी मिलगऐ ब्रह्म मंझारा हो ॥२॥
हांहो धनगुरुदेव भेदियों भारी गुरुरामचरण अवतारा हो।
जन कान्हड़ पर किरपा कीन्हीं चीन्हीं सुरति मुक्ति वधाराहो ॥३॥धमाल॥२॥
राग आसा सिंधु हांहो धरम बधोतर जन संग होवे धोवे
उरमल सारा हो।
प्यारा परम सनेही सुमरे दुमरे कुंबुधि बिकारा हो ॥टेर॥
जगत भगत में परसिध ताई भाई भजन वधारा हो।
साकट पनां गुमावे सारा चारा नांव अहाराहो ॥१॥
मुकता नांव मुराल चुगत है बगत करै ध्रम भाराहो।
आनपखी सूं सपरस नाहीं ऐसा अधिक अचारा हो ॥२॥
जनकान्हड़पर किरपाकीन्हीं भीन्हीं सुरति पद मंझारा हो॥
रामचरण जन पन पकड़ाई अब भव भऐ तजेअराहो ॥३।धमाल॥१॥
अबके आरा तिरभव भारा पारा होइ ज्यूँ पाराहो।
धारा जिनकी न्यारी कहीऐ सबसे न्याराहो ॥टेर॥
कीमत करके सतगुरू दाखे राखे न्हचे पाराहो।
इस्कलगाईअसल आसिकसूंज्यूंभागे भोलप साराहो ॥१॥

करि साहिब सू असल इस्कता परसता नहीं परारा हो।
रसता बताइ दिया गुरुदाता राता औरन धाराहो ॥२॥
गरक भए पद हद नहीं आवै जावै जन ढिंग सकल दुवाराहो।
दोलत अनत बिलसत नहीं बीते जन कान्हड कहत बितारा हो ॥३॥ धमाल ॥२॥
संतों धन धन हरि को नाम। जुगति कर लीजीऐ ॥टेर॥
धन जो बंस हंस हरि केरो घेरो होइ रस पीजिए।
जुगति जिताइ कहे जनजोगी भोगी होइन खीजीऐ ॥१॥
भोग रोग समजाणें साधू आदू माघ पतीजीए।
जासूं सिद्धि होय जोरारी भारीपतिब्रत रीजिये ॥२॥
अगिता आंक होइ ज्यूं दूरा पूरा सतगुरू रीझीऐ।
कान्हड़दास दया सकरि रहीऐ ज्यूं अमर होइ नहीं छीजीऐ ॥३॥
धमाल ॥१॥ संतों छीजणता करि दूर। भूर पद भेटणां ॥टेर॥
भरम करम खत खातर भागे जागे रटण अतीतणां।
संग करे समगत बहोतेरा चेरा होइ हरिजन तणां ॥१॥
प्यालापिवे रामरस केरा देहरा उज्जवल हेराहो।
राग नाम बिन ओरन मानें भाने उरज अंधेरा हो ॥२॥
ज्यूं दिल दाझणता सारी बीते रीते चूके निता हो ॥
कान्हड़दास चिताइ जितावे पावै पूरण मीता हो ॥३॥ धमाल ॥२॥
इतिराग धमाल संपूरण ॥राग१५ ॥पद ॥३८॥

अथ राग आरती लिख्यते

आरति रामचरण सतगुरु की। सकल कांमनां मेटी उरकी ॥टेर॥
शरणे राख करी प्रतिपाला। जनम मरण का मेट जंजाला ॥१॥
ब्रह्मरूप गुरु दया बिचारी। मुक्तिदायनी गिरा उचारी ॥२॥
तन मन धन ले आरती कीजे। मन क्रम बचन चरण चितदीजे ॥३॥
रामचरण गुरु कान्हड़ पाया।
अनंत जनम का शालमिटाया ॥४॥

आरती॥१॥ इति स्वामीजी श्रीकान्हड़दासजी महाराज की वाणी संपूर्ण। संख्या लिख्यते॥स्तुति का कवित्त॥५॥साखी॥२७६॥अंग॥११॥कवित्त॥४॥पद॥३८॥राग॥१५॥आरती॥१॥दुहा॥संबत संख्या जानऐह। पेंसदो ब्रतमान। आसोज सुधि ऐकमतिथी। बार मंगल सो जान। गुरु कान्हड़ पद बंदिके। लिख्योज इम्रत राम। गुटको संपूरण कर कह्यो। सब संतन कूं परनाम॥२॥ नग्र भाणपुरा मध्ये राम द्वारे लिख्यो।

अथ साध महाराज कान्हड़दासजी प्रम धाम प्रापति हुआ जीसमे का शब्द लिख्यते। कवित माल को। जन कान्हड़ ब्रह्म पद मिले गुरु रामचरण पद परस कर। महाधीर गंभीर दया उर परउपगारी। बडे मुनीवर संत मत्त के बडे करारी। इंद्री दंम संम मंन अंतहकरण सब बस कीया॥ बनिता माया मान काइ मन बच तजिदीया। मगन राम रसलीन ब्रति वैराग करारा॥ धरम समंद जो बचन कहे दैह लग इकसारा। रामजन महाराज मेडते संग पधार्‌या। चत्रमास सामीप रहे तहां ओर सिधार्‌या। संत चालीसर तीन तकांमधि आप बिराजे। दसरावा के पछे संत बोहो भऐ समाजे। फिर रामत नागोर संग महाराज सिधाऐ। फैर रामजन संग मेडते पीछे आऐ। असी संत सामीप मेडते एह फुरमाई। सीत चरणामृत मोहि रामजनं द्योह दुवाई॥ तब ले चरणामृत सीत मुख सुख आनंद पायो। करि सब संतन सूं राम राम जनजीसूं करवायो। तब रामजन महाराज आपतो रामत कीन्हीं। संत चत्रदस आप रहे तहां आनंद भीनी। रूपदासजी और संत तहां विराजे।

॥राम॥

अथ स्वामीजी श्री १०८ श्रीकान्हडदासजी महाराज की बाणी का भावार्थ लिख्यते

स्तुति का कवित्त

प्राणी मात्र में रमण करने वाले, सभी को सुख देने वाले परमपिता परमात्मा राम को मैं वन्दन करता हूँ। त्रिगुण से परे व जिन्होंने गुणों को जीत लिया है, जन्म मरण के दुःख को दूर करनेवाले शिष्य को निर्भय बनाने वाले गुरुदेव को भी प्रणाम करता हूँ। और जितने भी संत हैं जिन्होंने परमात्मारुपी स्वामीजी का सुमरण करके कर्मों का अंत किया अर्थात् जिनके सब कर्म नष्ट हो गये हैं, ऐसे इन रामगुरु संत तीनों को नमस्कार करने से संसार सागर में भटकने का जो दुःख था वह सब समाप्त हो गया। और जितने भी कर्म थे वे सभी नष्ट हो गये हैं। जिनके नाम का जप करने से स्वामी श्रीकान्हडदासजी महाराज फरमाते हैं कि इन सभी को नमस्कार करने से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। जो रामजी महाराज सर्वव्यापक हैं, पापो को नष्ट करने

वाले हैं, दयालू हैं, करुणा के सागर हैं, संसार को बनाने वाले नौका के समान, सज्जन पुरुष व सभी में जो प्रसिद्ध हैं, वेद इनका रहस्य है जिसको इनका रहस्य मालूम नहीं है ये इनका रहस्य नहीं जानते हैं। पुराण व कुराण व किताबों में इनका सुयस वर्णन किया गया है। स्वामी श्रीकान्हडदासजी महाराज वदना करते हैं कि इनके द्वारा सभी का कार्य सिद्ध होता है। जिसे भी राम शब्द सिद्ध हो जाता है वो अटलपद को प्राप्त कर लेता है। इस संसार सागर से तिरने के लिये नौका के तुल्य रामजी महाराज सर्वव्यापी व बहुत नाम वाले देव हैं उनकी सेवा करो। क्योंकि ये सभी का भरण पोषण करने वाले, सभी का पेट भरने वाले सभी के घट घट में विद्यमान हैं किसी प्रकार की कमी नहीं रखते हैं। अनेक नामों वाला पुरुष कामनाओं से रहित वह मालिक भला है सुख देने वाला है। जो पापी हैं उनके मन को बदलकर के निज घर की तरफ लगा करके बडाई देते हैं और जो आपका दास है उसकी महिमा बढाने वाले तथा जिसमें जो भी कमी है, जरासी भी उसको दूर कर देते हैं। स्वामी श्रीकान्हडदासजी महाराज कहते है कि संसार में जो भी भारी से भारी दुःख है वह भी नष्ट हो जाता है और शत प्रतिशत उसका तेज बढाते हैं। प्राणि मात्र में उस पवित्र राजा राम का तेज परिपूरण समाया हुआ है। वत्सलता को बढाने वाले स्वामी आप हो। आप अमर हो। आप किसी में भी उलझते नहीं हो। कभी भी इसलिये आपके गुणों को गाकर प्राणी पवित्र रहता है। इसके लिये आप प्रसिद्ध हो प्रकट में ही दयालू हो, निहाल करने वाले आपका यह मंत्र है। शरीर, मठ, बडा भारी आकास से ये सब बनते हैं ऐसे ही आपके द्वारा संसार बनता है। स्वामी श्रीकान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि विधि और युक्ति के द्वारा बारंबार नमस्कार करो। सभी संतों में शिरोमणि श्रीसंतदासजी महाराज हैं। श्रीसंतदासजी महाराज के शिष्य हुऐ कृपालु स्वामी श्रीकृपारामजी महाराज जो कि कल्याण करने वाले अध्यासी हैं। श्रीकृपारामजी महाराज के कृपालु दयालु शिष्य स्वामी श्रीरामचरणजी महाराज हुऐ। स्वामीजी श्रीकान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मैंने उनके चरणों की शरण ली है जिससे मेरा जन्म और मरण मिट गया है। स्वामीजी श्रीसतदासजी की शरण कृपारामजी ने ली उनकी शरण स्वामीजी श्रीरामचरणजी महाराज ने शिष्य होकर ली है। परपरा का वर्णन इस कवित्त में किया गया है उनकी शरणागति श्रीकान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मैंने भी ग्रहण की है।

साखी प्रथम गुरुदेव का अंग

राम, गुरु और सभी संतों को नमस्कार है क्योंकि ये सभी मस्तक के मुकुट हैं। स्वामीजी श्रीकान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि इन्हें मेरी विनती है लाज रखें। मेवाड प्रांत के बीच में प्रगट हुये जो कि प्रकट में ही सिद्ध अर्थात् ख्याती प्राप्त हुए हैं ये मेरी; संत श्रीकान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मैं उनकी शरण में जाकर तिर गया। गुरु रामचरणजी महाराज ने मुझे निधि अर्थात् धन प्रदान किया। अष्ट सिद्दि एवं नव निद्धि मुझे राम नाम प्रदान करते हुए बैराग्य भी प्रदान किया। वह समय वह घड़ी धन्य है, जिसमें गुरुरामचरणजी के चरणों में प्रीति लगी। स्वामीजी श्रीकान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि जब मैंने

शरण ग्रहण की तब सभी की सहमति खूब मिली। गुरुरामचरणजी महाराज के चरणों का स्पर्श करने से जन्म मरण सब मिट गये। संसार में सभी नया नया ही प्रगट हुआ अर्थात् फेला प्रसिद्ध हुआ। स्वामीजी श्रीकान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि जो बांझपण था वह नष्ट कर दिया अर्थात् हृदयरुपी जमीनमें भक्ति रुपी खेती नहीं होती थी वो नष्ट करके उसमें अब भक्ति रुपी खेती उत्पन्न होने लगी। इस भक्ति को उत्पन्न करने वाले गुरु रामचरणजी महाराज हैं जिन्होंने कृपा की ऐसा स्वामीजी श्रीकान्हड़दासजी महाराज कहते हैं। दया, कृपा सत्य और शीलता आदि खूब अच्छे गुण और संतोष दिया। मन से छिपा हुआ विश्वास नहीं है। संत बार बार आड़े फिरते हैं कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मैं तो शरण में पड़ा हुआ हूँ। गुरु रामचरण जी महाराज की शरण दृढ़ता से ली हैं। महाराज कान्हड़दासजी कहते हैं कि मैने चार वर्ण, चार आश्रम खट दर्शन, हिन्दु मुसलमान भी खोज लिये हैं कि जन्म मरण से कौंन छुड़ा सकता है परन्तु कोई भी ऐसा नहीं मिला। वस गुरू महाराज रामचरणजी के प्रताप से ही जन्म मरण छूटा। इनकी कृपा से शरीर में जो त्रिविधताप थी, जलन थी वह मिट गई। अशांति नष्ट हो गयी। कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि गुरू रामचरणजी के चरण स्पर्श करने से मन को भी मैंने पूठ देदी। गुरूदेव की शरण में आने से भर्म कर्म सब चले गए। और नाम स्मरण करने का अधिकार प्रदान किया। गुरू महाराज रामचरणजी की चरण रज से मैं पार हो गया। जो अनादि काल से चला आ रहा है वह श्रेष्ठ धर्म प्रदान किया। वह निर्णय करके दयालु ने गुरू रामचरणजी महाराज तो पालना करने वाले हैं, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं जो भी कष्ट थे वह सब मिट गये। कर्म व भर्म के द्वारा जितने भी कष्ट थे उन सब को समाप्त कर दिया। राम शब्द को बार बार पढ़ो अर्थात् याद करने से गुरू महाराज रामचरण जी की शरण में मेरा सब काम सिद्ध हो गया। ऐसा कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं। सभी कार्य सिद्ध होते हैं और आनंद की प्राप्ति होती है और सभी शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मेरे को ज्ञान देकर धर्म की मर्यादा बांधी। तन मन धन सब न्योछावर कर दो। धारण अर्थात् ग्रहण करने के लिये दयालु ने मन प्रदान किया है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि इतना सब कुछ देकर के मेरी जो हीनता थी वह भी दूर कर दी। और जो बुरी चाल अर्थात् आदत थी वो भी दूर कर दी। भाग्योदय हो गया और बढ़िया घाट घड़ने में आया अर्थात् शरीर को सुंदर घड़ दिया। धन्य हो धन्य हो। गुरूरामचरणजी महाराज को। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि जिनकी कृपा से हृदय के किवाड़ खुल गये। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि हृदय के कपाट खुले आनंद हो गया और जीव ब्रह्म में मिल गया। और सब सानंद पूर्वक कार्य साधन होने लगा। ऐसा गुरूरामचरणजी महाराज ने किया। रामचरणजी महाराज का ध्यान करने से सर्गुण व निर्गुण दोनों की साध.ना हो जाती है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मेरे ऊपर कृपा करके गुरु महाराज ने जब ज्ञान दिया और मैंने भगवान का भजन करते हुए लिया तो मुझे बड़ा आनंद प्राप्त हुआ। गुरु रामचरणजी महाराज की शरण ली तब सभी दुःख और द्वंद्व नष्ट हो गये। ऐसा संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं। चरण स्पर्श करते ही

भगवान का प्रताप प्रगट हो गया। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि जब गुरू रामचरणजी महाराज ने अपनी शरण में मुझे लिया तब सभी आतप नष्ट हो गये। गुरूरामचरणजी महाराज का संग प्राप्त करते ही मनुष्य देह प्रदान करने का लाभ प्राप्त कर लिया। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मन में तो आनंद हुआ और जो कच्चे रंग अर्थात् दूसरी जो भी दुर्बलताएं थी वह सब नष्ट हो गई। रामजी के नाम का पक्का रंग लगा दिया। जितनी भी आन देवताओं की भर्मनाएं थी वो जल गई। गुरूरामचरणजी महाराज के चरण स्पर्श करने से खोटी बुद्धि व अभिमान सब दूर चले गये। मान, सम्मान, अहंकार, भोलप अर्थात् अपने आपको भुला हुआ था वह अज्ञान सभी नष्ट कर दिया, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि गुरुरामचरणजी महाराज ने मेरे ऊपर कृपा कर के सार वस्तु प्रदान की। जो सार प्रदान किया उसे सिद्ध करवाया सद्बुद्धि प्रदान करके जो भी डर था, उसे नष्ट करते हुए भजन की रीति प्रदान की। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि लक्ष्य पद को प्राप्त करा दिया अब आनंद करो। ठेठ ठिकाणा तो ब्रह्म का स्थान ही है वह गुरूरामचरण महाराज ने प्रदान किया। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि उसका उच्चारण रात दिन करते हुए मुक्ति का मार्ग प्राप्त किया। संकेत से बचने पर सारी बात शब्द की ही कही है शिष्य तू रामजी का भजनकर। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मेरे ऊपर जब कृपा हो गई तो मुक्ति का स्थान प्राप्त कर लिया। मुक्ति का स्थान जो प्राप्त किया वह राम नाम के सुमरण करने से अज्ञान रूपी अंधकार से युद्ध करते हुए त्यागा। तब मन वचन पवित्र हुए तभी उत्तम भावना जागृत हुई। संसार से जागृत होकर संत रामजी का जप करते हैं और शरीर से संबंध नष्ट कर देते हैं जैसे घास के तिनके को तोड़कर फेंकने में श्रम नहीं करना पड़ता है वैसे ही मन की जितनी भी भर्मनाऐं हैं इन सबको नष्ट करते हुए सुमरण की तरफ दौड लगायो अर्थात् सुमरण करो। दौड़कर जल्दी से रामजी का भजन करो, विषयों का परित्याग करो। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि तभी समझो की सुमरण का यही सुमार्ग है। जब मन के अंदर रामनाम की सीर खुल जाती है तब परमात्मा मिल जाते हैं। और जीव आत्मा भी उसी में लीन हो जाता है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि नाम के बिना कोई भी परमात्मा से नहीं मिला है। परमात्मा की प्राप्ति सुमरण करने से ही होती है। संसार से अलग रहे, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मैं यह वार्ता सत्य कह रहा हूँ कि तब ही प्राणी मुक्ति के बीच पहुँचेगा। बीच में वही पुरूष पहुँचेगा जो की शरीर से झगड़ा करेगा। साधु महात्मा नित्य ही कहते हैं कि जो सुमरण करेगा तभी मन के विकार नष्ट हो जायेंगे। विकार मिट गये तो आनंद प्राप्त हो गया, जब जीवात्मा रामराम का सुमरण करता है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि तब तो आनंद हो जाता है और मन के दुर्विचार नष्ट हो जाते हैं। कामनाएँ शांत हो जाती है तब मुक्ति प्राप्त हो जाती है और मन में कठोर त्याग की भावना जागृत होती है। संसार की सारी काननाओं को नष्ट करता हुआ जो सुमरण से प्रीत करता है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि निजनाम में लगा रहे माया द सकाम भाव सभी का त्याग किये हुए रहे तो ही पुरूष गुरु महाराज रामचरणजी की धाम को प्राप्त

कर सकते हैं। वह जो धाम अर्थात् स्थान है वहाँ की जो महिमा है वह उसमें आने से भी प्राप्त होती है। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि यह वार्ता सत्य कह रहा हूँ कि धर्म व कर्म को नष्ट कर देते हैं। धर्म और कर्मों को नष्ट करके डरता हुआ भगवान का भजन करे। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि इनसे अपार आनंद प्राप्त होता है क्योंकि और साधनों से परे जो रामजी महाराज हैं वे प्राप्त हो जाते हैं। परमात्मा का जब भजन करते हैं तो गुरूदेव में जो गुण हैं वे सभी आ जाते हैं। सभी प्राणी मात्र में रमण करने वाले रामजी प्रसन्न होते हैं। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि संतो की कृपा से जितनी गलत धर्म थे वह सब छूट गई। जो भी कष्ट थे वे समाप्त हो गये और हृदय के अंदर उत्तम लक्षण आ गये और विधाता ने ऐसी बुद्धि दी कि गुरूरामचरणजी महाराज के चरण स्पर्श करते ही देव बुद्धि प्राप्त होकर शांति प्राप्त की शांति प्राप्त हुई, आनंद प्राप्त हो गया और संतों की धाम है उसे भी प्राप्त कर लिया। ये सभी कार्य गुरूमहाराज रामचरणजी के प्रताप से हुये और उन्हीं की कृपा से मोक्ष को भी प्राप्त कर लिया। जो राम नाम में सदैव लगे रहे वो मुक्ति धाम को प्राप्त हो गये। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि केवल भजन ही करना अपना कर्तव्य समझकर अहर्निश उसी में प्रवृत्त रहते हैं।।३६। भजन से कभी भी मन नहीं हटाते हुए सज्जन पुरूषों से मेल रखते हैं वे गुरूरामचरणजी महाराज के प्रताप से मोक्ष में आनंद प्राप्त करते हैं। आनंद के घर में प्रसन्नता के साथ रहते हुए पति एक परमात्मा को स्वीकार करो, परन्तु यहां तो गुरु रामचरणजी महाराज प्रकट में ही मिल गए जिन्होंने सभी काम सही कर दिये।

साखी सुमरण

संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं और जितने भी कर्म हैं वे सभी नष्ट हो जाते हैं क्योंकि गुरूदेव भजन करने की युक्ति बताने वाले हैं कि कैसे भजन किया जाता है सुमरण की सिद्धि प्राप्त करने के लिये बारंबार भजन करते रहो। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि बारंबार नवीन प्रेम प्रगट करते हुये राम नाम का सुमरण करो और मन के जितने भी कष्ट हैं उनको दूर करते हुये सबका सार है भगवन्नाम का सुमरण करो। चार वेदों का रहस्य देकर जितने भी विकार हैं उन्हें दूर करता है, जितनी भी संसार की चंचलताएँ हैं वह मिट जाती हैं, सारभूत सुमरण है करते रहे। सुमरण जैसा सार दूसरा कोई भी नहीं इसके बराबर नहीं हैं और त्रिलोकी में भी दूसरा धर्म नहीं है वह रामचरणजी महाराज ने प्रदान किया। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि मैं उनके चरणों में नमस्कार करता हूँ। नित्य नमस्कार गुरूदेव के चरणों में और सभी प्राणी मात्र में विचरण करने वाले रामजी महाराज को भी बारंबार नमस्कार हैं, संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि संतों की शरण में गुरूरामचरणजी महाराज के द्वारा बताई गई भजन पद्धति को करो। जो माया से दूर है, परम पिता रामजी महाराज हैं उनके नाम का सुमरण सही ढंग से करो, रामचरणजी महाराज के चरणों में स्नेह करते हुए संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि रामजी का भजन करो। भजन के बराबर दूसरा कोई भी साधन नहीं हैं। वेद पुराण सब खोज लिये

जोरामचरणजी महाराज ने दिया है, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि उसका ध्यान करो। धन्य है गुरू रामचरणजी महाराज को, जिन्होंने सारभूत रामनाम बक्षीस किया, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं की उस राम नाम में सभी का सार आ गया। सुमरण करने से सभी का उद्धार हो गया और ज्यादा से ज्यादा उनका यश फैला जो यश अनंत कोटिसंत महापुरुष अच्छी जगह पहुँच गये; संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि भजन करने का विचार करो। संत कान्हडदासजी महाराज स्वयं के लिये कहते हैं कि मैं भजन की भावना को नहीं जानता था और सार-असार मे भी नहीं समझता था, परन्तु गुरू रामचरणजी महाराज के चरणों का स्पर्श करने से ही ऐसा विचार प्राप्त किया। और गुरू महाराज ने अलग अलग तरह से समझाया, मुझे परमात्मा की तरफ लगाने के लिये। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं गुरुरामचरण जी महाराज के ऊपर त्रिलोकी न्यौछावर कर दूँ। सारी पृथ्वी, मोती, हीरे, लाल से थाल भरकर गुरू रामचरणजी महाराज जो की धन्य हैं, दयालू हैं उनकी पूजा करे तो भी पूजा नहीं हो सकती है। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि परमात्मा से भी ज्यादा जीव गुरूदेव के कर्जे से कभी भी निवृत्त नहीं हो सकता है। क्योंकि उन्होंने सब सिद्धियाँ रामनाम के अंदर बतायी। पत्थर की प्रतिमा का व पारस मणि की चाहे जितनी भी पूजा करलो और खूब धन भर भर के बिचार कर लो परंतु फिर भी गुरू की पूजा तो नहीं हो सकती है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मैंने बिचार करके देखलिया। मोतीयो का थाल भरकर कर के भाई न्यौछावर करो तो भी गुरूदेव की पूजा तो नहीं हुई चाहे कोई भी करके देखलो। जिन्होंने राम नाम रूपी निधि प्रदान की, अनेक सिद्धि प्राप्त करने के लिए; संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि मैं उनकी शरण मे पड़ा हुआ हूँ; धन्य हैं मेरे गुरू रामचरणजी महाराज। जब सत्य के सहित अपने को समर्पित करते हैं तभी पूजा होती है उस में तनमन धन सब न्यौछावर करते हैं, बिना सत्यता के तो पूजा होती ही नहीं है, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि बिना सांच के भगवान के दरबार में पूजा नहीं होती है। सांच से ही सुमरण की सब सिद्धि गुरूदेव को समर्पित करो हे भाई! क्योंकि सुमरण की सिद्धि गुरूदेव के द्वारा ही तो प्राप्त की है, उसके बराबर कोई भी हीरा नहीं है। संत महात्मा ही भगवान् से मिलाने का साधन हैं, उन्होंने राममंत्र समझा दिया। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि रात दिन सुमरण करने से किसी भी प्रकार के कोई भी कर्म अशुभ उत्पन्न नहीं होंगे। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि गुरू रामचरणजी महाराज के चरणों को हृदय में धारण करते हुए सुमरण सुरती निरती को एकाग्रह करते हुए श्वांस आते व जाते सदा सर्वदा भजन करो। सार जो श्वांस है उनको सिद्ध करवाया और सुमरण की विधि बतादी और जो गुरूजी का रहस्यमय जो ग्यान है वह प्राप्त कर लिया और जो सुर साधने की क्रिया थी वह मुझे प्रदान की; हृदय के अन्दर परमात्मा का ध्यान करवाया। ग्यान का जो रूप है वह सरलता एवं भगवान के चरणों का ध्यान संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि धन्य हैं रामजी महाराज जिन्होंने हृदय के अंदर भारी प्रकाश किया। जो आत्मा के आधार हैं उन परमात्मा ने प्रकाश किया। संसार में व भक्तो मे प्रसिद्ध होते

समय नहीं लगता है। कुछ भी समय नहीं लगता है और जो दंभ है वह नष्ट हो जाता है। इसलिये पल पल मे लगन लगाते हुए गाते रहो रामजी के नाम को।

साखी विनती

संत कान्हड़दासजी महाराज कहते है कि हे रामजी महाराज मेरी आपसे वीनती है कि मेरी प्रीति लगन आपके नाम मे ही लगाइये , नाम के बिना मुझे शांति नहीं है क्योंकि आपके नाम से जो प्रपंच है वे मिट जाते है। जो कुछ भी करने वाले है सब कुछ रामजी महाराज ही है इसलिये उनसे ही प्रार्थना करो, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते है कि तभी चौरासी की फांसी कटेगी। फांसी भी कट जायेगी और आनंद भी प्राप्त हो जावेगा और कर्मों की जो जाल है वह भी नष्ट हो जावेगी। इसीलिये मैं रामजी से प्रार्थना करता हूँ कि रामजी ही जीवन के रक्षक हैं। रक्षा करने वाले रामजी महाराज है इसीलिये आठों प्रहर अर्ज करता हूँ। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते है कि मै तो आपका ही दास हूँ, हे प्रभु! आप मुझे अपना नाम प्रदान कीजिये। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मुझे और किसी का भी सहारा नहीं है और मेरे हृदय अर्थात् मन में भी और कोई नहीं है, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे अपने चरणों मे रखो। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि राम जी के जो भक्त संत है, उनसे हाथ जोड कर प्रार्थना करता हूँ कि आपके बिना मेरी प्रार्थना कौन सुनेगा ? मैंने खूब दौड़ लगाकर देख लिया। अब तो दौड़ मेरी आपके चरणों तक ही है और जितनी भी दौड थी मिटा दी। इसलिए संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि आप दयाकर के मुझे अपने चरणों में लीजिये। मेरा लक्ष्य भगवन् आप ही हो; आप चतुर हो, जानते हो, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि आपके अतिरिक्त मुझे कौंन रखने को तैयार है? मान रखने के लिये संसार मे अन्य कोई नहीं। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि हे रामजी! मान सम्मान व दृढ़ता तो आप ही रखेंगे, क्योकि आप से सब सहज है, मेरे ऊपर आप कृपा करो और मेरे मन में जो अहंकार, घमंड है वह सब छूट जाये। मान, बडाई और ईर्ष्या मन मे जो अहं क्षुद्रता है, उन्हे रामजी आप सब छुडा दीजिये। संत कान्हड़दासजी महाराज प्रार्थना करते हैं। हे रामजी! आप मेरी पुकार सुनले, संसार के प्रपंचों का परित्याग करूँ; संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि कि माया आदि विघ्नों का दाग नहीं लगे। हे रामजी आप मन के तमाम दागों को नष्टकरो और दरिद्रता को भी नष्ट करो और लोभ व कामवासना के प्रति भी मन मे ग्लानी हो ऐसा संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं। हे रामजी महाराज तन व मन की वासना आप नष्ट करो। और विषयेन्द्रिय के द्वारा कलंक रहित रहूँ ऐसा प्रसाद आप मुझे प्रदान करें। जो प्रसाद संसार में क्या त्रिलोकी मे भी प्रसिद्ध है जिसे वेद पुराण भी गाते हैं वह प्रसाद आप मुझे खिलाना, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मेरे मन में आनंद हो जाये आप ऐसी कृपा कीजिये। मुझे स्वर्ग, नरक व शरीर के सुख भोग ये कुछ भी नहीं चाहिए। आशिर्वाद व दुराशीस आदि भी उत्पन्न नहीं हो बस, मेरे तो मन का व शरीर का दुःख दूर करो। मैंने कृत्रिम वेश बनाया है आपसे मिलने के लिये किन्तु आप तो कैसे मिलेंगे कारण कि

मैं अवगुणों का पिंजरा हूँ। रोम रोम में अवगुण भरे हुए हैं, हे कृपालु आप दयालु हैं कृपा करके मेरे मनको आपके चरणों में डालिये। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि राम जी महाराज ही रक्षा करने वाले हैं। काल को नष्ट करके जीवको बचाते हैं। जब मेरे ऊपर कृपा होगी तब ही सुखों को देने वाले परमात्मा को प्राप्त कर लूँगा। परमात्मा में यह जीव क्षण भर के लिये भी नहीं लगता है, यह तो अनेक प्रपंचों में लगा रहता है, उदासीनता मन से दूर होती ही नहीं है, रात दिन मस्ती करता रहता है। मस्ती के अंदर अनेक प्रकार के वचन बोलता है, कपट झटप खूब करता है, किससे गिनती की जाती है, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मन तो चंचल हो गया भगवान् के बिना समेटा नहीं जा सकता है। मन तो इस सृष्टि के अंदर मिल रहा है, जो किसी को भी नजर नहीं आता है, वह तो इसे अच्छा नहीं लगता है, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मन तो बहुत चंचल है बुरा है भगवान् तथा गुरूदेव की शिक्षा को नष्ट कर देता है। गुरूदेव की शिक्षा को तो सुनता ही नहीं है और भगवान् का भजन इसे अच्छा ही नहीं लगता है, रात दिन उपालंभ लाने में ही लगा हुआ है बुरे कार्यों की शिकायत ही लाता रहता है और माया के अंदर यह शरीर मस्त हो रहा है। शरीर से वचन से, मन से, गुरूदेव के ग्यान से बिलकुल भी संबंध नहीं रखता है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मैं आप से यही प्रार्थना करता हूँ कि यह मन कितना शैतान है। जो सत्य है उससे तो प्रेम करता नहीं है और जो कच्ची बनावट है उससे प्रेम करता है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि हे रामजी मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि यह कैसा नाच नचाता है। अनेक प्रकार के नाच नचाता है जो सही वार्ता है उसको तो बिल्कुल ही नहीं ग्रहण करता है, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मैं प्रार्थना क्या करूँ? इस मन के तो विचार ही अनेकों हैं जिसका वारा पार ही नहीं है। बिचार तो बहुत है परतु गुरूदेव का ग्यान तो चला गया और परमात्मा में मन लगा हुआ है ही नहीं, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि यह चंचल मन तो इतना बुरा है कि यह तो खोटे मार्ग पर चलाने वाला है। यह मन भजन सुमरण से तो हार गया, उसमें तो रति मात्र भी शूरबीरता नहीं है, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि यह चंचल मन तो इतना बुरा है कि रतिमात्र भी शूरबीर का जोश नहीं है। अनेक कर्मों में रूचि रखता है तब फिर मन सार बात को क्यों नहीं पकड़ता है; संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि इस छोटे से मन से कोई भी छिपा हुआ वातावरण नहीं है। बातों के वजन को तराजू में तोल लो, और मन का जो वैभव है उसे बिचार लो तो कभी भी स्थिरता नहीं रहेगी, चाहे पृथ्वी के स्वर्ग से पाताल तक भ्रमण कर लो। स्वर्गवासी लोग ब्रह्म के पद में समा जाते हैं, गुरूदेव संतों एवं रामजी की कृपा से संत कान्हड़दासजी महाराज कहते है कि मैं उन संतों को नमस्कार करता हूँ जिन्होंने सभी प्रकार के दुःखों को नष्ट कर दिया है। आप मेरे दुःखों को नष्ट करो आप मेरे मनोगत भावों को जानते हैं आप के सिवाय कौन मुझे लौकिक प्रपंचों से बचा सकता है?। हे गरीबों पर दया करने वाले दयालू, आप काल के जोधा कहे जाते हो उसे मिटा देना। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मेरे ऊपर आप कृपा करो जिससे कि मेरे सभी कार्य सुधर जावे।

विरह का अंग-

संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि आप मेरे ऊपर कृपा करो जैसे भी सुधरे वैसे ही करना विरहनी की दशा को आप जानते ही है क्योंकि आप रोम रोम के रक्षक हो। । रक्षा करने वाले रक्षक, जलती हुई जो विरहकी आग है उससे आप तो विहरनी को सुख प्रदान कीजिये, उसके मन में आप के दर्शन करने की इच्छा है। मेरा मन और किसी दूसरे कार्य करने से मानता नहीं है, विरहनी तो केवल आप के दर्शन के लिये दुःखी है। इसीलिये यह एकमात्र आपके चरणों में प्रीति कर रही है। प्रीति तो पति परमात्मा से लगी है इसलिये इसने संसार की वार्ता का परित्याग कर दिया है। गरीबों पर दया करने वाले आप दया करो और दर्शन दीजिये जैसे पूँगी की आवाज सुनकर पाताल लोक से सर्प आ जाता है। वह सर्प जो पाताल लोक से आ जाता है उसकी राग पर प्रीति है, इसीलिये ऐसे ही आप भी विरही को दर्शन दीजिये तभी मैं भाग्यशाली बनूंगा। जैसे महंतजी के बिना सभा बेकार लगती है, नमक के बिना साग फिका लगता है, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि इसी तरह से आपके दर्शन के बिना मेरे मन के दाग मिटेंगे नहीं। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि जितने भी कष्ट हैं वे सब तभी नष्ट होते हैं जब आप के दर्शन हो गये और आप प्रसन्न भी हो गये तथा पतिरूप रामजी महाराज मिल गये। परमात्मा रूपी पति मिल गए तो सभी सुख प्राप्त हो गए और जितने भी पाप कर्म थे सब समाप्त हो गये, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि इस वार्ता से बड़ा आनंद हुआ, उसके बाद पृथ्वी पर जन्म कभी नहीं लेता है।

आप के बिना दर्शन के मनमें प्रसन्नता नहीं है। हे रामजी महाराज! विरहनी होती है और कहती है कि मेरी आवाज सुनेगें। विरहनी आवाज लगाती है, अपने मालिक के निमित्त रात दिन बिना दर्शन किये मन में खुशी नहीं है, संसार की सभी बातें उसे झूठी लगती है। संसार के सारे सुख उसे अच्छे नही लगते हैं और न वह शरीर को सुखों के सम्हाल अर्थात् चाहना करती है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि हे रामजी आप मेरे ऊपर कृपा करो, हे दयालू! मुझे दर्शन दीजिये। हे दयालु! आप मेरे ऊपर दया करके दर्शन तो दो, मेरे मनमें जो प्यास है उसे तो मिटाओ। विरहनी आपके दर्शन की प्यासी है परन्तु जब आप दर्शन नहीं देते हो तब मन में कुछ और ही विचार आते हैं। और मेरी जोर की आवाज को कौन सुनेगा, किससे मैं अपनी पुकार सुनाऊँ, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि बाझपने से अपने शरीर को नष्ट करता हूँ या हे सृष्टि के रचने वाले रामजी आप मुझ दर्शन दीजिये। मेरे कलेजे के अंदर बड़ा भयकर दर्द हो रहा है, शरीर में विरहाग्नि धधक रही है और मन में उदासी है आपके बिना दर्शन के मन खुशनहीं है। इस तरह से संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मुझ दास की आपके दर्शन करने की आशा की चाह बहुत ज्यादा है आप आशा को पूर्ण करने वाले हो, मैं आपके दर्शन के बिना प्यासा हूँ, सुबह और सायं दर्शन की पिपासा लगी रहती है। प्रातः-सायं आठों प्रहर दर्शन करने की आदत पड़ी हुई है संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि अब क्षण क्षण भी मन नहीं लगता है। मैंने यह कार्य करके देख

लिया। विशेष करके यह आदत एक रामजी की है विषयों का व माया का तो त्याग है तो हे रामजी! अब आप क्यूँ नहीं प्रगट होते हो? आपके बिना मेरी तो कहीं भी लगन नहीं है। लगन है तो एक रामचरणजी महाराज के चरणों मे है और उनके दर्शण करने की मन में इच्छा है परन्तु बिरहनी तो जंगल जंगल में भ्रमण करती है। वह नित्य नया भाव जागृत करती है। जब गुरूदेव ने सत्य बचन कहे तभी से भावना जागृत हुई और संशय नष्ट हो गये। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि शब्द की साधना करने से हृदय में शांति उत्पन्न हुई। मन में शांति हुई और प्रकाश हुआ, पाप नष्ट हो गये शरीर पवित्र हो गया, संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि दातार गुरूदेव मिल गये, कल्याणकारी गुरूदेव के बारे जो सुना था वह सही है। जो भी साखी सुनी उसे हृदय के अंदर उतारा और उस पर विचार किया कि प्राणी मात्र में रमण करने वाले राम को पद संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि शरीर की व मन की अशांति को त्यागते हुऐ रामजी के नाम को प्राप्त करके प्रसन्न रहिये। प्राणी मात्र में विचरण करने वाले रामजी के नाम की पिपासा है वह रात दिन जप करती है, उसको पुत्र, स्त्रि, माया व शरीर आदि कुछ भी अच्छे नहीं लगते हैं। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि मैंने विषय भोग, माया, कानों को आनद देने वाले सभी विषयों का परित्याग कर दिया और वैराग्य का वेश पहन लिया परन्तु आपके दर्शन से वंचित हूँ तो बताओ मेरी लाज कैसे रहेगी। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि आप मेरी लाज रखो, आनंद प्रदान करो और अपने दर्शन मुझे दो तभी मेरा सारा कार्य सिद्ध होगा, जब परमात्मा प्रसन्न हों तब। हे रामजी महाराज आपके नाम का रटन एवं विश्वास रखते हुए विरही रोता है, हेरामजी आप पास में प्रगट हो जिससे मेरा सभी संकट दूर हो जावे। संकट दूर होने, हृदय के अंदर आनंद जागृत होवे। ऐसी कृपा हे दयालु आप करो तब कहीं बिरहनी के जन्म मरण के दुःख दूर होंगे। यह जो संकट है, दुःख है वह मिटे, आपके दर्शन देने से दयालु आपके बिना मैं गले में आनंद की जो माला है गले में नहीं पहरूं। आनंद की जो माला है वह तो संसारिक जाल से दूर है और मैं तो आपकी शरण में पड़ा हुआ हूँ। इसलिये मेरी लाज तो आपको ही है, बिरहनी के सर्व दुःखों का इलाज ऐसा कौन करे। हे रामजी इसका इलाज एवं मेरी लज्जा सब आपके हाथ है क्योंकि दूसरा ऐसा कोई वेद नहीं है, आप बडे दातार हो, मुझे दर्शन दीजिये जिससे मन जो इधर उधर भटक रहा है, वह अंकुश में हो जावे। हे दीन दयालु मैं अपने हृदय के बीच में हे प्रीतम! परीक्षा करके देखूँ क्योंकि मेरा मन नहीं मानता है क्योंकि ब्रह्माजी के द्वारा यह खेल रचा हुआ है। मन यदि तमाशे के पीछे लग गया कि कहां है परमात्मा के दर्शन तो संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि आप मेरे हृदय के अंदर ही प्रगट हो जावो, जिससे सारा अंधकार जो अज्ञानमय है वो सब नष्ट हो जावेगा। हे रामजी महाराज! यह जीव अंधेरा युक्त जंगल में रात्रि में पड़ा हुआ है आपके बिना दर्शन के जो संसार के निर्मात्ता रामजी महाराज हैं वे सम्हालेंगे, वे ही मालिक हैं॥ बिरहनी के मन में बड़ी उमंग है, आप के दर्शन करने की, पहले वालों ने जो दर्शन किये वही होड मेरे मन में भी है। देखा देखी के हिसाब से कब परमात्मा मुझे प्राप्त होते हैं और विरहनी को दर्शन देकर हेरामजी! आप मुझे अपने हृदय से

लगाओ, हे रामजी महाराज! आप मेरे पति हो। संसार में होने से तो मुझ स्त्रि को डर लगा परन्तु आप के दर्शन पाकर मैं तो इस संसार सागर से पार हो गई। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मुझ पर जब आपने कृपा की तो बस स्त्रि ऐसे ही सुख प्राप्त करती है।

साखी लेका अंग

लगन तब लगती है जबकि हम विनती करें और लगन के बिना नमस्कार भी नहीं किया जाता है, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि लगन लग जाने से भक्त सुख में रामा जाता है। बडे पुरुष सुख में समा जाते हैं तन मन से बिकार निकाल दे। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि लगन लग जाने से कर्म व भर्म सब जल गऐ। कर्म और भर्म सब जल गए और सर्वव्यापक रामजी में लग जाए; संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि तब जिस आनंद का विनास नहीं होता है वह आनंद उन्हें प्राप्त हो जाता है। जिनकी लगन रामजी के नाम से लग गई। लगन में जो डर था वह दूर कर दिया और रजोगुण भी चला गया। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि लगन के लग जाने से तमो गुण को भी पूठ दे दी है। पूठ फेरी तो कर्म भी डर गए, सुरती बढिया धन को लूट रही है, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि आनंद हो गया यह लगन लगने का आनंद है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि भजन से जो लगन लगी वह छूटी ही नहीं; ज्यादा से ज्यादा लगन लगी तब सभी कर्मो से रहित हो गए और सुक्ष्म से सुक्ष्म पद को प्राप्त कर लिया। लगन का जो रास्ता है वह सुक्ष्म है जब लगन लगती है तभी दिखती है वह रास्ता और कोई दूसरा मनुष्य नहीं पहुँच सकता है, यह वार्ता संत व वेद सभी बताते हैं। वेद बताते हैं, भेद देकर के और भी दूसरे भक्त भी कहते हैं, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि इसीलिये लगन का रास्ता देख लो। बडे पुरुषो के मार्ग को देख लो ओर उनके भाग्य को भी देख लो, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि कि जिस पद में वे गए उनका बड़ा सम्मान है। जब परमात्मा से लगन लग जाती है तब सम्मान होता है, ममता, अहंकार, स्नेह का जब अंत हो जाता है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि लगन लगायो जिससे जागोगे और पति परमात्मा से मिलोगे। जाग करके संसार के मालिक का सुमरण करो, रात दिन लगन लगा करके संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि कि बांझपन व भर्म सब नष्ट हो जाऐगे। बजा बजा कर लगन लगाओ। जो सर्वव्यापी रामजी के प्रेमी हों तो जितने भी कर्म हैं वह सब चले जाएँगे और संतो के साथ निवास करोगे। युक्ति से और जो चरम चक्षुओं की नजर है उसे छोडो। बाह्य दृष्टि का त्याग करते हुए रामजी का भजन करो। आठों प्रहर की लगन लगा करके संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि उनका जो खेल है, वे जुग जुग में सहायता करते हैं। उन सर्व व्यापक रामजी महाराज की सत्ता है, वह लगन के बीच में आकर प्रगट हो जाती है। लगन के बिना रामजी मिलते नहीं है। संत कान्हड़दासजी महाराज ने यह बात कही है। संत कान्हड़दासजी महाराज ने यह बात चेतावनी देकर कही है, चित्त को लगन मे लगाकर रखो अपने पति के मिलने का रास्ता यही है, परन्तु बहुत बारीक से बारीक है। जो झरोखा है वह ब्रह्म तेज से जगमगाता है,

वह ज्योति अपार है, उसका कोई पार नहीं वह दिव्य है, जहां पर पत्नि रूपी सुरता पति रूप परमात्मा से मिलती है। कर्मों के भंडार है वह नष्ट हो जाते है। जो प्रीतम है पति उनको पहचान लो पहले भी थे उनका कभी अंत होता नहीं है। राजा का पति के रूप मे पहचानने से ज्यादा आनंद हुआ। पूरन रूप से सुहागिन तो वह हुई जिसने पति को पहचान लिया और जिसने पति को नहीं पहचाना उसके बाहर की जो खोटी आदत है वह नहीं मिलती है।

साखी प्रेम प्रकाश-

परमात्मा के प्रति सच्चा प्रेम मन से हो परन्तु मंदभागी संसारी जीव है, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि संसार के निर्माता रामजी का सदैव ही मन से व मजबूती से प्रेम करना चाहिये। संसारी जीव कला से व कला निर्माता से प्रेम करते हैं परन्तु कला का परित्याग करे तब यह जीवात्मा मुक्ति के मध्य जावेगा। बिना प्रेम के सीधे मोक्ष के दरवाजे पर नहीं पहुँचेगा। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि सभी प्रपचों को छोड़ेगा तब प्रेम का सागर उमड़ेगा। जब प्रेम का भंडार भरता है तब आनंद प्राप्त करता है जब प्रेम के प्रति विचार भी हो, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि तब बांझपन नष्ट हो जाता है और अच्छी भावना जागृत होती है। परमात्मा के प्रति स्नेह की भावना होती है तो स्नेह के प्रति विश्वास बढ़ता है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि जब प्रेम मे मस्त हो जाते हैं तो जो भी गलत वार्ता थी वह छोड़ दी। बिड़द तो विधाता के जो स्वामी है उनका है और जो दूसरे हैं अर्थात् आन देवी देवता उन सबका त्याग प्रीति पूर्वक स्नेह बढ़ाता है। दृढ़तापूर्वक एक के मत में लगे हुए हैं। संतों का जो चलना है जिस रास्ते पर उसी को हृदय में धारण किया है उसी से संसार के जीवों का उद्धार हो गया, संकट से बच गये। नियम पूर्वक व नम्रता युक्त तथा प्रेम युक्त सज्जन पुरूष इस आचरण को जीवन में महत्व देते हैं। चारों वर्णों के आचार विचार को देखकर उपदेश प्रदान किया, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि उसके द्वारा जिसका कभी विनाश नहीं हो ऐसा आनंद शिष्य सुखदेवजी ने तथा शेषजी ने प्राप्त किया। हे रामजी महाराज! आप यह प्रेम निभा देना एवं नियम और सभी कोई संत भी सुन लेना क्योंकि बिना प्रेम के तो कोई भी खुश नहीं होता है। चाहे वह मनुष्य हो या समुद्र में शयन करने वाले भगवान्। सारे संसार में भगवान् प्रेम के ही अधीन होते हैं। और यह तो परंपरा ही है। दुर्योधन के गहां जब श्रीकृष्ण शान्तिदूत बनकर गये तब दुर्योधन ने भोजन छप्पन प्रकार का बनवाया परन्तु उसके मन में प्रेम नहीं था। भगवान् श्रीकृष्ण उसके यहा भोजन न करके प्रेमी भक्त विदुर के यहां प्रसाद प्राप्तकर तृप्त हुए। विदुरजी ने भगवान् के बिना किसी दूसरे को अपना समझा ही नहीं था। इसीलिये उनके यहां केले के छिलके खाये और दुर्योधन के छप्पन पकवान छोड दिये। शबरी ने रामचन्द्रजी को प्रेम से अपने झूठे बेर खिलाये। भगवान् दो बार तृप्त हुए यह वार्ता शास्त्र आवाज देकर कहते हैं। अपनी अपनी सामाजिक मर्यादा के अनुसार सभी भोजन करते हैं परन्तु दोनो भोजन कोई और ही है जिस भोजन को भगवान् ने ग्रहण किया है। वह प्रेम रस से परिपूर्ण था। बिना प्रेम के परमात्मा

प्रसाद नहीं पाते हैं। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं वो आनंदकर्त्ता है। भक्तों का हितकारी है, इसीलिये उसे भक्त वत्सल कहा जाता है। जिन के मन के अंदर प्रेम है नियम है,वही गुरु और साधु जनों का एकमात्र आराध्य है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं आनंद करो और जिस पद का कोई वारा पार नहीं है ऐसे पद को प्राप्त करो। विश्वास के साथ प्रीति करो परन्तु मन व मर्यादा दोनों मिले। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि भय रहित होने पर आनंद प्राप्त होता है और सारे अपराध छूट जाते हैं।

परमात्मारूपी पति को प्रीति के कारण ही पहचाना जाता है। परंपरानुसार नीति का मन में विचार करते हुए संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि भक्तों की कृपा से जितने भी दुःख दारिद्र हैं, वे सब चले जायेंगे। दुःख दारिद्र सब नष्ट हो जाते हैं, जब मनके अंदर पति की पहचान जम जाती है, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि ऐसी कला उत्पन्न करो जिससे पति परमात्मा खुश हो जावें। अपनी आदत को छोड़कर परमात्मा रूपी पति को पहचान लिया, मन के जितने भी विचार हैं उनको नष्ट करते हुए इस तरह से पहचान करो, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि तभी परमात्मा खुश होते हैं परमात्मा रूपी पति से प्रेम करो और आठों प्रहर मन में प्रकाश रखो, तभी परमात्मा रूपी पति को प्राप्त करोगे। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं दास भाव का अभ्यास करके भावना जागृत करो उससे पति के व्यवहार को पहचानो, इस तरह उदासीन वृत्ति से रहते हुए मन के पवित्र विचार से चोटी से लेकर नख तक शरीर के सुखों को नष्ट कर दो। जितनी भी झूठी वार्ताएँ हैं उनको दूर रखते हुए रात दिन रामजी के नाम का रसास्वादन करें, एक पति रामजी की दृढ़तापूर्वक पत्नि बनकर स्त्री की तरह दृढ़ रहे। चित्त को तो आनंद देने वाले परमात्मा हैं, उनमें रखते हुए उनकी सेवा का रहस्य सारभूत समझकर के पतिरूप परमात्मा स्नेह द्वारा पहचाने जाए तो सत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि वो सुरता स्त्री धन्य है। परमात्मा रूपी पति में लग जाऐ ज्यादा से ज्यादा पवित्र चाल से और अपनी वृत्ति का परित्याग करते हुए पति रूपी परमात्मा को पहचानों। मनके तमाम प्रपंचों का परित्याग करते हुए। खेती की पैदावारी करने में जो जग गऐ वह संसारी स्त्री है और जो मन के विचारों को नष्ट कर दिया वे संसार को जीत गये हैं। जो जीत गए वे भक्त प्रेम के जोर से और वे इस संसार के कीचड़ में फंसे नहीं, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि वह आनंद करो और मन को छोटा कर के जीतो। प्रेम और नियम रामजी के नाम का रखते हुए और जितने भी दूसरे हैं उनका त्याग करो, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि जितने भी पाप कर्म हैं वे सब दूर हो जाऐंगे और परमात्मा के घर आदर होगा।

संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि सुरता रूपी स्त्री की सारी विपदा नष्ट हो गई और सुख मे जाकर समा गई और आनंद ही आनंद हो गया जब ब्रह्मानंद के सुख में दौड़कर पहुँच गई। संतों भक्तों ने जो भजन के चार स्थान कायम किये, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि वहाँ पहुँचने पर शरीर अमर हो जाता है। जिह्वा, हृदय, नाभि, इन तीनों में आवाज रकार और मकार के साथ होती है पर जब चौथी चौकी

पर तीन को उलधकर जाता है तब मकार मिट जाता है और ररंकार ही अकेला चढ़ गया है। ररंकार शब्द ही स्थिर रहता है ममा तो माया का स्थान है, सत कान्हड़दासजी महाराज कहते है कि जब पूरण पद को प्राप्त कर लेते है तब सारे झझट समाप्त हो जाते है। रामजी का नाम स्मरण करने से काम चला गया और जो शसय का दुःख था वह भी मिट गया, सत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि जब रामचरणजी महाराज की कृपा हुई तब निहाल हो गया। मेरे को दयालु ने निहाल कर दिया। राम के नाम की पहचान कर रामनाम दे दिया, सत कान्हडदासजी महाराज कहते है कि रसना के द्वारा जब राम राम का सुमरण किया तो जो भी दुःख थे वे सब मिट गये। जो भी वासना थी वह सब चली गई अब यमराज की मार नहीं रही, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि आनद हो गया, क्योंकि गुरु रामचरणजी महाराज ने भेद बता दिया। अब आनद हो गया और जो डर था वह चला गया क्योंकि अब संतों का साथ मिल गया। संतों की अच्छी कृपा हो गई जिसका कोई वारा पार ही नहीं है। हे रामजी! संतों आपकी कृपा का कोई भी वारा पार नहीं है और दुःख का जो भडार था वह नष्ट हो गया, सत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि अब तू आनद कर और सतो के बीच जाकर मिलजा। अब दोनो जने मिलकर परस्पर में खूब आनंद करो, रात दिन रामजी का ध्यान करो। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि हे रामजी! हे आनंद स्वरूप आप मेरे ऊपर कृपा करो। आपका जो लोक है वह पृथ्वी से अतिरिक्त है, जब आपका नाम लेते हैं तभी कार्य सुधरता है। सत कान्हडदासजी महाराज कहते है कि जब अमर पद का राज मिलता है तब आनद होता है। उस राज्य क राज मे तो सब बढ़िया वार्ता है पर दूसरा राज छोड़ने से वह पद प्राप्त होता है। सत कान्हडदासजी महाराज कहते है कि जब रामजी की कृपा होती है, तभी रामजी मे समा जाते हैं। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि सृष्टिकर्ता रामजी का सुमरण करते हुए उनके पति श्रद्धा और सतोष होना चाहिये। इस प्रकार की व्यवस्था होने से जो भक्तो का स्थान है वह परम धाम को प्राप्त हो जाता है। इच्छाओं से रहित सब इकट्ठा किया हुआ धन का भी फैलाव नहीं करे। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि तभी संत मिलते हैं उस पूरण राम शब्द के बीच में। सृष्टि में प्रसिद्धि होती है, लोभ व काम के नष्ट होने पर लेकिन मन की वासना का नहीं कहता हूँ क्योंकि वह तो आठो प्रहर प्रपंच में लगी है। जिस में यह रस है उसका त्याग करे। और जितने भी गुण आदि हैं उनको जीत लेवें। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि तभी समझो कि परमात्मा में स्नेह है। जो शब्द प्रगट हैं उसका स्मरण करने से भक्त भूमंडल में प्रसिद्ध हो गये। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि वहाँ कितने ही चले गये और जन्म मरण मे नहीं आऐ। जो कभी जन्म मरण मे नहीं आते हैं, चौरासी लाख योनियों मे भक्त नहीं जाते है। सतगुरू देव ने कृपा की। दो तरफ की मंजूरी हो गई, सुरतारूपी पत्नि ने बहुत प्रसन्नता मनायी। हे पति परमात्मा आप स्त्री के हृदय रूपी घर मे पधार कर हे मालिक आपने अनेक सुख प्रदान किये। परमात्मा ने सुंदरी को सम्हाल करके पलंग का सुख दिया। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि मेरा मन भी आपके चरणों मे लग गया तो मनके सभी विचार मिट गये।

न तो चिंता रही न विचार और ओछापन था वह भी मिट गया अच्छे बुरे जो भी दुःख थे वे सभी चले गये जब पूरण पद मे मन लगा। जब लगन लग गई तब चिंता दूर हो गई और रामजी के रंग मे सुरति रंग गई। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि जिसका कभी नाश नहीं होता है तब बहुत ज्यादा आनंद होता है। जिसका कभी भी विनास नहीं होता है ऐसे पुरूष के साथ में उसी के रंग में रंग गई। सुरति कितनी बार कच्ची हो गई परन्तु धन्य है आपको कि आप ररंकारी पुरुष हो, अजन्मा हो।

साखी पतिब्रता-

पुरुष तो केवल रकार शब्द ही है, मकार जो है वह पत्नि रूप है, सो पति के साथ है, गुरुदेव ने लग्न लगा दी। पत्नि तो पति की लाडली है इसलिये पति अपनी पत्नि को खूब लाड लडाते हैं। संसार के प्रति जो प्रीति है उसका परित्याग करने वाला ही परमात्मा का भजन करता है। जीवात्मा परमात्मा का सुमरण करते हुए पतिब्रत धर्म को धारण करके राम भजन करें। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि जितनी भी तकलीफे हैं वे सब मिट जाती हैं और मुक्ति का स्थान प्राप्त हो जाता है। पतिब्रत धर्म के पालन करने से परमात्मा का धाम प्राप्त कर लेता है और जो नकली बने हुए उनका परित्याग करें। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि एक परमात्मा के बिना पति दूसरा नहीं माने। पति संसार के बनाने वाले रामजी महाराज नहीं है। सब में श्रेष्ठ मुकुट मणि व सर्वव्यापक हैं। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि बिना पति के लज्जा कोई भी नहीं रखता है। दृढ होकर के राम राम कहे। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि वह पतिब्रता स्त्री आठों प्रहर सुख का उपभोग करती है। पतिब्रत की भावना में लगी हुई स्त्री को और दूसरी बात अच्छी नहीं लगती है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि उसे चतुराई आदि भी अच्छी नहीं लगती है। अपने मन को चतुराई आदि में नहीं लगाते हुए अपना जो पति है उनकी सेवा में लगी रहे, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि तभी वह परम पुरुष परमात्मा प्रसन्न होता है। रामजी के नाम का सुमिरण रातदिन करती रहे, पतिब्रत को धारण किये हुए विश्वास सहित। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि वह व्यभिचार को तो गलत मान रही है। व्यभिचार को गलत समझती है , क्योंकि पति के बिना किस काम की स्त्री है, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि वह इसको गलत समझती है, ममता तो एक रामजी महाराज में होना चाहिये। पति स्त्री के प्रति ममता करता हुआ उसे अपना लेता है, विश्वास करके और पतिब्रता भी पति का स्नेह प्राप्त करती है और संसार के अंदर कोई सिद्ध हो या असिद्ध हो पतिब्रता उसे तुच्छ मानती है। अनेक प्रकार के लोभ चाहे जितने भी हों उसे कोई देवे पर उसे वह नकली आभूषण अच्छे नहीं लगते हैं, क्योंकि वह पतिब्रता स्त्री है। जो स्त्री पतिब्रत धर्म में सुख मानती है वह स्त्री सबसे अलग है और वह सब में सुख प्राप्त करती है। अपने पति की मर्यादा भी रखती है। अपने पति की मर्यादा रखती हुई और जितनी भी शक्ति है उनका भय नष्ट करते हुए रामजी की जो उन्हे कमी है उसे मिटाती हुई दूसरों से कभी भी नहीं मिलती है। ओर सभी आशाओं का त्याग करती हुई पति जो देवे उसे ही

खाती है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते है कि उस स्त्री का जीवन धन्य है। इसी तरह से अपनी सुरति को भगवान् मे रखे और अपने पति की दृढ़ता पर रहते हुए अन्य देवी देवताओ की आराधना का त्याग करो। तभी संत कान्हड़दासजी महाराज कहते है कि महाराज कहते है कि जितने भी संकट है वे सब नष्ट हो जाते है। इसलिये समुद्र मे शयन करने वाले परमात्मा का भजन कर लो। जो पति के प्राणधार है जिन्होने इस सारे संसारको रचा है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते है कि जब रामजी का भजन करो और पतिव्रत धर्म विश्वास के साथ धारण करो। पतिव्रत धर्म एक ही है, व्यभिचार के लिये किसी ने भी नहीं कहा है वेद पुराण आदि शास्त्रों को देख लो, संतों की वाणियों को पढ लो। इस संसार समुद्र में जो भी संत भक्त पार हुए वे सब परमात्मा के पतिव्रत धर्म को धारण करके हुए और जिनकी वृत्ति चंचल हो गई, व्यभिचार प्रवृत्ति से कोई भी पार नहीं हुये। त्रेता, द्वापर और कलियुग में भी कई प्रमाण है जिन्होंने रामजी का नाम लिया उनका कल्याण हुआ है। वैकुण्ठ लोक में संत पतिव्रत धर्म के जोर से ही जाते हैं, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि वहां पर व्यभिचारी लोगों का जोर नहीं चलता है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते है कि व्यभिचारी स्त्री बिना समझ के बिना अकल के जोर जनाती है पर उसके शरीर के अंग हैं वे बिना काम के हैं व रूप भी किसी काम का नहीं है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि उस व्यभिचारी स्त्री का रूप भी बेकार है वह तो जैसे कोई बहुरुपिया मेकप करता है वैसा उसका रूप व सांग है जैसे ऊँट की ऊन का वस्त्र बिछाने का व ओढने का बनाया है, किन्तु उसको कोई पहरे धोती की जगह तो उस की लाग शोभा नहीं देती वैसे ही उस स्त्री का शरीर आदि शोभा नहीं देता है। उस ऊँट की ऊन की धोती पहनने से लज्जा नहीं रहती है। धोती किस काम की है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि ऐसे ही वह व्यभिचारी स्त्री है वह भी लज्जित करती है घर को। मकान, जमीन, परिवार वह सब व्यर्थ है। व्यभिचारी के साथ में संत कान्हड़दासजी महाराज कहते है कि व्यभिचारी स्त्री खोटी बुद्धि वाले के रंग मे रंग गई। खोटी वार्ता में तो बहुत आगे होती है और पतिव्रत धर्म में तो मन को मारना पड़ता है, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि यह वार्ता कैसे निभे क्योंकि सटल पटल है, वह स्त्री। जिसके मन के अंदर पति के प्रति निष्ठा नहीं है वह स्त्री कपटी है। और शर्म रहित है इसलिये उसकी संगत नहीं करो। उसे तो नर्क स्वर्ग का भय नहीं रहा। और मनमें बहुत ज्यादा अभिमान भरा हुआ है उसे ले रखा है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि उस स्त्री के पतथर की पूँछ गुप्त रूप से लगी हुई है। और जो पतिव्रता

व्यभिचारिणी। एक गाँव है उसमें राजा भी रहता है और उसी में गरीब भी देखो ऐसे ही पतिव्रता और व्यभिचारिणी इन दोनों में फर्क है विशेषता है। राजा राजी हो जावे तो सब कुछ जो इच्छा करो वह मिल जाता है परन्तु जो गरीब राजी हो जावे तो किया मिले। ऐसे ही व्यभिचारी स्त्री व पतिव्रता स्त्री को समझो। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि व्यभिचारिणी स्त्री तो दूसरों के घरों में जाती है फिरती रहती है। वह व्यभिचारिणी स्त्री बिगड़ी हुई है, यह बात सत्य कह रहा हूँ। वह बिगड़ी स्त्री इधर उधर सिर देती फिरती है। जहां मन मानें वहीं चली जाती है। सर्वव्यापी परमात्मा राम का भजन तो नहीं करती और अन्य देवी देवताओं के गीत गाती है। प्रसन्न हो करके। अपने पति से लड़ते भिड़ते हुए रति मात्र भी शर्म मूल में नहीं करती है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि यह बात मैं सत्य कह रहा हूँ कि उस व्यभिचारी के मुँह पर धूल दो। जो स्त्री अपने पति से प्रेम नहीं करती है उसको विज्ञ लोग फटकारते हैं क्योंकि व्यभिचारी स्त्री तो बहुत बिगड़ी हुई है, इसलिये पति भी उसकी सार संभाल नहीं करेगा। खोटी स्त्री की न तो कोई सार संभाल होती है न उसे कोई बढ़िया सुख मिलता है, सदा सर्वदा दुःख ही दुः ख होता है, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि उसे सुख इसलिये नहीं है कि उसने अपने पति को खुश नहीं किया है। प्रीतिपूर्वक पति का स्पर्श नहीं किया और अन्य पुरुषों से ही प्रेम किया, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि उसका जितना भी श्रृंगार है वह सब झूठा है। जैसे संसार में पति के द्वारा दिया हुआ श्रृंगार अंगारे के समान हैं ओर यार पुरुषों का उस पर जोर है ऐसे ही शरीर तो परमात्मा ने बनायाहै, उसी का श्रृंगार रूप सारी देह की आकृति आदि है परन्तु उसका सम्मान नहीं करे तो शरीर आदि की क्या किम्मत है, सब व्यर्थ है आनंदेव रूपी यार पुरुषों का जोर है तो संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि उसका धर्म ध्यान की तरफ जो मन था वो हट गया। पर पुरुषों ने उसे थोड़ा सा भी कुछ दे दिया उसे तो वह बहुत करके मानती है और पति ने जो कुछ भी दिया उसे थोड़ा करके मानती है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि उस स्त्री के जैसे पति का भाव नहीं है वैसे ही प्राणी अन्य देवी देवताओं की भावना रखने वाले हैं। उसका भी परमात्मा में भाव नहीं रहता है। जो अनादि काल का रास्ता है उस का तो परित्याग करता है और अन्य देवी देवताओं का सम्मान करता है। उन स्त्रीयों के भाग्य छोटे हैं क्षण भरके लिये भी उनको सुख नहीं है। मोक्ष का तो उस ने त्याग ही कर दिया मनुष्य देह जैसा रत्न प्राप्त करके जो नपुंसक है उनकी ग्राही की को प्राप्त करके पति की मर्यादा मंदभागी ने त्याग दिया।

साखी समर्थ का अंग-

अपने सभी अपराधों को नष्ट कर दें, विपदा को नष्ट कर दे उसी नाम का सुमरण करें। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि उसी मालिक की शरण में हूँ, वे सब तरह से समर्थ हैं, सभी कार्यों को सिद्ध करते हैं। सभी कार्यों को सिद्ध करते हुए सभी कर्मों को भी दूर कर देते हैं वे समर्थ हैं। सारे विश्व का निर्माता व संहार वही करते हैं, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि रामजी का नाम युक्तिपूर्वक जपो,

पल पल बारम्बार सुमिरण करो। उस परमात्मा से थोड़ा सा प्रेम कर लो क्योंकि वह प्यारा है सृष्टि के सृजन हार का जप करते समय संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि सदा सर्वदा एक रस रहो। वह समर्थ है और वे उद्धार भी करते हैं जो उलझे हुए को सुलझा भी देता है। मनुष्य, स्त्री, क्या देवता, संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि उस समर्थ का जप करो और निर्भय होकर सेवा करो। नकल अकल लगाने से कुछ भी फर्क नहीं होता है आप तो सम्भल करके समर्थ का जप करो, संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि मन में से गाफिलता दूर करो। अविश्वास को दूर करते हुए ईश्वर से प्रीति लगावो क्योंकि समर्थ स्वामी की भी राय है अविश्वास को हटा दो। समर्थ पति का ध्यान करो, क्योंकि वह राई को पर्वत कर देता है और पहाड को राई के समान कर देता है। वह श्रेष्ट हैं, शिरोमणि हैं, रामजी महाराज भक्त के मन में भावना उत्पन्न करके अपनत्व प्रदान करते हैं। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि समर्थ का आश्रय लो। वो सहायता भी करते हैं, सभी दुःखों को भी दूर भी करते हैं। तू व्यर्थ में ही भयभीत हो रहा है। पहले भी अनेक संत भक्त तिरगऐं, केवल रामजी के नाम का सुमरण करने से। ओ मानव! तूं केवल रामजी के नाम का भजन कर अन्य सारे पक्षपात को अर्थात् अन्य देवी देवताओं को छोडकर ऋषियों के वचनों को धारण करो। और मन की सभी वासनाओं को, कामनाओं को नष्ट कर दे, मन से निकाल दे। जो काल में दुष्काल में भरण पोषण करता है,उस समर्थ की साधना कर और जिसने माता के गर्भ में रक्षा की उसी समर्थ की आराधना करो। उस समर्थ की आराधना करो जिसके द्वारा ज्यादा से ज्यादा हित होगा। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मन में विचार करते हुए समर्थ रामजी महाराज को याद करो। उस समर्थ से सभी कार्य सहज में हो जाते हैं। उसे कार्य करने में समय नहीं लगता है। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि किसी का भी सहारा नहीं है उसका वह सहारा है हरि और वह पल में ही उद्धार कर देता है। अपने जन्म का उद्धार करने वाला है, विषय-विकार हैं जरा सा भी अंधकार है उसे भी वह दूर कर देता है। वह समर्थ पति सारे ब्रह्माण्ड का रचयिता है। जो उनका दास है उनका कल्याण कर देते हैं, वे समर्थ हैं, गरीबों के ऊपर दया करने वाले हैं। भक्त वत्सल हैं। अपनी स्थिति में चलने वाले की प्रतिपालना अर्थात् उसके भरण पोषण का प्रबंध वह करता है, उस समर्थ के सब हाथ में है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि यह पहले भी अपने भक्तों की सारी व्यवस्था करते थे। खाने पीने आदि की सारी व्यवस्था समर्थ करता है भाई! यह औरों के बस की बात नहीं है संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि तुम तो आनंद करो परमात्मा सर्वशक्तिमान हैं। नमस्कार करो उस पति रामजी को जो कि अपने भक्तों का दुःख मेट देता है, संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि समर्थ के बिना कोई भी कार्य सिद्ध नहीं होता है। ठेठका ठिकाणा तो ब्रह्म का ही घर है, समर्थ की दया जो प्राप्त हो जावे तो गुरू व समर्थ रामजी महाराज हैं। वे भय रहित पदको प्रान्त करा देते हैं। माता के गर्भ के अंदर जब थे उस समय कैसी मन में चिंता थी वैसी रखो बाहर भी समर्थ रामजी महाराज हैं, उनसे सब कुछ हो सकता है बाकी और दूसरों से कुछ भी नहीं हो सकता है। तूँ तो उन समर्थ रामजी

महाराज का व्रत ग्रहण करके उसी से सब कुछ हो जायेगा। अन्य जितने भी समर्थ हो उन सबसे नाराज हो करके रहो। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते है कि जब कठिन समय आयेगा तब तो ये सभी गायब हो जायेगे क्योंकि ये आन देवी देवता है। बिना समर्थ के कोई भी कष्ट दूर नहीं करेगे। जो संसार के प्रपंचो मे लगे हुये है। वे संसार मे उलझ जाते है। परन्तु समर्थ के बिना जन्म मरण का दुःख नहीं मिट सकता है। श्रद्धा रखते हुए समर्थ का भजन करो, पंच इन्द्रियों को वश मे करते हुए संत कान्हड़दासजी महाराज कहते है कि रामजी महाराज को निष्कामना की भावना रखते हुए प्रसन्न करो।

कवित्त गुरुदेव–

छः ऋतुएँ हमेशा उस दयालु की है व बारह महिने एक रस रहते है, जितने भी शरीर विराजमान है उसमे कार्य करुणा का समय है, परमात्मा को खुश करते है माया को दूर करके उद्धार कर देते है। लोभ मोह को दूर व नष्ट करते हुए जिनके मन मे न तो द्वेष है न स्वार्थ है उत्तम जिनमे लक्षण है। तथा राम रस का रसास्वादन किये हुए है, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते है कि ऐसे गुरू महाराज रामचरणजी है उनकी वंदना करो। गुरू रामचरणजी महाराज का ध्यान करते ही परम पद का आभास हो जाता है। और राम नाम की लगन लग जाती है। इस तरह की वार्ता संत ही कर सकते हैं औरो से हो नहीं सकती है। धन्य है ऐसे दीन दयालु को जो कि सभी कर्मों को दूर भगा देते हैं। संसार के कीचड में फंसने नहीं देते हैं और भगवान् की भक्ति देते हैं। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि जितने भी सकट थे वे सब दूर कर दिए और इस जीव ने संत की सम्प्रदाय प्राप्त कर ली अर्थात् मैं रामस्नेही हो गया। श्रीरामानुजाचार्यजी महाराज हुए जिन्होने यह संप्रदाय चलायी। कलियुग के सभी कलंकों को मिटाकर संतदासजी महाराज प्रकट हुए। रामचरणजी महाराज हमारे गुरुदेव हैं जिन्होने रामजी को याद कराया, डर और भर्म कर्म को नष्ट करते हुए सही रास्ते पर चलाया। संत कान्हडदासजी महाराज कहते है कि ये संत धन्य है शिरोमणी है जिन्हाने मुझे निहाल कर दिया। गुरूदेव ने निहाल करके अच्छी युक्ति बतायी। तनमन से झगड़ा करके रामजी की भक्ति बता दी। शीलव्रत जैसा धर्म श्रेष्ठ बताकर सावधान कर दिया, जगा दिया और अज्ञान मिटा करके भय रहित वहा पद दे दिया। जब संतों का कहना माना और उनके अनुरूप कार्य किया तब संसार का रास्ता था वह त्याग दिया। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि जब उनकी कृपा हो गई तो सभी अच्छे कार्य सहज मे ही सिद्ध हो गये।

हे गुरुदेव आप धन्य हो! दयालू हो, सब के लिए ही शिष्य के कष्टों को देखकर आपको दया आ गई। आपने पर्दा हटा करके और आपने दर्शन दिया। आपकी महिमा कहने में ही नहीं आती है। आपका आदि अंत कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। वेद पुराण सभी कहकर सुनाते हैं। और भी अनेको ऋषियों ने भी यहां कहा है। सिद्ध संतो ने मुनियों ने भी यही बताया है। जिन्होंने गुरूदेव का रहस्य प्राप्त कर लिया है वे सभी पार हो गये। संसार सागर से। बिना गुरू कृपा के तो बड़ा ही कठिन है। गुरुदेव जो गुप्त भेद था वो

दिखा दिया। मैं तो गुरु महाराज रामचरणजी की बारंबार बलिहारी जाता हूँ। जिन्होंने ताजा मंत्र देकर तृप्त कर दिया। यह मूर्ति पृथ्वी मंडल पर बहुत सुंदर प्रगट हुई। जिन्होंने हम जैसे पापियों को भी अपनी शरण में ले लिया। और संसार सागर में डूबते हुए का हाथ पकड लिया। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि इनकी शरण ग्रहण की और गुरु रामचरणजी महाराज के चरणों को हृदय में धारण किया। गुरुदेव की चरण शरण बडे सुखों की देने वाली है। बडे-बडे पुरुषों ने हे भाई यह वार्ता सही कही है। गुरुदेव के वचनों को मानकर कुल की शर्म को त्याग दिया। उनका उद्धार हो गया। वे ज्ञानी पुरुष सुधर गये। जो बात गुरुदेव ने कही यह श्रेष्ठ है। क्योंकि गुरुदेव ने मंत्र तंत्रों में से सार था वह साधन कर के दिया। जिसे वेद व ब्रह्मा गाते हैं। रामजी का सुमरण करने से मुख मंडल पर तेज चढता है और राम राम रटते हुए कर्म जल जाते हैं। राम का नाम लेने से काया पवित्र हो जाती है। कलियुग के सब मेल नष्ट हो जाते हैं और उसे सारे संसार ने जाना है। रामजी व गुरु कि कृपा से श्रेष्ठ सिद्धि पैदा होती है और ब्रह्म में मिल जाते हैं और सभी कर्म नष्ट हो जाते हैं। गुरुदेव ने दया कि वह मुझे मन मे बडी अच्छी लगी। गुरुदेव की कृपा की बात तो कहने मे ही नहीं आती। गुरुरामचरणजी महाराज बडे ही ध्यान करने वाले मिले। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि मेरी जो प्यास थी वह पूर्ण हो गई।

पद संभाग-

सतगुरुदेव ने मेरी प्यास बुझ दी। गुरुदेव ने जो स्वयं की निधि थी वह कह दी। ज्ञान का सुन्दर मार्ग दिखा दिया। जो कृपणता थी वह नष्ट हो गई और देवताओं की सी गति प्रदान कर दी। जो डर था वह दूर करके सारंग धनुष को हाथ में धारण करने वाले का जाप कराया। केवल नकल करके व्यर्थ की कल्पना करते हैं। अरे भगवान् के घर की तो धारणा है वह सब बता दी। आप स्वयं भी तैरते हैं और जो भी शरण में आते हैं उनको भी तैराते हैं और च्यार जो खान हैं अर्थात् चौरासी लक्ष योनियों से उद्धार कर देते हैं। इस पृथ्वी पर यह तो धर्म की मूर्ति अवतरी है। गुरु रामचरणजी महाराज के चरणों का ओ प्राणी भजन कर। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि प्राण परम पद को प्राप्त होंगे जो ज्ञान से भी परे हैं। बहुत से संत परम ज्ञानवान हुए। संतों की शिक्षा को हृदय के अंदर जिन्होंने भी धारण किया जितने भी कर्म किये उन सभी का त्याग करके सुभ लक्षणों से युक्त हुए। गुरुदेव के ज्ञान से पूर्व जितने भी कुलक्षण थे वे सब चले गये। इस मनुष्य देह की परीक्षा करके ज्यादा ही पाप बढे। अरे इस मनुष्य तन को प्राप्त करने कि इच्छा तो ब्रह्माजी के भी मन में होती है। यह मनुष्य देह बहुत कठिन से मिलता है। जब गुरुदेव मिलते हैं तब ही यह धन मिलता है। जब रामजी प्रसन्न होते हैं। तब भक्तवत्सल कहलाते हैं। और जब भगवान् के भक्त मिलते हैं तब ही सुमिरन का पट खुलता है। और तब ही जीव परमात्मा की तरफ बुद्धि को लगाता है। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि हृदय में सुमरण करो।

ओ मानव! जाग करके सुमरण करो। बिना सुरण किये इस बने हुए सारे खेल में क्यों पच रहा है। एक क्षण भी बिना सुमिरण के व्यर्थ नहीं खो। सुमिरण से सिद्धि मिल जायेगी। वेद शास्त्र सभी यही युक्ति बताते हैं। गुरूदेव व जो भी जानकार है वो सभी यही कहते हैं। यह संसार युक्ति नहीं जानता है यह तो केवल संशय के बस हो रहा है। कलाओं से रहित और अपने कार्य से भी रहित मूर्ख हैं, इसने मनुष्य देह ऐसे ही खो दिया। गुरूदेव ऊंची युक्ति बताते हैं। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि कृपा हुई उससे रक्षा हो गई। गुरूदेव तेरी रक्षा करेंगे। संसार समुद्र की धार में नहीं बहेगा। क्योंकि तुझे मालिक बहुत बडे मिल गए हैं। जिन्होंने सब बुरे कर्मो को निकाल दिया। पवित्र, सत्य, संतोष, शीलव्रत, आदि देकर पालन किया और जितने भी दुःख थे वे सब निकाल दिये। जत्त में मत्त में और अपने विचारों में मजबूत देखकर मन की कृपणता का त्याग कर जिससे तेरी मनसा तृप्त हो जावे, अरे संतों की क्या बड़ाई है। अरे उन्होंने तो अनुभव वाणी कह दी और अच्छी दिखादी। सदगुरू के शब्दों में नम्रता है, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मैं तो रामचरणजी महाराज की शरण में हूँ। क्योंकि जिन्होंने मेरे कष्टों को दूर किया जिन्होंने मंत्रो में सिरताज मंत्र राम नाम प्रदान किया। जिसमें सब प्रकार की सिद्धि आ गई। साधना व आराधना सिखायी और उन्होंने हृदय के अंदर नफा दिखा दिया। जो बाहर के खेल हैं उनमें अपने मन को नहीं लगावे और जो भी मन में बुरी भावना है उसको दूर करो। जिह्वा से रामजी का भजन करे और शरीर को काबू में करे तथा राम राम का जप करे, और बड़ाई का त्याग करे। खटरस भोजन का त्याग करे और पाँचों इन्द्रियों के सुखों का भी त्याग करे। एक रस सत्यता का पालन करे। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मेरा मन उनके चरणों में लगा है जिन्होंने अच्छी युक्ति बता दी। संत गुरूदेव अब ऐसे नहीं बनाते हैं। जितने भी नीच कर्म हैं उन्हें दूर करते हैं। भक्ति के रास्ते पर जितने भी बुरे कर्म हैं उन्हें दूर करते हुए स्नेह देकर भक्तिरूपी खेती पैदा करते हैं। गुरूदेव पवित्र मार्ग के जानकार हैं जो उनका दास होता है वही उस रास्ते का भेद प्राप्त करता है। गुरूदेव ब्रह्म के पद का हृदय के अंदर परिचय दिखाते हुए ब्रह्म का पद प्राप्त करा देते हैं और अहंकार को दूर कर देते हैं और मन को अच्छे संग मेंलगा देते हैं और शरीर को रात दिन तपाते हैं। अर्थात् कसौटी देते हैं। और जहाँ जाते हैं वहाँ से पुनः नहीं आते हैं। बहुत ही कृपा दिखाते हैं। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि सभी दुःखों को दूर करते हैं ऐसी बात केवल गुरूदवे से ही बन आती हैं।

जब कृपा हुई तब समर्थ ने बुद्धिप्रदान की। शान्ति देने वाले संत मिले, हमारे हृदय के कपट खुल गए, राम राम रटने लगे। रामजी का नाम लेते हुए सभी काम सिद्ध हो गए और जो अशान्ति थी व कामनायें थी वह सब समाप्त हो गई। असली धर्म धारण किया और नकली का त्याग किया, कर्मो को भी नष्ट किया। भगवान् अनुरूप स्वरूप बना देते हैं और जो पवित्र धर्म है वह देकर जीवन रूपी नौका को चला करके संसार रूपी नदी से पार कर देते हैं। इसलिये संतों के बिना कहीं भी सुख शान्ति नहीं प्राप्त होती है। भगवान् से मिलने का तरीका भी संतों के द्वारा ही मनुष्य सही रूप में पाता है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि

भगवान् के मिलने की प्यास भी सन्तों के संग में ही अच्छी लगती है। सन्तों के संग में भगवान् का रंग पक्का लगता है और कच्चा रंग जो है वह मिट जाता है। सन्तों की महिमा तो कहने में आती ही नहीं है जब परमात्मारूपी पति की शरण में जब जीव आता है तो अनंत विघ्न शांत हो जाते हैं। ओ भाई! ऐसे सज्जन और कहीं भी नहीं है तुम कहीं भी ढूँढकर के देख लो। स्वयं वेदों ने भी कहा कि आप सत् रूप है इनकी शरण भी मुक्ति को देने वाली है। सन्तों के बिना रामजी कहाँ है ऐसा विष्णु पुराण ने कहा है। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि मेरे ऊपर राजाधिराज महाराज रामचरणजी गुरुदेव की कृपा हुई है मैं बिना समझ का जीव था उसे समझ देकर कल्याण का पथ बता दिया। गुरुदेव रामचरणजी महाराज ने भक्ति बात करके बतादी जिनसे यह जीव उऋण नहीं हो सकता है। मैं क्या भेंट चढ़ाऊ। मेरे हृदय में सद्बुद्धि और पवित्र भाव भर दिये। आप जैसे तो आप ही हो, स्वामीजी आकर मुझे अपार धन प्रदान किया जिसका कोई अंत ही नहीं है। कलियुग में जो दुख था आपने उसे मिटाकर संतोष आदि का भेद प्रदान किया। सब सिद्धि एवं सिद्धियों को प्राप्त करके सेवा करूँ तब भी हे गुरुदेव मैं आपके ऋण से उऋण कभी भी नहीं हो सकता हूँ। हे गुरुदेव आपसे क्या नहीं बन सकता है आप सब कुछ कर सकते हो, मैं क्या कहूँ ऐसी बात। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि मुझे दर्शन देकर आपने अपना सानिध्य प्रदान कर दिया। पास में लेकर भेद बताया है, सतगुरु देव आप ने अपनी शरण में लेकर राम मंत्र दिया जिसके अंदर सारी सिद्धियां भरी हुई है। काम, धर्म अर्थ, मोक्ष प्रदान करते हुए सब सिद्धियाँ दी। उत्तम लक्षण भी अपार दिये, प्रशंसा एवं सभ्यता की प्रभुता दी। यह बंधन है, यह मोक्ष है इस रास्ते का भेद बताते हुए जिन्होंने सभी संशय मिटा दिये। एक ही चरणों की अचल सेवा कर यह बात स्वामीजी ने बतायी। संतों की महिमा कहने में नहीं आती है। गुरु रामचरण जी महाराज की चरण शरण में संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि मैंने सभी सुख प्राप्त किये हैं।

अरे मनुष्य तू सावधान होकर सुमिरण कर ले और मनुष्य जन्म को सुधार ले। यह देह बार–बार नहीं प्राप्त होगी, अब यह समय तुम्हारा है। इस मनुष्य देह को देवता लोग भी चाहते हैं और तो और ब्रह्मा भी इस देह को प्राप्त करना चाहते हैं, विचार करो। अरे ब्रह्मा तो बहुत ही सदा इसे प्राप्त करने की आशा लग रही है। फिर भी नहीं मिल रही है, क्योंकि वह मुश्किल से मिलती है। यह देह, यह मनुष्य देह तुझे प्राप्त हुआ है तो फिर इस रत्न को क्यों खो रहा है, इस अमुल्य देह को सभी देवताओं के ऊपर इस शरीर को कहा गया है। इस बार तुझे मिला है। सावधान होकर के चलो और भगवान् से प्रीति करो, रात दिन एक जैसी संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि मैं तुम्हें सावधान कर रहा हूँ। यह मनुष्य देह तुम्हें उधार मांगने पर भी नहीं मिलेगी। मनुष्य देह रूपी यह रत्न बड़ी कठिनाई से मिला है, यह अर्थ गुरुदेव ने बताया है। अब भजन करके अपना कार्य सभी सिद्ध कर ले देरी मत कर। माया के द्वारा रचित खेल में मत भूल सभी कार्यों का शिरोमणि परमात्मा है। भजन के बीच में विघ्न डालने वाली माया है। जिसमें से मन को निकाल

दो। सभी प्राणी से मन को हटाकर संसार का निर्माण पालन एवं जो संहार करने वाले हैं उनको याद करो। यह शिक्षा गुरुदेव देते हैं दया करके उसको एक क्षणभर के लिये भी मत भूलो। सब विकारों से विमुक्त होकर पवित्र होते हुए जितने भी कर्म हैं। उनका अंत करते हुए भगवान् का व्यापार करो। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मैंने इसका अभ्यास किया है यही बात मैं कहता हूँ कि हे प्रिय सत्संगीयो भगवान नाम का रस चखो। परमात्मा से अपने मालिक से प्रीति करो, एक क्षण भर विलंब कभी मत करो। आठों प्रहर जब तक शरीर है तब तक भजन करो। यह धर्म बिना पक्षपात का है। यह नाम पवित्र है इस के उच्चारण करने से मल दूर हो जाते हैं। हर समय याद करते रहो और मानवा रसना के द्वारा और तृष्णा व विषय वासना को दूर करते हुए। जिससे यमराज का भय कभी भी नहीं लगेगा। प्रेम को मन में धारण करो। पहले भी कितने ही जनों का उद्धार हो गया और अभी भी हो जायेगा और तेरा भी कल्याण हो जायेगा। और जितने भी प्रपंच है उन सब को छोड़कर परमात्मा के नाम का सुमिरण करो और मन में जो भी गलत विचार है उन्हें निकाल दो। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि भले संत वे ही हैं जो परमपदगत का मार्ग बताते हैं। अनादि काल का जो रास्ता है कि पति परमात्मारामजी का भजन करना और मन के सभी प्रपंचों का परित्याग करना। न तो प्रपंचों में फंसना और न प्रपंच करना और मन को राम राम में लगाओ।

लगन लगाकर लोभी होकर के जैसे नदी समुद्र में आकर मिलती है। वह किसी के द्वारा रोकी नहीं जा सकती है। उसके मन में तो समुद्र से मिलने की रहती है। जिस तरह से बाजीगर का खेल करने वाला नट खेल दिखाता है। परन्तु वह खेल करते हुए हारता नहीं है। उसने अपनी सुरति व निरति को उस खेल में लगा दी है। नीचे का जितना भी पसारा है उससे उसने मन हटा लिया है। इसी तरह से भक्त भी भगवान के नाम का सुमरण करेगा तो जितने कर्मों का भार है वह सब नष्ट हो जायेगा। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि जितने भी कष्ट है वे सब दूर करते हुए बिना ही परिश्रम के उद्धार हो जायेगा।

मन लगाकर के रामजी का भजन करो, वह अवश्य ही तुम्हे पार करेंगे। भजन का भेद जिह्वा के द्वारा करने की युक्ति संतों ने बताई। कार्य करो परन्तु अहंकार का परित्याग करो और धर्म को सदैव धारण करो और जो आलस्य करते हैं उन से तो यह कार्य हो नहीं सकता। एक क्षण के लिये भी, भाई! धर्म का और धन का साधन पूरा रखते हुए जो नियम लिया है उसे रटते रहो। एक क्षण भर के लिए भी उसे छोड़ो नहीं क्योंकि गुरुदेव ने समझा कर कहा है। उन संतों के चरणों में पड़ो जिनके मन के अंदर परम शांति है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि इस तरह का अभ्यास करो जिससे यह पैदा हो जायेगी। रामजी के नाम का विचार करने से हृदय में यह बात पैदा होती है कि प्रपंच त्यागों। जो संत है धर्म को धारण कराते हैं और मन के जितने भी विचार हैं उन सभी को अलग कर देते हैं। मन के जितने भी मैल है सब को दूर करके रसना से नाम का उच्चारण करो। प्रातः सायं आठों प्रहर कभी भी भूलो मत यह धारा चलती रहे। जितने भी बुरे कार्य हैं। उनका त्याग करते हुए सत्य के नियम को धारण करो। मान, बड़ाई, ईर्ष्या आदि दुर्गुणों को

बिल्कुल भी मन में नहीं रखें जिन संतों ने बहुत कठिन कमाई भजन की है। उनकी विचार धारा ऊँची है। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि सदा पृथ्वी पर भजन जिन जिनका हो रहा है भाई सभी महिमा धन्य है जिन्होंने अपने शरीर का उद्धार कर लिया उनकी महिमा पृथ्वी पर बढ़ी है। मनसा, वचसा, कर्मणा जिन्होंने धन का त्याग किया और जो भजन में लग गये और एक रामजी के नाम को ही गाया है। आनंद रूपी अर्थ जिन्होंने प्राप्त किया और बुरे व्यसनों का जिन्होंने त्याग किया है। अपने शरीर को जिन्होंने कष्ट देकर मनन और तन के मन के सभी सुखों को हटा दिया। मन को पवित्र कर लिया भजन करके और मन के सभी विकार हटा दिये। धीरे-धीरे हृदय में उतारा अर्थात् धारण किया। हृदय में उतार करके जितने भी गलत कार्य थे उनका परित्याग किया और जितने भी खोटे धर्म थे उनको भी भगाया। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि हृदय रूपी जमीन बिल्कुल ही बेकार थी उसे गुरुदेव ने श्रेष्ठ बना दिया। कर्मों को नष्ट करके श्रेष्ठ बना दिया और जो खराब जमीन थी वो त्याग दी। अब गुरुदेव से नहीं बनता है अच्छा किया। धनवान बना दिया अच्छा किया जो खोटी बुद्धि थी वो नष्ट कर दी और संशय भी दूर कर दिया और महिमा बढ़ा दी, कर्मों को नष्ट कर दिया। मेरे मन में यह बात अच्छी लगी। अनेक संतों की साक्षी बताई जिन्होंने कर्मों की और बिना कर्मों की वार्ता को झूठा बताया। मन और मनसा की सबको तपा करके संतों की व भगवान् की शरण में आ गए। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि पहले संतों की कृपा हुई बाद में भगवान् की हुई।

यह संसार समुद्र तो पार होने में बड़ी भारी कठिनाई है और मुझे तो बहुत ही कठिन लग रहा है आप की कृपा बिना पार होना असाध्य है। संसार सागर की ताप अर्थात् कष्ट बहुत हैं इसका दुःख कितने ही बार सहन किया है जन्म मरण में कितनी ही बार आया और गया, प्राण मेरे पराधीन हैं। मन बहुत ही आकुल व्याकुल हुआ कितनी बार तो मैं हसा कितनी बार रोया इस बार आप मेरे इस दुःख को मेट दो और आपकी भक्ति बना दो। जो भी इस संसार समुद्र से पार हो गए उन्हें ज्ञान का सहारा था। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि श्वास जब है तब तक उन्हें सफल कर लें। सतगुरूदेव ने हृदय में प्रकाश कर दिया। सब भाग गए, कर्म सब एक तरफ हो गए और संत जो भी जानते हैं वे बता दिया। रास्ते में जो भी प्रकट में पाप थे उनको दूर किया और संसार सागर से पार होने के लिये धर्म का प्रचार किया। जो भी उसके अंदर आए वे सभी सिद्ध हुए और अज्ञान को दूर किया। सभी सिद्धि और निद्धि का आश्रय परमात्मा ही है आत्मा का सहारा है। वे ही जतन करते हैं, पालते हैं, पोषण करते हैं और भूख को भी दूर कर रहे हैं हमारी। इसलिये अब तू उसके नाम का जाप कर ले जिसके द्वारा यह सारा फैलाव किया हुआ है। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि वह दया का भंडार है वे क्षण भर में सुखी कर देते हैं। सतगुरूदेव एक क्षण में ही पवित्र कर देते हैं। भगवन् प्राप्ति का मार्ग बहुत कठिनता का है। परन्तु वह दयालू गुरूदेव ने दया कर प्रदान किया। भगवान् के दर्शन कराके जितने भी विघ्न व मैल थे वे सब नष्ट कर दिये और मन परमात्मा में लगा दिया। संतोष व पालन करते हुए वे ज्यादा से ज्यादा भगवान् के रंग में रंग दिया। दूसरे जितने भी रस हैं उन

सब का त्याग करते हुए सत्संग मे लगे। जिससे कर्म व काम नष्ट हो जायेंगे। जब कामनाएँ नष्ट हो गयी तब परमात्मा के भजन की लगन हुई जिससे मन के विकार नष्ट हो जायेंगे। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि सिद्ध पद सतगुरूदेव ने प्रदान किया तब जाकर संत पद को देखा। सतगुरूदेव सभी शुभ सिद्धियों का भंडार भर देते हैं। अपनी मर्यादा मे मन को रखा और जितने भी मनके अंदर विचार थे उन सब को अलग कर दिया। मनके जितने भी दोष थे उन सबको दयालू ने दूर कर दिया। और संतजी ने शान्ति से सब समझाया व बताया और जो तारक मंत्र राम नाम है उसका रात दिन सुमिरण कराते हुए एक क्षण भर के लिए भी उस अमृत की धारा को खंडित नहीं होने दिया। पृथ्वी के सभी सुखों को भुलाकर के परलोक के बीच सुखों को इकट्ठा किया संतों ने। क्योंकि वहाँ के सुखों का वारापार नहीं आता है जैसे समुद्र के जल का वारपार नहीं जाता है। सतगुरूदेव जो भी करना चाहे वे कर लेते हैं, और दूसरों में संत शक्ति का विचार नहीं है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मैं तो महाराज रामचरणजी की बलिहारी जाऊँ और मैं तो उनके गुणों का गायन करूँ क्योंकि उन्होंने उद्धार किया है।

रामजी तो पापियों का उद्धार करने वाले राजा हैं। क्योंकि उन्होंने अनेक पापियों का उद्धार कर दिया है इसीलिये मैं भी संतजी की शरण मे आया हूँ। क्योंकि वे सब के हृदय की बात को जानते हैं अच्छी तथा बुरी। हे स्वामी! आपसे कुछ भी छिपी हुई नहीं है। मेरे हृदय की राई राई आप जानते हो। जिनको आपकी आज्ञा याद नहीं है तो वह कैसे जियेगा क्योंकि आपने उसको पले बांधा है। उसकी गलती तो बहुत है गणना ही नहीं है पति तो आपही कहलाते हो। परन्तु स्त्री का बल चलता नहीं है कुछ भी नहीं चलता है परमात्मा के हाथ उसका सुहाग है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि जिसमें आपकी प्रसन्नता हो उसी तरह से आप रखो, पिता गुरूदेव ने आपको मुझे सुपुर्द कर दिया है। रामजी महाराज ने मेरे ऊपर दया की है मेरे जैसे नीच को पार कर दिया है इस संसार सागर से जिन्हें किसी का भी सहारा नहीं था उनको शरण देकर आपने उनका उद्धार किया। नीच पद को ग्रहण करने से एक जगह स्थिर हो गऐ और जो चंचलता थी वह सब दूर हो गई। जब गुरुदेव मिल गए और गुरु धारण कर लिया तो सद्गति प्राप्त कर ली। हे दया के सागर! आप मेरे मन को आपके चरणों में रखिये, एक क्षण के लिए भी वियोग नहीं होवे और आठों प्रहर लगन लगी रहे व लीन रहे ऐसी कृपा करो भगवान्। आपके और मेरे बीच में पर्दा प्रपंच का फैला है यह सब एक तरफ करो। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि जितने भी दुःख है वह सब दूर करो हे भगवन्! मैं तो गुरुदेव की मूर्ति पर न्यौछावर हूँ। हे रामजी महाराज! मैं तो आप पर न्यौछावर हो जावूँ। आप तो दयालू हो आपने बहुत दया की मैं अपनी एक जिह्वा से क्या वर्णन करके सुनाऊँ हे दयालू! देने वाले आपको आदि अंत कोई भी नहीं प्राप्त कर सकता है। शान्ति देने वाला भी कौंन है जो उसे सुनाऊँ। जहां तहां भी देखो तो सभी लोभी लालची हैं। सभी शरीरों में मैं यह बताऊँ आपके बिना सभी अन्य देव हैं उनको मैं तो अपना सिर नहीं झुकाऊँ। एक नाम ही इस सारी पृथ्वी पर आधार स्वरूप है मैं तो क्षण भर के लिए भी

लूँ तो उसी को लेलूँ। जितने भी चरित्र है उन सबका परित्याग करता हुआ जैसे जमीन माया आदि, मैं तो जो अमर पद है उस रास्ते पर गमन करूँ। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मैं जिस किसी का भी भेद मालुम नहीं उसका अज्ञान रूपी अंधकार को त्याग करा दूँ। हे रामजी! आप माया का जो दुःख है वह सब नष्ट कर दो। आप तो जिसका कोई नहीं उसके आप हो। स्वामी मेरे मन में तो ज्यादा आनंद है प्रसन्नता है। जो भी मनके विचार हैं चिंता है वह सब मिटा दो विपत्ति आदि को भी और अच्छे गुणों के प्रति मन में भावना हो। और शीलव्रत अर्थात् ब्रह्मचर्य की स्थिरता मन में नहीं रहती है और जितने भी बुरे कर्म हैं वह सब दूर करो और हे गुरूदेव! मनुष्य जन्म जो प्राप्त हुआ है उसका आनंद प्रदान करो और संग अच्छा प्रदान करो। रातदिन भगवान् का भजन होता रहे ऐसा आनंद करो। गुरूदेव की कृपा से सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं। मन में जो अहंकार है उसे नष्ट कर दो। महाराज कान्हड़दासजी प्रसन्न हो कर कहते हैं कि हे गुरूदेव अब आप मुझे इस दुस्तर संसार से पार कर दो।

हे महाराज आप अपनी महिमा के अनुरूप प्रतिपालन करो। मैं तो अवगुणी हूँ। मेरे में एक भी गुण नहीं दिखता है और हृदय के अंदर पापों का खेल है। जब से मैंने जन्म लिया तब से ही हे देव मैंने अच्छी सेवा नहीं सम्हाली, कर्म करके आपसे विमुख हो गया हूँ।। जो वस्तु बिगड़ गई उसे सुधार दो। जब डर लगता है तब ही भक्ति को धारण कर लेता हूँ। पर उसमें भी विघ्न आते हैं। आप जो मदद कर दो तो मैं अपने मन को उस रास्ते पर लगाऊँ और पाप रूपी जो जंगल है उन सभी को जला दो। संत कान्हड़दासजी महाराज यह विनती करते हुए कहते हैं कि नीच की संगति का परित्याग करो। हे रामजी महाराज आप नीची संगति को दूर कर दो। हे रामजी! आप से बार बार यही वरदान मांगता हूँ सो आप अपने मन में विचार करो। जो ज्ञान ध्यान आदि से भी रहित हैं उन प्राणियों का संग भी दूर करो। जिनकी पापमय वृत्ति है और उत्तम भावना का जिन्होंने परित्याग कर दिया। ज्यादा सार सम्हाल भी नहीं करते। खोटी गति वाले जिनमें अच्छी बुद्धि तो है ही नहीं और चाल उन्होंने गधे का सी धारण कर रखी है। जिनके हृदय में नहीं मिटने जैसा रोग उत्पन्न हुआ जिन्होंने अपने सिर पर भार खेंच लिया है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि दुष्ट मन हैं संग से बिगाडा होता है। हे रामजी महाराज! जिस के विचार बिगड़े हुए हैं उसका संग बुरा है। भूल करके भी उसका संग मत करो। मन शरीर और वचन से उसका त्याग करो नहीं तो दुःख पाओगे। उनके सहारे का परित्याग करो क्योंकि बहुत ही ज्यादा खोट अपने को नष्ट करता है। और जो महिमा है वह भी सामान्य हो जाती है। अन्य बातों का बांण लगाता हुआ बहुत ही सार बात में नुकसान करता है। अच्छी बात तो उसे सुहाती ही नहीं और व्यर्थ की बातों को कहता है। दूसरों की चुगली निंदा करता है और दूसरों के अवगुण कहता है और दूसरों के मन को हल्का करके दिखाताहै। खोटी बुद्धि को तो बढाता है और सुबुद्धि को घटाता है वह जिसके अंदर है उसको भी छुडा देता है। पापमय रास्ते पर मनुष्य आरूढ हो जाता है। संत कान्हड़दासजी

महाराज कहते हैं कि मैं अनुभव करके कहता हूँ कि यह आनंदरूप राम बहुत मीठा है। रामजी की संगति सकल सिद्धियों की है। जिसका स्पर्श करने से जीव को शांति प्राप्त हो और संसार सागर से पार होने के लिए और उसके लिये तरसता है। दृढ़ता विश्वास और प्रीति को लिये हुए रात दिन रामजी के नाम की जहां पर गर्जना होती हो वहां सभी प्राणी का संग छोड़ स्वामी पूजन और जहां पर प्रसंग रहित के बाजे बाजे।

आपने ज्ञानियों की ओर भी ज्ञान प्रदान किया तब भेद मालूम हुआ और जहां पर सतगुरु देव का शब्द समाया। भाग्य ने कहा कि जीव ने भारी किस्मत प्राप्त कर ली, क्या तो पुरुष और क्या राजा। जितने भी प्राणी पैदा हुए हैं वे सभी परमात्मा में मिल गए ऐसी संगति कहां प्राप्त होगी। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि अभ्यास करो भाई गुरु रामचरणजी महाराज गर्जना करते हैं। ब्रह्म वेला में भजन करो अपने परमात्मा का। दैवता व राक्षस किसी की भी शर्म नहीं करते हुए नामरूपी अमृत का पान करो। जितने भी पाप कर्म हैं वे सभी नष्ट हो जायेंगे और भगवान से प्रीति करो। बुरी वासना का परित्याग करो और सत्यता को ग्रहण करो। जो बुरी आदत है उसका परित्याग करो। स्वयं तिरने वाला दूसरों को भी तिराने वाला है ऐसे नाम का उच्चारण करो। और जो ममता की डोरी है उसे गला दो। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि इतना आनंद होता है कि उसका कोई वार पार नहीं है। हे रामजी आप बहुत बड़े हैं आपकी लीला का कोई वर्णन नहीं कर सकता है और न कहने में आता है। आपकी माया को ध्यान को जीव तब प्राप्त करता है कि जब शरीर को काम मिलता है या फिर युक्ति के द्वारा समझ बढ़ाये। आप हृदय के नैनों को क्यों नहीं खोलते हैं। पहले से ही लेते आए हैं उन्हीं से सर्वज्ञता प्राप्त करो। जिससे तृप्ति प्राप्त कर ली और दुःख दुविधा सब नष्ट हो गए। तथा सुंदर पद प्रदान कर दिया। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि जितने भी दुःख थे वे सब दूर चले गये पूरे मन की सेवा करने से। हे रामजी! जीवन चलाने के लिये माया व मृत्यु ये सब आपके हाथ में है। दूसरों का जोर नहीं चलता है। प्रभु आप अपने हाथ सारा कार्य करते हो। शब्दों के द्वारा मुक्ति का रास्ता बताया रामजी का भजन जो कि प्रसिद्ध है। सतगुरु देवकी शरणागति बड़ी है जहां पर सभी बातों का निर्णय होता है। विश्वास रखो और मालिक को मत भूलो वे सारे विश्व की खबर लेते हैं। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि सुमरण में सारी सिद्धियाँ हैं परन्तु तेरी छोटी सी सृष्टि से तू दुःखित हो जाता है। हे मना तेरी सृष्टि अर्थात् परिवार तो सारा ही उस परमात्मा के भरोसे पर है। तू क्यों दुःखी होता है, कलियुग में आकर के तू तो प्रभु के चरणों में निवास कर। भगवान को अपनी लज्जा अर्थात् शर्म व बड़ाई समर्पित कर दो और मन में दृढ़ता धारण करो सभी दुःखों को तू सहन कर रहा है तो सारे संसार का परित्याग करता हुआ मन को एकरस बना। क्योंकि रामजी के नाम में सभी रिद्धि व सिद्धि घर में निवास करती है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि यह आनंद संतों ने बताया है अब संतोष रूपी धन का प्रकाश करो।

धन्य है संतजन जिन्होंने संसार में शरीर धारण किया और अपना प्रण अर्थात् प्रतिज्ञा को निभाने आये हैं। जिस को कोई भी शरण देने वाला नहीं है उसको शरण देते हैं और सदैव ही रामजी के नाम की इच्छा रखते हैं। वचनो से उपदेश देते हैं और मुक्ति का संकेत देते हैं। वे चाहे घर में रहे या चाहे जंगल में रहे आनंद पूर्वक कहीं भी निवास करते हैं बुरे विचारों को नष्ट करते हुए विचरण करते हैं।

यह शरीर सदा रहने वाला नहीं है इसलिये जो सदा रहने वाला नहीं है तो सदा रहने वाले को ग्रहण करे। जिस से यह देह सुफल अर्थात् सार्थक हो जावे, संत कान्हडदासजी महाराज कहते है कि उसे गावो। गावो तो राम का नाम गावो। जितनी भी खोटी बुद्धि है उसे नष्ट करो। शरीर को संयमित रखो जिससे सागर से पार हो जावोगे। उसे प्राप्त करके संसार की धारा से संसार समुद्र से तिर जावेगे। जिसको कोई शरण नहीं देता है उसको शरण देने वाले की शरण में जाने से उद्धार होगा। दृढता रखोगे जब। मजबूती परमात्मा की धारण कर और पतिव्रत धर्म धारण करता हुआ भगवान् का सुमरण करो तथा इच्छाओ को नष्ट करो। जिससे तुझे परमात्मा की प्राप्ति हो जायेगी। नियम प्रेम व नित्य विश्वास रखते हुए आर्त भावना रखी है। वे सत्य है। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि जब आनंद चला जाता है तब अपने जो विचार है वह कहता है। ओ मन तू धारण कर जो सारे विश्व मे परिपूर्ण है। रामजी महाराज उनका जिससे तेरे सभी कार्य सिद्ध हो जावे। क्योंकि उनके प्रति विश्वास धारण करके संत लोग पार हो गये। अनेको संत जिनकी गिनती ही नहीं होती है, भगवान् का भजन करके ब्रह्म मे समा गये। सिद्धत्व को प्राप्त किया। यह बात सारे संसार में प्रसिद्ध है। परन्तु सारा संसार भी सार वस्तु को चाहता है। और भक्त होकर ब्रह्म के द्वार को प्राप्त कर। और फिर शरीर धारण ही नहीं करे और रामजी मिल जावे तो सारे विकार नष्ट हो जावेंगे। संत कान्हडदासजी महाराज कहते हैं कि विश्वास धारण करो क्योंकि दृढता विश्वास धारण करके ही तो पार हुए हैं। गुरु रामचरणजी महाराज के चरणो के सहारे से सभी की नौका अबके तो पार हो जायेगी। ओ मन जिस पदार्थ मे रस नहीं है उस पदार्थ का परित्याग कर। और ज्ञान भक्ति इन सबको धारण करो। जिससे जो वस्त्र के ऊपर अर्थात् मन के ऊपर मैल लगा है इनके स्पर्श करने से दूर हो जायेगा। और फांसी कट जायेगी। और उद्धार हो जायेगा। नरक से उद्धार करने वाले संत ही सार हैं, संत बहुत बड़ा उपकार करते है। ये संत युक्ति और प्रयुक्ति के द्वारा अपने विचार प्रदान करते है। परन्तु विश्वास व दृढता के साथ सार बात को समझो। ये संत भक्ति और मुक्ति का सहारा प्रदान करते हैं कर्मो को काट करके जीव को पार कर देते है। महाराज दया करके सार भूत जो भक्ति है उसको संसार में बढाने के लिये अवतार लिया है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मेरे हृदय के अंदर इतनी उलझने थीं उन सबको नष्ट कर दी। गुरू रामचरणजी महाराज ब्रह्म के बीच में मिले। जिह्वा के द्वारा राम का नाम लो। हे संतो माधव को भूलो मत कोई भी विचार करो भगवान् के भजन करने का आधापल भी मत भूलो। कानों से सुनना व संयम रखकर संत धर्म की मर्यादा की बातें कहते हैं। बारंबार संत प्रभु के चरणों में प्रेम करते हुए बीनती करते हुए राम राम

कहते हैं। धर्म की धारणा धारण करते हुए संसार सागर से पार होते हुऐ रामजी के नाम का विश्वास रखते हुये वे उस स्थान को पहुंच गये। जिसकी कभी मृत्यु नहीं है। ऐसा अध्यात्म ज्ञान सतगुरुदेव ने प्रदान किया और क्रोध काम ये दोनों भाग गये। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि हृदय पवित्र हो जाता है जब अपने स्वामी का स्पर्श कर लेते हैं तब। परमात्मा का भजन करो क्योंकि वे सिर के मुकुट हैं अर्थात् सर्वश्रेष्ठ हैं। हे संतों आधा क्षण के लिये भी उन्हें मत भूलो। सही रूप में मत को धारण कर लो दिल से और सदा ही रामजी के नाम का पान करो। संसार के अंदर भक्त की प्रसिद्धि हो गई और जो स्थान स्थिर रहता है उस स्थान की प्राप्ति हो जाती है। संसार से अलग होकर के नाचो और जो परमात्मा है स्नेही उसका विचार करके परमात्मा की शरण में रहो और ज्ञान का आचरण ग्रहण करो। जब परमात्मा के दर्शन हो जावेंगे तब जितनी भी गंदगी है वह सब धुल जावेगी। हृदय के जो दाग हैं वे भी नष्ट हो जावेंगे। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि भगवान् की बड़ी भारी भक्ति करो जिससे तुम्हारा श्रेष्ठ भाग्योदय हो जावेगा। सुमरण को सार समझ कर करो और दृढ़ विश्वास के साथ भर्म को भगा करके एक रामजी के नाम का गायन करो। जिससे संसार को जीत करके परमात्मा की धाम प्राप्त होगी। लापरवाही को समाप्त करके इस तरह धारण करो और अच्छे गुणों को ग्रहण करो और दूसरे जितने भी दुर्गुण हैं उन्हें त्यागो। भावना और भक्ति ये भगवान् को प्रिय हैं और खोटी बुद्धि को त्याग दो। जब अच्छा भाग्य होता है तब भगवान् का भजन किया जाता है और गुरुदेव से व भगवान् से संतों से स्नेह होता है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि जितनी बुराईयाँ है वे सब भाग जाती हैं। जब हृदय के अंदर अच्छे विचार हो तब। जब सुमरण से प्रेम होता है तब परम पद को प्राप्त करते हैं और हृदय के सभी विकार-मैल चले जाते हैं। मन के अंदर दृढतापूर्वक धारणा धारण करें और दो अक्षर 'राम' को अन्तः करण में धारण करें। हां दोनों अक्षरों के प्रति दृढता रखते हुए संत भगवान् का प्रेमी हो। और वे भजन की जानकारी भी लेते हैं तेरे प्राणों का फैलाव है। हां वे बिल्कुल भी माया में लिपायमान नहीं रहते हैं। वे सभी से परे रहते हुए मन को उसी में गाले हुए मस्ती में रहते हैं। धारणा ऐसी धारण की, संतों ने भारी और ब्रह्म के बीच में जाकर मिल गये। हाँ गुरुदेव आप धन्य हो, आपने बड़ा भारी रहस्य हमें प्रदान किया है गुरुदेव व रामचरणजी महाराज आप अवतारी हो। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मेरे ऊपर आपने कृपा की मैंने देखा सुरति के द्वारा कि आपने युक्ति बढ़ाई है। हां धर्म की बुद्धि तो संतों के साथ ही होती है। क्योंकि वे हृदय के मैल को दूर कर देते हैं। और परम स्नेही रामजी का सुमरण करते हैं और जो भी खोटी बुद्धि व विकार हैं उन सबको दूर कर देते हैं। संसार मे व भक्तो मे सिद्धि हो गई है भाई उन्होंने और भजन की वृद्धि की। तथा जो भी दुष्टता है उसे भी नष्ट कर देते हैं। खुराक के रूप में नाम का ही आहार करते हैं। राम नाम रूपी मोती वे चुगते हैं समय पर बड़ा भारी धर्म करते हैं। अन्य जितने भी पक्ष हैं उनसे उनका स्पर्श ही नहीं है ऐसे वे ज्यादा आचरण वाले हैं। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि मेरे ऊपर कृपा की भींजी हुई सुरति मुक्ति के बीच में समागई। स्वामी श्रीरामचरणजी

महाराज ने दृढ़ता पकड़ा दी जिससे अब संसार सागर तिर गऐ हो। इस बार इस संसार सागर जो की भारी है उससे जैसे भी पार हो सके वैसे ही पार करो। जिसकी धारा ही अलग कही है।

इसका मूल्य करके सतगुरु कहते हैं और इसका निश्चय भी रखते हैं। प्रेम केवल परमात्मा से जगादे जिससे जो अबोध वह सब धला जावे। परमात्मा से सही रूप में प्रेम करोगे तो अन्य प्रपंचों के फैलाव मे नहीं फंसोगे। यह रास्ता गुरूदेव ने बता दिया और दूसरी धारणा में नहीं लेगें। और उसी पद में लीन हो गए और अब सीमा मे नहीं आते हैं। जो संत के पास सभी रास्ते वाले जाते है। धन खूब हैं उसका उपभोग भी करे तो भी वह समाप्त नहीं होता है, संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं। संतों रामजी का नाम ही धन्य है धन्य है। इसे साधन करके लो। वे संत धन्य हैं जो हंस बनकर के रामजी का दास हो कर रामरस पीते हैं। संत जन इसकी युक्ति बता करके कहते हैं कि भोगी हो करके नाराज मत हो जाओ। क्योंकि भोगों को तो रोग के समान संत समझते हैं और जो अनादि काल का रास्ता है उस पर वे विश्वास करते हैं। जिसके द्वारा सारी गतऐं सिद्ध हो जाती है और जबरदस्त पतिब्रत पर वे राजी होते हैं। जिससे जो अज्ञान के आंकड़े हैं वे सब दूर हो जाते हैं और जो पूरे ज्ञान का सतगुरु हैं वे प्रसन्न होते हैं। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि दास बनकर रहो जिससे अमर होकर के पुनः नष्ट न होना पड़े। हे संतों मन के अंदर छीजना अर्थात् दुःख की बात है उसे दूर करते हुए जो सभी में भरपूर है वह पद प्राप्त करना है। क्योंकि जितने भी भर्म के कागज हैं वे तो नष्ट हो गए और संतों के रामजी की रटण जागृत हो गई। उनका संग बहुत सारे करते हैं और जो भगवान् के भक्त संत हैं उनके दास बनते हैं। रामरस का प्याला पीते हैं जिससे काया रूपी मंदिर पवित्र हो जाता है। राननाम के बिना दूसरे को मानते नहीं है क्योंकि वह हृदय का जो अज्ञान रूपी अंधकार है उसे नष्ट कर देते हैं। जैसे हृदय की जलन हैं वह सब नष्ट हो जाती है खाली वे कभी चूकते नहीं है। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि साधन करके बताता हूँ कि जो पूरण रूप से मित्र है वे ही पिलाता है।

आरति सतगुरु रामचरणजी महाराज की। क्योंकि उन्होंने हृदय की सभी इच्छाऐं मेट दी। और अपनी शरण में रखकर के प्रतिपालना की और जन्म मरण का जो झंझाल था उसे भी मिटा दिया। ब्रह्म स्वरूप गुरुदेव ने दया की और मुक्ति देनी वाली वाणी का उच्चारण किया। तन मन धन लेकर आरति करो। और मन वचन द्वारा क्रिया करके चरणों में मन को समर्पित करो। संत कान्हड़दासजी महाराज कहते हैं कि रामचरणजी महाराज को मैंने गुरु रूप में प्राप्त किया। उन्होंने मेरा जो जन्म मरण का दुःख था वह सब समाप्त कर दिया।